प्रकाशक—
श्री अयोध्यासिंह
विशाल भारत बुक डिपो
१६५।१ हरिसनरोड
कलकत्ता ।

प्रथम संस्करण—१६३२
द्वितीय संस्करण—१६४६
मूल्य ४)

मुद्रक—
राधाकृष्ण नेवटिया
यूनाइटेड कमर्सियल प्रेस, लि०
३२, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,
कलकत्ता ।

उपहार

प्रस्तावना

भारतवर्ष, ग्रीस, इटली अथवा चीन आदि देशोंकी भाँति रूसका साहित्य बहुत प्राचीन नहीं है। वैसे तो लोग कहा करते हैं कि गाना और रोना सभी जानते हैं। इसलिए जनसाधारणके देहाती गीतों और देहाती कहानियोंकी रचना, अन्य देशोंकी भाँति, रूसमें भी मानव-इतिहासके आदि कालमें ही होती आई है; परन्तु, सभ्यताके प्रसारके बाद धीरे-धीरे विकसित होकर साहित्यने जो प्रौढ़ रूप धारण किया, उस तक पहुँचनेमें रूसको काफी समय लगा।

जबानी गीत और कहानियाँ बहुत कालसे प्रचलित रहने पर भी, रूसमें लिखित साहित्यका प्रारम्भ ११ वीं शताब्दीसे हुआ। सबसे पुरानी लिखी हुई पुस्तक, जो रूसी भाषामें मिलती है, रूसी बाइबिल है, जो सन् १०५६-५७ की लिखी है।

छापेके अक्षरोंके आविष्कारके बाद से पुस्तकोंका प्रचार अधिकाधिक होने लगा। मास्कोमें सबसे पहली छपी हुई पुस्तक सन् १५६४ में प्रकाशित हुई थी, परन्तु आरम्भिक पुस्तकें प्रायः धार्मिक ग्रन्थ, और कानून की पुस्तकें ही थीं।

रूसी लोग स्लाव जातिके हैं, और इसी जातिके लोग अन्य यूरोपके सर्बिया, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया आदि देशोंमें भी बसते हैं। इसी

क्रज़ानिच नामक एक सर्वने सबसे पहले एक सर्वियन व्याकरण लिखा था, जिसमें उसने सर्वियन भाषाके व्याकरणके साथ रूसी, पोलिश तथा अन्य स्लाव भषाओंकी तुलना की थी।

रूसी भाषा और साहित्यमें सबसे बड़ा युगान्तर महान पीटरके कालमें उपस्थित हुआ। पीटरके पहले तक रूसका जो कुछ थोड़ा बहुत साहित्य था वह धर्मके बन्धनोंसे बुरी तरह जकड़ा हुआ था। पीटरके समयमें रूस साहित्यको पादरियों और गिरजोंके पंजोंसे छुटकारा मिला, जिससे व स्वतंत्ररूपसे विकसित हो सके।

भारतके मध्य युगके इतिहासमें जो स्थान अकबरको प्राप्त है, इंगलैण्डवे इतिहासमें जो स्थान क्वीन एलिज़बेथको प्राप्त है, रूसी इतिहासमें वही स्था पीटर महानको प्राप्त है। जिस रूसी भाषाने १९ वीं शताब्दीमें अप संसार-प्रसिद्ध जौहर दिखलाये, उसका जन्म पीटर महानके राज्यकालमें हुअ था। पीटर स्वयं कोई बड़ा विद्वान या साहित्यिक न था, तथापि उसने अपने सामने प्रत्येक अंग और प्रत्येक विभागमे आश्चर्यजनक उन्नतिशील सुधार किये थे। मगर वह जानता था कि शिक्षाके प्रचारके विना उसका कोई भी सुधार काम नहीं दे सकता, इसलिये उसने रूसी भाषाकी ओर विशेष ध्यान दिया। उसने रूसी वर्णमालामें सुधार किया, गिनतीके हिन्दसे ठीक किये और साहित्यको प्रोत्साहन देनेके विचारसे दर्जनों फ्रेंच और जर्मन ग्रंथोंका अनुवाद कराया।

मगर उस समय तक रूसी भाषा क्या थी, कई एक बोलियोंकी एक बेढंगी खिचड़ी थी। अनेक भाषाओंके शब्द उसमें मिले हुए थे। रूसी -सेवियोंको पहले तो इस बातकी कोशिश करनी पड़ी कि भाषाको

करके दुरुस्त किया जाय। इस कामको वेसिल ट्रेडियाकोवस्की और लोमो-नोसोव नामक दो विद्वानोंने पूरा किया।

ट्रेडियाकोवस्कीने पहले-पहल रूसी कविताको फ्रेंच कविताओंकी भाँति छन्द-शास्त्रके अधीन किया, और उसमें तुक मिलानेकी प्रथाका प्रारम्भ किया। उसने रूसियोंका ध्यान उनकी भाषाकी ओर दिलाया, और रूसी भाषाकी खूबियाँ समझाईं। लोमोनोसोवने रूसी भाषाको परिष्कृत किया, व्याकरण-के, तथा अन्य भाषाओंके शब्दोंको उठाकर अपनानेके नियम बनाये, और उच्च कोटिकी साहित्यिक रचनाएँ कीं। रूसी साहित्यमें उसका स्थान अत्यन्त ऊँचा माना जाता है। उस समय रूसमें यूरोपके अन्य देशोंकी—विशेषकर फ्रांसकी—अन्धाधुन्ध नक़ल करनेका रोग बुरी तरह फैला हुआ था। रूसी भाषाका सबसे पहला नाटककार सोमोरोकोव (१७१८-१७७७) माना जाता है। उसके पचासों नाटक हैं। मगर फ्रांसकी नक़लके रोगने उसपर ऐसा असर डाला कि उसके अपने व्यक्तित्वके प्रस्फुटित होनेका मौका ही नहीं मिला। उस ज़मानेमें रूसमें फ्रेंच भाषाके सनसनी उत्पन्न करने-वाले, विप्लवपूर्ण उपन्यासोंका भी बड़ा दौरदौरा था, जिन्होंने लोगोंकी रुचि-को भी बहुत नीचे ला पटका था। निकोलस इवानोविच नोवीकोव नामक एक व्यक्तिने साहित्यमें इस प्रवृत्तिका विरोध किया, और सन् १७७९ में मास्कोमें एक छापाख़ानेका ठेका लेकर उच्च कोटिके फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी ग्रंथोंका अनुवाद प्रकाशित किया, और इस प्रकार लोगोंमें सत्साहित्यका प्रचार किया। साथ ही उसने लोगोंको अन्धाधुन्ध नक़ल करनेके स्थानमें अपनी भाषाका महत्त्व समझाने और उसकी वृद्धि करनेका प्रोत्साहन दिया।

इसी समय [illegible] नामक लेखकने अपनी रचनाओंमें रूसी-समाजके

करके दुरुस्त किया जाय। इस कामको वेसिल ट्रेडियाकोवस्की और लोमो-नोसोव नामक दो विद्वानोंने पूरा किया।

ट्रेडियाकोवस्कीने पहले-पहल रूसी कविताको फ्रेंच कविताओंकी भाँति छन्द-शास्त्रके अधीन किया, और उसमें तुक मिलानेकी प्रथाका प्रारम्भ किया। उसने रूसियोंका ध्यान उनकी भाषाकी ओर दिलाया, और रूसी भाषाकी ख़ूबियाँ समझाईं। लोमोनोसोवने रूसी भाषाको परिष्कृत किया, व्याकरण-के, तथा अन्य भाषाओंके शब्दोंको उड़ाकर अपनानेके नियम बनाये, और उच्च कोटिकी साहित्यिक रचनाएँ कीं। रूसी साहित्यमें उसका स्थान अत्यन्त ऊँचा माना जाता है। उस समय रूसमें यूरोपके अन्य देशोंकी—विशेषकर फ्रांसकी—अन्धाधुन्ध नक़ल करनेका रोग बुरी तरह फैला हुआ था। रूसी भाषाका सबसे पहला नाटककार सोमोरोकोव (१७१८-१७७७) माना जाता है। उसके पचासों नाटक हैं। मगर फ्रांसकी नक़लके रोगने उसपर ऐसा असर डाला कि उसके अपने व्यक्तित्वके प्रस्फुटित होनेका मौक़ा ही नहीं मिला। उस ज़मानेमें रूसमें फ्रेंच भाषाके सनसनी उत्पन्न करने-वाले, लिप्सापूर्ण उपन्यासोंका भी बड़ा दौरदौरा था, जिन्होंने लोगोंकी रुचि-को भी बहुत नीचे ला पटका था। निकोलाय आइवानोविच नोवीकोव नामक एक व्यक्तिने साहित्यकी इस कुरुचिका विरोध किया, और सन् १७७९ में मास्कोमें एक छापाखानेका ठेका लेकर उच्च कोटिके फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेज़ी ग्रंथोंका अनुवाद प्रकाशित किया, और इस प्रकार लोगोंमें सत्साहित्यका प्रचार किया। साथ ही उसने लोगोंको अन्धाधुन्ध नक़ल करनेके स्थानमें अपनी भाषाका ऐश्वर्य समझने और उसकी वृद्धि करनेका प्रोत्साहन दिया।

इसी समय कारामज़िन नामक लेखकने अपने उपन्यासोंसे रूसी-समाजमें

আকুঃ

सौन्दर्य और माधुर्य आदि भावनाओंको रूसी गल्पकारोंने जिस सजीवता और खूबीसे अंकित किया है, वह अन्य देशवालोंको कम नसीब होगी।

इस कलामें रूसियोंको जो सफलता मिली है, उसका कारण उनका जातीय स्वभाव है। डोस्टोवस्कीका कहना है—"रूसी जातिमें मानव-सहानुभूतिकी वे भावनाएँ, जो अन्य जातियोंकी सभ्यता और संस्कृतिमें अनुराग तथा उनकी उच्चाकांक्षाओंसे गहरा आध्यात्मिक सम्बन्ध स्थापित कर देती हैं, अभी तक ढीली नहीं पड़ी हैं। यही रूसी जातिका सबसे बड़ा प्रत्यक्ष गुण है।........प्रत्येक सच्चे रूसीके हृदयमें यह हौसला रहता है कि दूसरी जातियोंके रहन-सहन और जीवनकी फ़िलासफ़ीका ज्ञान प्राप्त करे, और उसके तत्त्वको समझे; अपने और परायेके सुख-दुखमें शामिल हो, और अज्ञानता, स्वार्थपरता, और संकीर्णताके कारण जातियोंमें जो झगड़े उत्पन्न हो गये हैं, और जो उन्हें एक-दूसरेसे जुदा रखते हैं, उन्हें अपने सर्वव्यापी प्रेम, शील, सत्य-प्रियता और ईश्वर-भक्तिसे दूर कर दे।"

रूसी साहित्यका जो बीज पुश्किनके सामने बोया गया, वह तुर्गनेव, टाल्सटाय और डोस्टोवस्कीमें जाकर फला-फूला, और एक महान वृक्ष बन गया, जिसका सौरभ आज सारे संसारमें फैला है। रूसी साहित्यकी सबसे बड़ी विशेषता है। उसकी सत्यनिष्ठा और वास्तविकता। रूसी साहित्यमें वास्तविकताका उदय निकोलाय गोगोलके समयसे हुआ। खेद है कि गोगोलकी कहानियाँ बहुत लम्बी होनेके कारण इस संग्रहमें न दी जा सकीं।

तुर्गनेवने वास्तविकताको और भी प्रौढ़ता प्रदान की। उसने अपनी रचनाओंमें रूसके जनसाधारणकी सच्ची आत्माका प्रतिविम्ब प्रकट किया है।

टाल्सटायने कहानी-कलाको चरम सीमापर पहुँचा दिया। उसने

छोटी-छोटी कहानियोंमें नैतिक सदाचारकी बड़ी-बड़ी बातें ऐसे सरल ढंगसे प्रतिपादित की हैं, जो देखते ही बनता है। टाल्सटायकी कहानियोंके पात्र यद्यपि रूसी हैं—वह भी रूसी किसान—मगर उनमें विश्व-मानवकी आत्मा स्पष्ट रूपसे प्रकट होती है।

वास्तविकताकी जो लहर गॉगॅलके समयसे शुरू हुई थी, उसे एन्टन चेखोवने और भी परिमार्जित किया।

इसी समय रूसमें एक और शैलीका प्रादुर्भाव हुआ, जिसे Symbolic school अर्थात् लक्षणात्मक या संकेतात्मक शैली कहते हैं। कवि सोलोगब इस शैलीका उदाहरण है।

उन्नीसवीं शताब्दीमें रूसमें एक और शैलीका उदय हुआ। यह भी वास्तववादका एक अंश है, परन्तु अधिक उग्र और स्पष्ट। इस नये स्कूलका सबसे बड़ा प्रतिपादक मैक्सिम गॉर्की है। उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तिम अर्धभागसे रूसमें ज़ारकी नादिरशाहीसे छुटकारा पानेके लिए बड़ा उग्र आन्दोलन चल रहा था, जिसके फल-स्वरूप सारे देशमें अत्यंत भयंकर दमन चलता रहा। इस आन्दोलन और दमनके प्रभावसे साहित्य भी अछूता नहीं बचा, इसीलिए हम देखते हैं कि इधरके कुछ लेखकोंकी कृतियोंमें अत्यधिक कटुता दिखाई देती है।

इस संग्रहमें कोरोलेंको, चिरकोव, कपरिन, एँड्रेयेव बेबल आदि कई प्रसिद्ध लेखकोंकी रचनाएँ नहीं जा सकी हैं।

'मूमू', 'देहाती डाक्टर', 'जब हसनका पाजामा उतर गया था' और 'ज़रूरी चीज़ें'—ये चार कहानियाँ श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, श्री अख़्तरहुसेन रायपुरी, और श्री बनारसीदास चतुर्वेदीकी अनुवाद की हुई हैं। इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

वैशाखी पूर्णिमा
सं० १९८९ वि०

—ब्रजमोहन वर्मा

विषय-सूची



एलेक्ज़ेंडर पुश्किन

(१७९९-१८३७)

पुश्किनकी गणना रूसके सर्वश्रेष्ठ कवियोंमें है। रूसी गद्य और पद्यमें एक नवीन शैली प्रचलित करके उसे संसारके अन्यान्य उच्च साहित्योंकी बराबरीपर बिठानेका श्रेय उसे ही है। उसका परनाना हब्शी था, इसलिए उसके बाल घुँघराले थे, और रंग भी साधारण रूसियोंकी बनिस्बत कुछ साँवला था। सन् १८१७ में कुछ दिन तक वह रूसके परराष्ट-विभागमें रहा था। उन दिनों वह फैशनेबिल सोसायटीमें घूमता और मौज उड़ाता था। उन्हीं दिनों उसने एक साहसपूर्ण कविता—'स्वतंत्रताका गीत'—लिखी, जिसके कारण उसे साइबेरियामें निर्वासित होनेकी नौबत आ गई; मगर दक्षिण-रूस के बसराबिया-प्रान्तमें एक सरकारी नौकरी स्वीकार कर लेनेपर उसे छुटकारा मिला। सन् १८२४ तक वह दक्षिणी रूसमें रहा।

पुश्किनपर प्रसिद्ध अंगरेज़ कवि बायरनका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण उसकी रचनायें बड़ी 'रोमान्टिक' हो गई हैं। वह स्वभावसे ही कल्पनाप्रिय था, और सन् १८३७ में अपने साढ़ूसे द्वन्द्व लड़नेमें उसके प्राण गये थे।

पुश्किनकी ख्याति विशेषकर उसकी कविताओंके कारण है। फिर भी उसकी गद्य-शैली कम उत्कृष्ट नहीं है। उसकी पद्य रचनाओंमें 'Eugene

Onyegin' सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। पुश्किनकी कृतियोंमें उसकी महान नाटकीय प्रतिभा दृष्टिगोचर होती है। उसकी भावनायें ठेठ रूसी जनताके हृदयसे निकली हुई मालूम होती हैं।

पुश्किन ही पहला लेखक है, जिसने रूसो किसानों की कल्पनाशक्ति, उनके सहज ज्ञान और उनके नैतिक बलको प्रकट किया है। यद्यपि उसपर बायरनका 'रोमान्टिक' प्रभाव बहुत काफ़ी पड़ा था, फिर भी उसकी रचनाओंमें उसकी 'रोमान्टिक' भावनाओंने एकदम रूसो रङ्ग धारण कर लिया है। 'पिस्तौलका निशाना' नामक कहानी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसमें पश्चिमी यूरोपियनोंकी 'रोमान्टिक' भावनाओंके साथ रूसियोंकी स्वभावजात दयाका सुन्दर मिश्रण है। रूसियोंकी करुणाकी भावना अक़सर जीवनकी बहुतेरो जटिल समस्याओंको बड़ी सरलतासे हल कर देती है। इस कहानीका नायक एक रोमान्टिक व्यक्ति है, वह एकान्तमें रहकर ठंडे मनसे प्रतिशोधकी भावनाको सींचता है; परन्तु जब इस राक्षसो चिन्ताको परीक्षाका अन्तिम क्षण आता है, तब मनुष्यता और करुणा सहसा जाग्रत होकर उसकी राक्षस-वृत्तिपर विजय प्राप्त कर लेती हैं।

'बर्फके तूफान' में, अन्य कहानियोंको देखते हुए, कुछ कृत्रिमता-सी जान पड़ती है। फिर भी उसका समूचा चित्र रूसो ज़मीनपर ठेठ रूसी रंगोंसे अंकित किया गया है।

'पोस्टमास्टर' एक बड़ी सुन्दर कहानी है, जिसमें पिता-पुत्रीके प्रेम और प्रेमी-प्रेमिकाके प्रेमका भेद बड़ी सुन्दरतासे दिखाया गया है।

विशाल भारत बुक-डिपो द्वारा प्रकाशित पुस्तकें :—

१—स्वामीके पत्र			४)
२—पिस्तौलका निशाना	....	...	४)
३—शिकार — श्रीराम शर्मा	....	....	३)
४—प्राणोंका सौदा ”	....	....	३॥)
५—हमारी गायें ”	....	....	१॥)
६—बोलती प्रतिमा ”	....	...	२।)
७—पपीता ”	....	....	।)
८—मीरा और उनकी प्रेमवाणी	....	....	२)
९—मानव—भगवतीचरण वर्मा	....	...	२)
१०—प्रेम संगीत ”	...	...	२)
११—शुकपिक—तारा पांडेय	...	...	१)
१२—त्रिलोचन कविराज—रवीन्द्रनाथ मैत्र	....	....	२)
१३—बातचीत	....	....	१)
१४—पिंजरापोल—हरिशंकर शर्मा	....	....	१॥।)
१५—घूँघटवाली—विश्वम्भरनाथ जिज्जा		....	२)
१६—शिवशम्भुके चिट्ठे (बालमुकुन्द गुप्त)		....	॥)
१७—शिकार (उर्दू संस्करण)	....	....	३)
१८—जिन्दगी का सौदा (उर्दू)	....	...	

विशाल भारत बुक-डिपो द्वारा प्रचारित पुस्तकें

१—भारतके आर्थिक निर्माण पर गांधीवादी योजना भू० ले० महात्मा गांधी	२॥)
२—किसान राज्य (श्रीकृष्णदत्त पालीवाल)	२॥)
३—हमारा स्वाधीनता संग्राम („)	१॥)
४—शिक्षाका माध्यम भू० ले० गांधीजी	।।।)
५—बंगालका अकाल (श्यामाप्रसाद मुकर्जी)	३)
६—एक ही दुनिया (वेन्डल विल्की)	३॥)
७—कल्कि या सभ्यता का भविष्य (सरराधाकृष्णन्)	२)
८—पूर्णिमा (रमनलाल बसन्तलाल देसाई)	३)
९—श्रीकान्त (शरत चटर्जी)	६)
१०—मैं	२।)
११—संसार की सर्वोत्तम कहानियां	३)
१२—काला पुरोहित	१॥)
१३—मणिदीप (पं० विनोदशंकर व्यास)	१)
१४—उसकी कहानी („)	१)
१५—भूलीबात („)	[illegible]

पिस्तौलका निशाना

[१]

हमारी फौज एक छोटे रूसी गाँवमें तैनात थी। फ़ौजी अफसरोंकी दैनिक दिनचर्या प्रायः सभी जानते हैं। सवेरे ड्रिल क़वायद और घुड़सवारी, दोपहरको कमांडरके क्वार्टरमें या यहूदी होटलमें भोजन और शामको 'पंच' शराब और ताश—बस, यही दिन-भरका शगल था। उस स्थानमें कोई सोसाइटी नहीं थी, और न किसीके विवाह-योग्य लड़कियाँ ही थीं। हम लोग एक दूसरेके कमरोंमें एकत्रित हुआ करते थे। वहाँपर केवल वर्दीवाले फ़ौजी ही दिखाई पड़ते थे।

हाँ, एक सिविलिन जरूर हम लोगोंके गुट्टमें शामिल होता था। उस समय उसकी उम्र पैंतीसके क़रीब पहुंच चुकी होगी, इसलिए हम लोग उसे आयुमें अपनेसे बहुत बड़ा मानते थे। उसकी तजुरबेकारीकी वजहसे हम लोग उसका लिहाज करते थे। उसकी स्वाभाविक गम्भीरता और उसके कठोर और व्यंग्यपूर्ण स्वभावने हम लोगोंको युवक-कल्पनापर बड़ा प्रभाव डाला था। उसका पिछला जीवन एक रहस्यमय पर्देमें छिपा-सा मालूम होता था। यद्यपि उसका नाम विदेशी-सा था; मगर देखनेमें वह बिल्कुल रूसी था। किसी समय वह हुशार्स फ़ौजमें नौकर भी रह चुका था। और वहां पद-वृद्धि करनेमें भी भाग्यशाली था; मगर हम लोगोंमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि उसने नौकरी छोड़कर इस मटियाफूसमें, गाँवमें रहना क्यों पसन्द

किया। यहाँ वह कंजूसीसे, साथ ही खासी फिजूलखर्चीसे रहता था। वह सदा पैदल ही बाहर आता-जाता था, और जब देखो, तब एक ढीला-ढाला काला औवरकोट पहने रहता था, जो इस्तेमाल होते-होते एकदम खराब होगया था। परन्तु उसका हमारी रेजीमेण्टके अफ़सरोंके लिए सदा खुला रहता था। उसके यहाँ एक बुड्ढा पेन्शन-यापता सिपाही खाना पकाया करता था। खानेमें कुछ दो या तीन चीजें ही हुआ करती थीं, परन्तु उसकी मेज़पर शेम्पेन शराबकी नदी-सी बहती थी। उसकी आर्थिक स्थिति या उसकी आमदनीका हम लोगोंको बिल्कुल पता न था और न हम लोग इस सम्बन्धमें कोई प्रश्न करनेकी धृष्टता ही करते थे उसके पास जो किताबें थीं, उनमें कुछ तो फौजी नौकरीके सम्बन्धमें थीं और कुछ उपन्यास थे, जिन्हें वह प्रसन्नतासे हम लोगोंको उधार दिया करता थ; पर कभी वापस नहीं माँगता था। साथ ही वह भी जब कोई किताब उधार लेता, तो उसे वापस नहीं करता था। उसके मनबहलाव या समय काटनेका केवल एक ही साधन था, और वह था पिस्तौलका निशाना लगानेकी प्रैक्टिस। उसके कमरे की दीवार गोलियोंसे ऐसी छितना हो रही थी, जैसे मधुमक्खियोंका छत्ता। उसके गरीबामऊ निवासमें यदि विलासिताकी कोई चीज़ थी, तो वह कीमती पिस्तौलका संग्रह था। उसने पिस्तौलका निशाना लगानेमें कितनी दक्षता प्राप्त कर ली थी, उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। यदि वह किसीके सिरपर नाशपाती रखकर उसपर निशाना लगाना चाहते, तो हम लोगोंमें से प्रत्येक बिना किसी हिचकिचाहटके इसके लिए तैयार हो जाता। हम लोगोंकी बातचीतमें अवसर

द्वन्द्व-युद्धका * विषय आ जाता था; मगर सिलवियो (हम यहांपर उसको सिलवियोके ही नामसे पुकारेंगे) उसमें कोई भाग न लेता था। यदि उससे पूछा जाता कि क्या उसे कभी द्वन्द लड़ानेका अवसर पड़ा है, तो वह सूखा-सा जवाब दे देता था—"हां, पड़ा है।" बस इससे अधिक वह और कुछ ब्यौरा न बताता था, और यह प्रत्यक्ष मालूम होता था कि यह प्रश्न उसे अरुचिकर है। हम लोग अपने मनमें यह नतीजा निकालते थे कि-शायद द्वन्द्वमें उससे किसी अभागे मनुष्यकी हत्या हो गई है, जिसके स्मरणसे उसकी आत्माको कष्ट होता है। द्वन्द्वमें उसने कभी कायरता दिखाई होगी, यह बात कभी हम लोगोंके ख्यालमें भी नहीं आई थी। बहुतसे आदमियोंकी शक्ल-सूरत देखकर ही इस प्रकारकी शंकाएं शान्त हो जाती हैं; मगर एक अप्रत्याशित घटनाने हम लोगोंको विचलित कर दिया।

---

* कुछ दिन पहले तक यूरोपियन देशोंमें द्वन्द्व-युद्ध (Duel) की प्रथा जारी थी। जब दो भलेमानसोंमें कोई झगड़ा हो जाता था, या कोई आदमी किसी अन्य भले आदमीका अपमान करता था, तो उसके निपटारेके लिए वे आपसमें द्वन्द्व-युद्ध करते थे, किसी निराली जगहमें जाकर एक या दो साथियों और एक आध निष्पक्ष व्यक्तिके सामने एक दूसरेसे लड़ते थे। द्वन्द लड़नेके बाकायदा नियम बने थे। कभी-कभी घायलकी मरहम पट्टीके लिये डाक्टर भी साथ रहता था। द्वन्द्वके लिये ललकारे जानेपर न लड़ना अथवा अपमान सहकर द्वन्द्वके लिये न ललकारना बड़ी कायरता समझी जाती थी। द्वन्द्व में अक्सर दोनोंमें से एक जानसे मारा जाता था। अब अधिकांश देशोंमें द्वन्द्व-युद्ध कानूनन द्वारा वर्जित किया है। कलकत्तेके अलीपुरमें 'डुयेल एविन्यू' नामक एक गली है, जहां किसी समय वारेन हेस्टिंग्स और फिलिप फ्रांसिसमें द्वन्द्व हुआ था।

—अनुवादक

एक दिन हम लोगोंमें से कोई दस आदमी सिलवियोके यहाँ भोजन कर रहे थे। रोज़मर्राकी तरह हम लोगोंने खूब शराब पी। हम लोगों ने ताश खेलनेके लिए सिलवियोपर दबाव डाला। पहले तो वह इनकार करता रहा, क्योंकि वह बहुत कम ताश खेलता था; पर अन्तमें वह राजी होगया और उसने ताश लानेका हुक्म दिया। ताश आये, उसने पचास रुपये निकालकर मेज़पर रख दिये और ताश बाँटने लगा। हम लोग अपने-अपने स्थानपर बैठ गये और खेल शुरू हुआ। सिलवियोकी आदत थी कि वह ऐसे मौकोंपर चुपचाप रहा करता था, न तो किसी बातपर बहस करता और न कुछ समझाता ही था। यदि दूसरा व्यक्ति जीतता था, तो वह चुपकेसे रुपया गिन देता था, या पावना लिखकर रख लेता था। हम सब उसकी इन बातोंसे वाक़िफ थे, इसलिये उसमें कभी हस्तक्षेप न करते थे; मगर उस दिन हमारे साथियोंमें एक नौजवान अफ़सर था जो हाल ही में वहाँ आया था। वह भी खेलमें शामिल था। उसने ग़लतीसे जीतके नम्बर जोड़नेमें एक अधिक जोड़ दिया। सिलवियोने अपनी आदतके अनुसार खड़िया उठाकर टोटल ठीक कर दिया। अफ़सरने समझा कि सलवियो ग़लती कर रहा है, इसलिये वह उसकी ग़लती समझानेकी चेष्टा करने लगा। सिलवियो चुपचाप ताश बाँटता रहा। इसपर अफ़सरका धीरज जाता रहा, और उसने टोटल मिटा डाला। सिलवियोने फिर खड़िया उठाकर टोटल ज्यों का त्यों कर दिया। शराबके नशे, खेलकी गर्मी और साथियोंके हँसनेसे अफ़सर बौखला उठा। उसने गुस्सेमें आकर मेज़परसे पीतलका शमादान उठाकर सिलवियोको खींच मारा। सिलवियो बड़ी मुश्किल से इस वारको बचा सका। हम लोग सब घबरा गये। सिलवियो उठ

खड़ा हुआ, उसकी आँखोंसे आग निकल रही थी उसने कहा—"जनाब, आप अपना रास्ता लीजिए। आपको अपना भाग्य सराहना चाहिए कि यह घटना मेरी छतके नीचे हुई है।"

अब हम लोगोंको इस घटनाके फलमें रत्तीभर शंका न रह गई। हम सब अपने साथी अफ़सरको मुर्दा समझने लगे। वह बाहर निकला और उसने घोषित किया कि सिलवियो जिस ढंगसे पसन्द करे, वह उसके असद् व्यवहारका जवाब देनेको तैयार है। खेल कुछ देरतक और चलता रहा; परंतु यह देखकर कि हमारे मेज़बानका मन खेलमें नहीं लगता; हम लोग एक-एक करके उठ खड़े हुए और अपने क्वार्टरको लौट आये। हम लोग रास्ते-भर इस बातकी सम्भावनापर विचार करते आये कि शीघ्र ही रेजीमेण्टमें एक अफ़सरकी जगह खाली हो जायगी, क्योंकि हमें निश्चय हो गया था कि उपर्युक्त घटनापर सिलवियो और उस अफसरमें द्वन्द्व अवश्य होगा, जिसमें अफ़सर मारा जायगा।

दूसरे दिन सवेरे जब हम लोग घुड़सवारीके लिये एकत्र हुए, तो हम लोगोंने एक दूसरेसे पूछा कि क्या वह बेचारा अफ़सर अभी तक जीवित है? इतने ही में वह अफ़सर स्वयं वहाँ आ गया। हम लोगोंने उससे भी यही प्रश्न किया। उसने जवाब दिया कि अब तक उसे सिलवियोसे कोई खबर नहीं मिली। यह सुनकर हमें अचरज हुआ। हम लोग सिलवियोके यहाँ गये, तो देखा कि उसने दरवाजेके फाटकमें ताशका एक पत्ता, इक्का, अटका रखा है और उसकी बिन्दीपर एकके बाद दूसरी गोली छोड़ रहा है। उसने रोज़की भाँति हम लोगोंका स्वागत किया; परन्तु पिछली संध्याकी घटनाका ज़िक्र न किया। तीन दिन बीत गये, अफ़सर अब तक ज़िन्दा था। हम लोग

आश्चर्यसे पूछने लगे—"क्या यह सम्भव है कि सिलवियो न लड़ेगा—चुप-चाप अपमान सह लेगा ? सिलवियो सचमुच ही नहीं लड़ा । उस अफसरके बहुत थोड़ी-सी कैफियत देनेसे ही वह सन्तुष्ट हो गया, और उसमें और अफसरमें सुलह हो गई ।

उसके इस व्यवहारने उसे हम नवयुवकोंकी नज़रोंमें बहुत गिरा दिया। साहसकी कमीको नवयुवक बहुत कम सहन कर सकते हैं, क्योंकि आम तौरसे उनकी समझमें साहस ही सर्वोत्कृष्ट मानव-गुण है, जो अन्य सैकड़ों पापोंपर पर्दा डाल देता है। खैर, धीरे-धीरे लोग इस घटनाको भूल गये, और सिलवियोने अपनी पुरानी प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करली।

केवल मैं ही ऐसा था, जो उससे फिर सन्तुष्ट न हो सका। मैं स्वभावसे ही कल्पनाप्रिय हूं, इसलिए और सबकी अपेक्षा मैं सिलवियोको अधिक मानता था, क्योंकि उसका अस्तित्व ही एक पहेलीकी भांति था, और वह मुझे किसी रहस्मय नाटकका नायक-सा दिखाई पड़ता था। वह भी मुझे चाहता था—कम-से-कम केवल मैं ही ऐसा था, जिसके साथ बात चीत करनेमें वह अपनी बदमिज़ाजी, तानेज़नी और जलीकटी बातें छोड़ देता था और भिन्न-भिन्न विषयोंपर खुलकर असाधारण प्रसन्नतासे बातचीत करता था। परन्तु उस अभागी संध्याके बादसे मैं अपने मनसे यह विचार दूर नहीं कर सका कि उसकी इज्ज़तमें बट्टा लगा है और उसे दूर न करनेमें स्वयं उसका ही अपराध है। यह विचार मुझे उससे पहलेकी भांति दिल खोलकर मिलनेसे रोकता था, और उसकी ओर देखते हुए भी शर्म मालूम होती थी। सिलवियो इतना नासमझ और मूर्ख नहीं था कि वह इन बातोंको न देखता हो, या उनका कारण न समझता हो। वह मेरी

इन बातोंसे दुःखित जान पड़ता था, और एकसे अधिक अवसरोंपर मैंने देखा कि उसके मनमें मुझसे समझौता करनेकी इच्छा है; परन्तु मैं ऐसे समस्त अवसरोंको बचा जाता, और वह भी चुप रह जाता। इसके बाद मैं उससे सदा अपने मित्रोंकी उपस्थितिमें ही मिलने लगा, और मेरी उसकी पहलेकी आत्मीयताका अन्त हो गया।

राजधानीके रहनेवाले, काम-काजमें फँसे हुए लोग कभी यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि छोटे-मोटे क़स्बों या ग्रामोंमें खास-खास मौक़ोंपर—जैसे डाक आनेवाले दिन—कैसी सनसनी और चहल-पहल होती है। प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवारके दिन हमारी रेजीमेन्टका दफ्तर अफ़सरोंसे भरा रहता था। कोई मनीआर्डरकी प्रतीक्षामें होता, कोई किसीकी चिट्ठी पानेकी उत्कंठामें दिखाई देता और कोई अख़बारोंके लिए व्यग्र होता था। चिट्ठियाँ और पारसलें वहीं-की वहीं खोली जाती थीं, लोग एक दूसरेको ख़बरें देते थे और आफ़िस-भरमें ख़ूब चहल पहल नज़र आती थी। सिलवियोकी चिट्ठियाँ भी हमारी रेजीमेन्टके पतेसे ही आती थीं, इसलिये वह भी प्रायः उपस्थित रहा करता था। ऐसे ही एक अवसरपर सिलवियोको एक पत्र मिला। उसने बड़ी अधीरतासे उसकी मुहर तोड़ी। उसे पढ़ते ही उसकी आंखें चमकने लगीं। अन्य अफ़सर अपनी-अपनी चिट्ठियोंमें इतने मग्न थे कि उन्होंने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। उसने पुकारकर कहा—"महाशयो, कुछ परिस्थितियोंके कारण मुझे फ़ौरन ही यहांसे जाना पड़ रहा है मैं आज रातको चला जाऊँगा। मैं आशा करता हूं कि आप लोग आज आख़िरी बार मेरे यहां भोजन करनेसे इनकार न करेंगे।" फिर उसने मेरी ओर घूमकर कहा—"मुझे आशा है कि आप तो ज़रूर-ज़रूर आयेंगे।"

यह कहकर वह जल्दीसे चला गया। हम लोग भी सिलवियोका निमन्त्रण स्वीकार करके अपने-अपने क्वार्टरको चल दिये।

मैं निश्चित समय पर सिलवियोके यहां पहुंचा। मेरे अन्य सब साथी अफसर वहां उपस्थित थे। सिलवियोकी समस्त चलसम्पत्ति बांधी-बूंधी जा चुकी थी, और उसके घरमें केवल छिदी हुई दीवारोंके और कुछ विशेष बाक़ी न था। हम सब भोजनके लिए बैठे। हमारे मेजबान महाशय बड़ी प्रसन्नतामें थे। थोड़ी ही देरमें हम सब भी उनकी प्रसन्नतामें हिस्सा बँटाने लगे। दनादन बोतलोंके कार्क खुलने लगे, भरे हुए ग्लास अविरामगतिसे छलकने लगे, और हम सब सच्चे हृदयसे सिलवियोकी यात्राकी सफलताके लिए दुआएं देने लगे। जब हम लोग उठे, तब रात काफ़ी बीत चुकी थी। हम-सब अपनी-अपनी टोपियां ढूंढ़कर सरपर रखने और सिलवियोसे विदा लेने लगे। जैसे ही मैं जानेवाला था कि सिलवियोने धीरेसे मुझसे कहा—"मुझे तुमसे कुछ कहना है।" मैं रुक गया।

सब मेहमान विदा हो गये। अकेले हम दोनों रह गये। हम लोग एक दूसरेके सामने बैठकर चुपचाप पाइप पीने लगे। सिलवियो चिन्ताग्रस्त था, उसकी बनावटी प्रसन्नताका अब चिह्न भी बाक़ी न था। उसके गम्भीर चेहरेके पीलेपन, आंखोंकी चमक और मुखसे निकलते हुए घने धुएँने सचमुच उसकी आकृति पैशाचिक-सी बना दी थी। कई मिनट बीत गये, अन्तमें सिलवियोने निस्तब्धता भंग करते हुए कहा—

"अब शायद हम लोग कभी न मिलेंगे; परन्तु जुदा होनेके पहले मैं तुमसे कुछ बातोंका खुलासा करना चाहता हूं। तुमने यह तो देखा ही

होगा कि मैं दुनियाकी रायकी कितनी कम परवा करता हूं। मगर मैं तुम्हें चाहता हूं, इसलिए यदि मैं अपने सम्बन्धमें तुम्हारे हृदयमें कोई अनुचित धारणा छोड़ जाऊँ, तो मेरी आत्मा सदा खसोटती रहेगी।"

वह चुप हो गया, और उसने अपना पाइप फिर खाली करके भरा। मैं चुपचाप आँखें नीची किये बैठा रहा।

"तुम्हें यह बात विचित्र मालूम पड़ी होगी कि मैंने उस बेवकूफ शराबी अफसरसे अपने अपमानका बदला क्यों नहीं लिया। यह तो तुम जानते ही होगे कि उससे द्वन्द्व लड़नेके लिए हथियार चुननेका हक मेरा ही था, इसलिए उसकी जान बिलकुल मेरे हाथमें थी, और मैं प्रायः एकदम खतरेसे बाहर था। चाहनेको मैं यह कह सकता हूं कि मैंने केवल उदारतावश उसे क्षमा कर दिया, मगर मैं तुमको धोखा देना नहीं चाहता। यदि अपनी जानको बिना किंचिन्मात्र जोखिममें डाले हुए उस अफसरको सजा देना मेरी शक्तिमें होता, तो मैं उसे कभी नहीं छोड़ता।"

मैं सिलवियोकी ओर कुछ आश्चर्यसे देखने लगा। सिलवियोके इस कथनसे मैं बिलकुल दंग रह गया। सिलवियो कहता गया—

"बात दर-असल यह है कि मुझे अपने जीवनको खतरेमें डालनेका अधिकार नहीं है। छै वर्ष पूर्व एक आदमीने मेरा कान उमेठ दिया था, और मेरा वह शत्रु आज भी जीवित है।"

अब तो मेरा कौतूहल पूरी तरह जाग्रत हो गया, मैंने पूछा—"आप उससे लड़े नहीं? शायद परिस्थितिके कारण आप उससे अलग हो गये?"

"मैं उससे लड़ा था। और उसकी यादगार यह है।"

यह कहकर सिलवियो उठा और उसने अपने हैटबक्समें से एक लाल

टोपी निकाली, जिसमें सुनहली कँतून टँकी हुई थी। उसने उस टोपीको सर पर लगा लिया। टोपीके निचले हिस्सेसे एक इञ्चकी ऊँचाईपर एक गोलीका सूराख था।

सिलवियो कहने लगा—"तुम यह तो जानते ही हो कि मैं हुशार्समें नौकर था, साथ ही मेरी आदत भी जानते हो कि मैं हर बातमें अगुआ रहता हूं। उन दिनों तो यह एक लत-सी थी। उस ज़मानेमें व्यावहारिक मज़ाकका फैशन सा था, और मैं फ़ौज-भरमें सबसे बड़ा शरारती समझा जाता था। हमलोग अपनी शराब पीनेकी शक्तिपर बड़ा गर्व करते थे। मैं शराब पीनेमें इतिहास-प्रसिद्ध शराबियोंसे भी बढ़ा हुआ था। हमारी रेजीमेन्टमें द्वन्द्वयुद्ध बराबर हुआ करते थे, और मैं उनमें बराबर भाग लिया करता था—या तो दर्शकके रूपमें, या प्रधानके रूपमें। मेरे साथी मेरी पूजा-सी करते थे, और मेरे कमाण्डर, जो अक्सर बदला करते थे, मुझे एक अनिवार्य बला ही समझते थे।

"इस प्रकार मैं शान्तिपूर्वक (यानी दुर्दण्डतापूर्वक) अपनी लोकप्रियता का आनन्द ले रहा था कि उसी समय एक सुप्रसिद्ध वंशका धनी नवयुवक हमारी फ़ौजमें आकर भर्ती हुआ। मैं उसका नाम नहीं बताना चाहता। मैंने अपने जीवनमें कभी ऐसा क़िस्मतका सांड़ नहीं देखा! ज़रा सोचो कि जिस व्यक्तिमें जवानी हो, गुण हों, अत्यन्त प्रचुर मात्रामें स्फूर्तिमय उल्लास हो, महान् दुर्द्धर्ष साहस हो, खूब लम्बा-चौड़ा नाम हो, और बेइन्तहा धन-दौलत हो, उसके आनेसे हम लोगोंपर क्या प्रभाव पड़ सकता है। मेरे बड़प्पन और शानमें धक्का लगा। मेरी प्रसिद्धिसे आकर्षित होकर, सम्भव है कि वह मेरी मित्रता प्राप्त करनेकी कोशिश करता;

मगर मैंने उससे रूख ही नहीं मिलाया, और वह भी बिना किसी प्रकारका अफ़सोस जाहिर किये मुझसे फिर गया। मैं उससे घृणा करने लगा। हमारी रेजीमेन्टमें और महिला-समाजमें उसकी सफलताने मुझे एकदम निराशमें डाल दिया। मैं उससे लड़नेका मौक़ा ढूँढ़ने लगा। परन्तु मेरी चालोंका जवाब भी ऐसी चालोंसे मिलने लगा, जिनकी कभी आशा ही न थी और जिनका डंक मेरी चालोंसे अधिक तीव्र था। वह रंगीन-मिज़ाज था मैं विद्वेषपूर्ण। अन्तमें क्या हुआ कि एक दिन किसी पोलिश रईसके घरमें नाच था। हम दोनों वहां उपस्थित थे। मैंने देखा कि समस्त रमणियोंका ध्यान और खास तौरपर घरकी मालकिनका ध्यान भी—जो अभी तक मेरी मित्र थी—उसीकी ओर है। मैंने जल-भुन कर उसके कानमें कुछ बड़ी वेहूदा-सी बात कही। इसपर वह भी गरमा उठा और उसने मेरा कान धरकर उमेठ दिया। हम लोगोंने अपनी तलवारें खींच लीं। लेडियां बेहोश हो गईं, लोगोंने पकड़कर हम दोनोंको अलग कर दिया, परन्तु उसी रातको हम दोनों द्वन्द्व लड़नेके लिए चले गये।

"प्रातःकाल पौ फट रही थी। मैं द्वन्द्वके लिए निर्धारित की हुई जगहपर खड़ा था। मेरे साथ मेरे दो सहकारी थे। मैं बड़ी बेचैनीसे अपने शत्रुके आनेकी बाट जोह रहा था। सूरज निकल आया, उसकी किरणोंमें कुछ-कुछ गर्मी आने लगी, इतनेमें मैंने उसे दूरसे आते हुए देखा। वह पैदल था शरीरपर वर्दी और कमरमें तलवार लटक रही थी। साथमें एक सहकारी था। मैं अपने साथियोंके साथ उससे मिलनेके लिए आगे बढ़ा। जब वह पास पहुंचा, तो मैंने देखा कि उसके हाथमें टोपी थी, जिसमें चेरियां (विलायती मकोय) भरी हुई थी। हमारे सहकारीने

आगे बढ़कर बारह क़दम जगह नापी। पहले मुझे गोली चलानी थी, परन्तु गुस्सेके मारे मुझे इस बातका विश्वास नहीं था कि मेरा हाथ स्थिर रहेगा—कांपेगा नहीं। इसलिए मैंने संभलनेके लिए थोड़ा समय प्राप्त करनेके उद्देश्यसे पहला वार करनेका अधिकार उसे दे दिया। परन्तु वह इसपर राजी नहीं हुआ। अन्तमें हम लोगोंने रुपयेको चित-पट फेंककर इस बात का निर्णय किया। मैं पहले ही कह चुका हूं कि वह बड़ा भाग्य-वान था, चित-पटमें भी वही जीता। उसने निशाना साधा और पिस्तौल दाग़ दी। गोली मेरी टोपीको छेदती हुई निकल गई। अब मेरी बारी आई। आखिरकार अब उसका जीवन मेरे हाथमें था। मैंने बड़ी उत्सुकतासे उसकी ओर देखा और यह जाननेकी चेष्टा की कि उसके हृदयमें ज़रासा भी डर या धुकधुकाहट है या नहीं। वह मेरी पिस्तौलके सामने निश्चिन्त भावसे खड़ा हुआ, अपनी टोपीमें से पकी चेरियोंको निकालकर खा रहा था और गुठलियां थूकता जाता था। वे गुठलियां उछल-उछलकर मेरे पास आती थीं। उसकी शान्ति और उदासीनता देखकर मैं अधीर हो उठा। मैंने सोचा कि ऐसे व्यक्तिका प्राण लेनेसे क्या लाभ, जो अपने प्राणोंका रत्तीभर भी मूल्य नहीं समझता? एकाएक मेरे मनमें कुछ दुष्ट विचार आये। मैंने पिस्तौल नीची कर ली और उससे कहा—'इस समय आप मौतका ध्यान न करके नाश्तेका आनन्द ले रहे हैं, मैं आपके नाश्तेमें खलल डालना नहीं चाहता!' वह बोला—'नहीं नहीं, मुझे ज़रा भी खलल नहीं पड़ेगा। कृपया आप गोली चलायें......आगे फिर जैसी आपकी मर्जी हो, आपको गोली चलानेका अधिकार बना है, आप जब चाहेंगे मैं आपकी सेवामें तैयार रहूंगा!' मैंने अपने साथियोंकी ओर घूमकर कहा

कि इस समय मैं और कुछ नहीं करना चाहता। इस प्रकार हम लोगोंका वह द्वन्द्व समाप्त हुआ।

"मैंने नौकरी छोड़ दी, और यहीं आकर रहने लगा। मगर उस दिनसे आज तक एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा जिस दिन मैंने बदला लेनेका विचार न किया हो। अब मेरा समय आया है............"

सिलवियोने अपनी पाकेटसे आई हुई चिट्ठी निकालकर मेरे हाथमें धर दी। चिट्ठीमें मास्कोसे किसी व्यक्तिने (जिसे शायद सिलवियो अपने काम-काजका भार सौंप आया था) यह लिखा था कि एक व्यक्ति विशेष किसी सुन्दरी नवयुवतीका नियमानुसार पाणिग्रहण करनेवाला है।

यह तो तुमने समझ ही लिया होगा कि व्यक्तिविशेष से क्या मतलब है—सिलवियो बोला—मैं मास्को जाता हूं। वहां जाकर देखूंगा कि क्या ऐन विवाहके पूर्व दिन भी वह वैसी ही शान्तिसे मौतका सामना करता है, जैसा चेरीका नाश्ता करते समय उसने किया था।"

सिलवियो उठ खड़ा हुआ और अपनी टोपीको फ़र्शपर फेंककर कमरेमें इधरसे उधर इस प्रकार टहलने लगा जैसे पिंजड़ेमें शेर टहलता हो। मैं चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। अनेक विचित्र और परस्पर विरोधी विचारोंने मेरे मस्तिष्कपर क़ब्जा जमा लिया।

इतनेमें नौकर अन्दर आकर खबर दी कि गाड़ी तैयार है। सिलवियोने बड़े प्रेमसे हाथ मिलाया; हम दोनों एक दूसरेके गले लगे। सिलवियो गाड़ीमें बैठ गया। गाड़ीमें दो बक्स रखे थे, एकमें सिलवियोके पिस्तौल थे और दूसरेमें उसका आवश्यक सामान। हमने एक बार पुनः विदा ली और घोड़े चल पड़े हुए।

कई वर्ष वीत गये। मुझे अपने कुछ निजी मामलातके कारण ना···· जिलेमें दरिद्रतासे मारे हुए एक छोटे ग्राममें जाकर वसना पड़ा। वहाँ जमींदारीके काममें व्यस्त रहते हुए भी, मैं अक्सर अपने पुराने शान्तिहीन कोलाहलपूर्ण जीवनके लिए मन ही मन ठंढी साँसें भरा करता था। जाड़े और वसन्तकी सुनसान लम्बी संध्याको ऐसे एकान्तमें वितानेकी आदत डालना मुझे वहुत ही दुष्कर प्रतीत होता था। मेयरसे गपशप लड़ाकर और नई बनती हुई इमारतोंकी देख रेख करके दिनका समय तो किसी न किसी प्रकार काट लेता था, मगर संध्याको भोजनके बाद सचमुच मैं नहीं जानता था कि मैं क्या करूँ—वक्त कैसे काटूँ? घर और वाहर, जितनी गिनी गूथी पुस्तकें मिल सकती थीं, मैंने उन्हें इतनी दफा पढ़ डाला था कि वे अव मुझे प्रायः कण्ठस्थ हो गई थीं। हमारी गृह—स्वामिनीको जितनी कहानियाँ याद थीं, मैंने उन्हें अनेकों वार सुना था। कृषक-स्त्रियोंके गीत सुनते-सुनते मैं ऊब गया था। मैं शराबकी शरण ले सकता था, मगर शराब पीनेसे मेरे सिरमें दर्द होने लगता था, दूसरे मुझे डर था कि शराब पी-पकर मैं पक्का शराबी वन जाऊँगा, क्योंकि ज़िलेमें इस प्रकारके अनेक उदाहरण मौजूद थे।

मेरे गाँवके समीप कोई पड़ोसी भी नहीं था। जो दो-तीन अभागे थे भी, उनकी वातचीतमें खाँसीकी खों-खों और आहोंकी आह-ऊह ही अधिक

रहती थी। उनके संग बैठनेसे तो एकान्त ही भला था। अन्तमें मैंने यह निश्चय किया कि जहाँ तक सम्भव हो सके देर करके व्यालू किया करूँ, और जितनी जल्दी सम्भव हो, सो रहा करूँ। इस प्रकार मैंने संध्याके समयको काटकर छोटा किया और दिनका समय बढ़ाया जिसे मैं लाभदायक कामोंमें लगाने लगा।

मेरे ग्रामसे चार कोसकी दूरीपर एक बड़ी मालदार ज़मींदारी थी। उसकी मालिकिन काउन्टेस ब····थीं। उस समय वहाँ केवल एक मैनेजर ही रहता था। काउन्टेस अपने विवाहके पहले वर्ष केवल एक बार वहाँ आई थीं और सो भी महीना-भरसे अधिक नहीं ठहरीं थीं।

मेरे एकान्तवासके दूसरे वर्ष इस ग्राममें यह अफ़वाह गर्म हुई कि काउन्टेस और उनके पति अपनी ज़मींदारीमें गरमियाँ बितानेके लिए आ रहे हैं। जूनके आरम्भमें वे सचमुच ही आ गये।

किसी धनशाली पड़ोसीका आगमन देहातियोंके लिए एक महत्वपूर्ण बात है। ज़मींदार और किसान उनके आगमनके दो मास पहलेसे, जानेके तीन वर्ष बाद तक उसकी चर्चा किया करते हैं। अपने सम्बन्धमें मैं स्वीकार करता हूँ कि एक सुन्दर नवयुवक पड़ोसीकी उपस्थिति मेरे लिए काफ़ी महत्त्वपूर्ण बात थी। मैं उन्हें देखनेके लिए अत्यन्त अधीर हो रहा था। इसलिए उनके आनेके बाद, पहले ही रविवारको भोजनसे निपटकर मैं काउन्ट और काउन्टेसकी सेवामें सम्मान प्रदर्शित करने और यह बतानेके लिए कि मैं उनका निकटस्थ पड़ोसी और सेवक हूँ, उपस्थित हुआ।

एक दरबानने मुझे काउन्टके पुस्तकालयमें ले जाकर बिठाया और स्वयं खबर देनेके लिए अन्दर गया। पुस्तकालयका बड़ा कमरा बढ़ियासे बढ़िया

आराइशके सामानोंसे सजा था। दीवारोंके सहारे किताबोंकी आलमारियोंकी क़तारें लगी थीं। आलमारियोंमें प्रत्येकपर एक-एक कांसेकी मूर्ति स्थापित थी। अँगीठीका स्थान संगमरमरका बना हुआ था। उसके ऊपर एक बड़ा शीशा लगा था। फ़र्श हरी जाज़मसे ढका था, जिसपर क़ीमती क़ालीन बिछे हुए थे। अपने दरिद्रावासमें रहते-रहते मुझे विलासितापूर्ण चीज़ोंके देखने-की आदत छूट गई थी; और चूंकि बहुत दिनोंसे मैंने इन क़ीमती चीज़ोंको नहीं देखा था, इसलिए आज उन्हें एकाएक देखकर मेरे मनमें एक प्रकारका डर-सा लगने लगा। मैं कुछ डरा-सहमा-सा काउन्टके आगमनकी उसी प्रकार प्रतीक्षा करने लगा, जैसे कोई ग्रामीण प्रार्थी किसी सूबेके मंत्रीके आगमनसे भयाकुल होता है। दरवाज़ा खुला और कोई बत्तीस वर्षकी उम्रका एक सुन्दर पुरुष भीतर आया। काउन्ट मित्रतापूर्ण सहज भावसे मेरी ओर बढ़ा। अपना सम्पूर्ण साहस संचित करके मैंने भी अपने आनेका कारण बतानेकी कोशिश की, परन्तु काउन्टने मेरे कहनेके पूर्व ही उसे स्वीकार कर लिया। हम दोनों बैठ गये। थोड़ी ही देरमें काउन्टके सरल और रुचिकर वार्तालापसे मेरी झिझक छूट गई। मैं फिर अपनी स्वाभाविक अवस्थामें आ गया। इतने ही में एकाएक काउन्टेस कमरेमें आई। मेरी घबराहट पहलेसे कहीं अधिक बढ़ गई। वह निस्सन्देह सुन्दरी थी। काउन्टने मेरा परिचय कराया। मैंने बड़ी कोशिश की कि मैं अपनी स्वाभाविक दशामें रहूं, लेकिन मैं जितनी ही कोशिश करता था, उतनी ही मेरी घबराहट बढ़ती थी। काउन्ट और काउन्टेसने मुझे अपनी झिझक मिटाने और शान्त होनेका मौक़ा देनेके लिए बिना तकल्लुफ़के आपसमें ही बातचीत करना शुरू किया और इस प्रकार मुझे ऐसा दरसाया, मानो मैं

चिरपरिचित मित्र हूं। इसी बीचमें मैं उठ खड़ा हुआ और कमरेमें इधर-उधर टहलकर तस्वीरें और किताबें देखने लगा। मैं तस्वीरोंका ज्ञाता नहीं हूं, फिर भी उन चित्रोंमें से एककी ओर मेरा ध्यान आकर्षित हुआ। यह चित्र स्विट्ज़रलैण्डके एक प्राकृतिक दृश्यका था। चित्रमें मुझे चित्रकारको कलाकी कोई विशेषता नहीं मालूम हुई, बल्कि यह विशेषता दिखाई पड़ी कि उसमें गोलीके दो छेद थे। ये दोनों छेद ठीक एक-दूसरेके ऊपर पड़े थे।

मैंने काउण्टकी ओर घूमकर कहा—"बड़ा उम्दा निशाना लगा है।"

काउण्टने जवाब दिया—"बेशक बड़ा उम्दा निशाना है। क्या आप भी अच्छा निशाना लगा लेते हैं?"

"जी हाँ, साधारण तौरसे अच्छा निशाना लगा लेता हूं। यदि पिस्तौल मेरी पहचानी हुई हो, तो मैं तीस कदमकी दूरीपर ताशके पत्तेको उड़ा दूंगा।' मुझे इस बातकी प्रसन्नता हुई कि अब बातचीतका सिलसिला एक रुचिकर विषयकी ओर घूमा है।

"सचमुच?" काउण्टेस बोली, फिर काउण्टकी ओर देखकर कहने लगी—"प्यारे, क्या तुम भी तीस कदमकी दूरीसे ताशका पत्ता उड़ा सकते हो?"

"हम लोग एक दिन कोशिश करेंगे। अपने समयमें मैं भी कोई खराब निशानेबाज नहीं था। मगर पिस्तौलको छुये हुए मुझे चार वर्ष हो गये।"

"ओह"—मैंने कहा—"अगर यह मामला है, तब तो मैं शर्त लगा सकता हूं कि हुजूर बीस कदमपर भी ताशपर निशाना नहीं लगा सकेंगे, क्योंकि पिस्तौलका निशाना ऐसी चीज है, जिसके लिए रोजाना प्रैक्टिसकी जरूरत है। इसका मुझे तजरबा है। मैं अपनी रेजीमेन्टमें सबसे अच्छे निशानेबाजोंमें समझा जाता था। एक बार मेरी पिस्तौल मरम्मतके लिए

गई थी, इसलिए मैंने एक महीने तक पिस्तौल नहीं छुई। हुजूर, यकीन न होगा कि एक महीने बाद जब मैंने पिस्तौल उठाई, मैं पचीस कदमकी दूरीपर एक बोतलको निशाना लगानेमें मैं लगातार चार बार चूका। हमारा भावुक सवार वहीं मौजूद था, वह बड़ा खुशमिजाज आदमी था। उसने कहा — 'बोतलकी सुरक्षाके वास्ते हाथ उठाया नहीं जाता!' नहीं जनाब, यह ऐसी चीज है कि अगर आप इसे एकदम छोड़ना नहीं चाहते, तो आपको इसकी प्रैक्टिस नहीं छोड़नी चाहिए। मैंने जिन्दगीमें जो सबसे अच्छा निशानेबाज देखा, वह रोज बिला नागा प्रैक्टिस करता था और ब्यालूके पहले कम-से-कम तीन बार जरूर फैर कर लेता था। जैसे खाना खानेके बाद एक गिलास शराब पीनेका उसका नियम था, वैसे ही ब्यालूके पहले वह तीन बार नियमानुसार फैर किया करता था।"

मेरी झिझक जाती रही और मैं बातूनी हो गया. यह देखकर काउण्ट और काउण्टेस प्रसन्न-से दिखाई पड़ने लगे।

"उसका निशाना कैसा था?" काउण्टने पूछा।

"हुजूर, वह ऐसा पक्का निशानेबाज था कि अगर वह दीवारपर एक मक्खी बैठी देखता........काउण्टेस आप मुस्करा रही हैं, मगर यकीन मानिये, यह बिलकुल सच है कि जब वह दीवारपर मक्खी बैठी देखता, तो पुकारकर कहता—"कुसका मेरी पिस्तौल तो देना।" कुसका भरी हुई पिस्तौल लाकर रख देता था। बस, एक बार धायँ! और दीवारपर मक्खी चिपटी होकर रह जाती थी।"

"बेशक, यह ताज्जुबकी बात है।"—काउण्टने कहा—"उसका नाम क्या था?"

"हुज़ूर, उसका नाम सिलवियो था।"

"सिलवियो ?"—काउण्ट चिल्लाकर उछल पड़ा—"आप सिलवियोको जानते हैं ?"

"उसको जानते हैं ? अरे, हम लोग दोस्त थे; हमारी रेजीमेण्टवाले उसे बिलकुल अपना ही आदमी समझते थे। मगर पाँच वर्ष बीत गये, तबसे मुझे उसकी कुछ भी खबर नहीं मिली। मालूम पड़ता है हुज़ूर भी उससे वाकिफ़ हैं।"

"मैं उसे जानता हूं—बहुत अच्छी तरह जानता हूं। अच्छा, क्या उसने कभी किसी विचित्र घटनाका जिक्र भी आपसे किया था ?"

"हुजूर, उस कानगोशीका जिक्र तो नहीं कर रहे हैं, जो किसी शरारती नौजवानने एक नाचके अवसरपर की थी ?"

"उसने उस शरारतीका नाम भी बताया था ?"

"नहीं हुजूर, नाम तो उसने नहीं बताया, मगर हुजूर" अब मुझे कुछ-कुछ सत्यका प्रकाश दिखाई दिया—"माफ कीजिएगा—मुझे मालूम नहीं था—क्या वह हुजूर ही थे ?"

"मैं ही था" काउण्टने जवाब दिया। उसके चेहरेसे बेइन्तहापरेशानी टपक रही थी—"वह छेदवाली तस्वीर हमलोगोंके अंतिम मिलनकी यादगार है।"

"ओह !"—काउण्टेस बोली—"कृपया उसका जिक्र न कीजिए। मुझे उसकी कथा सुनते भय लगता है।"

"नहीं" काउण्टने जवाब दिया—"मैं पूरा किस्सा बयान करूँगा। अब ये यह बात जानते ही हैं कि मैंने इनके मित्रको किस प्रकार खफ़ा किया

था, तब इन्हें यह भी सुन लेने दो कि सिलवियोने किस प्रकार उसका बदला लिया।"

काउण्टने मुझसे बैठनेके लिए कहा। मैं बैठ गया और बड़ी चंचल उत्सुकतासे निम्न-लिखित कथाको सुनने लगा—

"पांच वर्ष हुए मेरा विवाह हुआ था। विवाहके पश्चात् 'मधुचन्द्र' का पहला मास मैंने इसी गांवमें विताया था। इसी मकानमें मेरे जीवनकी सबसे अधिक आनन्दमय और सबसे अधिक विषादमय घड़ियां बीती हैं।

"हम लोग एक दिन सन्ध्या समय घोड़ोंपर सवार होकर हवा खानेको बाहर गये थे, मेरी स्त्रीका घोड़ा एकाएक बिगड़ गया, जिससे वह बहुत डर गई। उसने अपने घोड़ेकी लगाम मेरे हाथमें दे दी और स्वयं उतरकर पैदल घरकी ओर चल दी। मैं लौटकर जब अस्तबलमें पहुंचा, तो देखा कि वहां बाहरसे आई हुई एक गाड़ी खड़ी है। पूछने पर मालूम हुआ कि उसमें कोई भले आदमी आये हैं, जिन्होंने अपना नाम बतानेसे इन्कार किया और केवल यही कहा कि उन्हें मुझसे कुछ काम है। वे पुस्तकालयमें बैठे हुए मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं इस कमरेमें आया, तो शामके धुँधले प्रकाशमें देखा कि एक शख्स, जिसके लम्बी दाढ़ी थी और बदन-भरपर धूल छाई हुई थी, अँगीठीके पास खड़ा है। मैं मनमें यह सोचता हुआ कि इसको मैंने कहीं देखा है, उसके पास गया। उसने कांपती हुई आवाज़में कहा—'काउण्ट, तुमने मुझे पहचाना नहीं?'

"सिलवियो!' मैं चिल्ला उठा। मैं आपसे स्वीकार करूँगा कि मेरे शरीर-भरके रोंगटे खड़े हो गये।

"सिलवियो बोला—'हां, मैं ही हूँ, तुम जानते हो कि मेरी गोली अभी

बाकी है। आज मैं अपनी पिस्तौल खाली करने आया हूं। तुम तैयार हो ?

"पिस्तौल उसकी जेबसे बाहरकी ओर झांक रही थी। मैंने बाहर कदम नापे और उस कोनेमें जाकर खड़ा हो गया। मैंने उससे प्रार्थना की कि वह मेरी स्त्रीके आनेके पहले ही, चटपट गोली दाग़ दे। वह जरा हिचकिचाया और बोला कि रोशनी मँगाइये। मोमबत्तियां लाई गईं। मैंने दरवाज़ा बन्द कर दिया, हुक्म दिया कि कोई भीतर न आवे, फिर उससे गोली चलानेकी प्रार्थनाकी। उसने पिस्तौल निकाली और निशाना साधने लगा......। कालरात्रि-सा एक मिनट बीत गया। सिलवियोने अपना हाथ नीचा कर लिया और बोला—"अफ़सोस है कि मेरी पिस्तौलमें चेरीकी गुठलियां नहीं भरी हैं...—उसमें वज़नी गोली भरी है। यह मुक्केद्वन्द्व-सा नहीं जान पड़ता, यह तो हत्या-सी दिखाई देती है। मुझे निःशस्त्र आदमी पर निशाना साधने की आदत नहीं है। इसलिए, आओ हम लोग फिरसे आरम्भ करें। चिट्ठी उठा लें कि पहले कौन गोली चलायेगा।'

"मेरा सिर घूमने लगा...। मैं समझता हूं कि मैं राजी नहीं था....। अन्तमें दूसरी पिस्तौल भरी गई। कागज़के दो टुकड़ोंको मुड़ीमुड़ी करके उसने एक टोपीमें, जिसको मैंने एक बार गोलीसे छेद दिया था, रखा। चिट्ठी उठानेमें इस बार भी मैं ही जीता। 'काउण्ट तुम बड़े क़िस्मतके धनी हो'—उसने ऐसी तानेकी हँसी हँसते हुए कहा; जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। मेरी समझमें नहीं आता कि मुझे क्या हो गया, और उसने किस तरीक़ेसे मजबूर किया। ख़ैर, जो हो, मैंने पिस्तौल दाग दी। गोली उस तस्वीरमें जाकर लगी।"

काउण्टने उँगलीसे उस छेदवाली तस्वीरकी ओर इशारा किया। उसका

चेहरा लाल हो रहा था। काउण्टेस धुले रूमालसे भी ज्यादा सफेद पड़ रही थी। मेरे मुँहसे भी एक आश्चर्यकी आवाज़ निकल पड़ी।

काउण्ट फिर कहने लगा—“मैंने गोली तो दागी, मगर ईश्वरको धन्यवाद है कि मैं निशाना चूक गया। तब सिलवियो.......।” उस क्षण काउण्ट सचमुच ही बहुत भयंकर दिखाई देता था। उसने फिर कहना शुरू किया—

“सिलवियोने मुझपर निशाना साधा। एकाएक दरवाज़ा खुला और माशा (मेरी स्त्री) झपटकर भीतर घुस आई। वह चीख मारकर मेरे गले से लिपट गई। उसकी उपस्थितिसे मेरा साहस पुनः लौट आया, मैंने कहा —“प्यारी! तुम देखती नहीं हो हमलोग मज़ाक़ कर रहे हैं? तुम कैसी डर गई हो? जाओ, एक गिलास पानी पियो और लौटकर हम लोगोंके पास आओ। मैं अपने एक पुराने मित्र और साथीका तुमसे परिचय कराऊँगा। माशाको फिर भी सन्देह बना रहा। उसने सिलवियोके गम्भीर चेहरेकी ओर घूमकर कहा—‘सच बताइये, मेरे पति जो कुछ कह रहे हैं, क्या वह ठीक है? क्या आप दोनों आदमी सचमुच मज़ाक़ कर रहे हैं? सिलवियोने जवाब दिया ‘काउण्टेस, तुम्हारे पति सदा मज़ाक़में ही रहते हैं। एक बार मज़ाक़ ही मज़ाक़में इन्होंने मेरा कान उमेठ दिया था, दूसरी बार मज़ाक़में इन्होंने गोली चलाई, जो इस टोपीको छेद कर निकल गई; मज़ाक़ ही में अभी मुझपर इनका निशाना चूका है। अब मेरी तबीयत भी कुछ ऐसा ही मज़ाक़ करने को चल रही है!’ यहकर वह निशाना साधने ही वाला था......माशाके सामने। माशा उसके पैरोंपर गिर पड़ी। ‘माशा उठो, तुम्हें शर्म नहीं आती’—मैंने क्रोधसे चिल्लाकर कहा—‘और जनाब, आप क्या इस

बेचारी स्त्रीसे हँसी करना बन्द नहीं करेंगे? आप गोली चलायेंगे या नहीं? 'नहीं, मैं अब गोली नहीं चलाऊँगा।' सिलवियोने उत्तर दिया—'मैं सन्तुष्ट हो गया। मैंने तुम्हारे चेहरेपर भय और धुकपुकाहटके चिह्न देख लिए। मैंने तुमसे अपने ऊपर गोली चलवाई, अब मुझे सन्तोष है। तुम मुझे कभी-कभी याद किया करना। मैं तुम्हें तुम्हारी आत्मापर छोड़ता हूँ। यह कहकर वह चलनेको उद्यत हुआ, परन्तु दरवाज़ेपर आकर रुक गया। उसने घूमकर इस छिदी हुई तस्वीरकी ओर देखा, पिस्तौल उठाकर, बिना निशाना साधे गोलीदाग दी और गायब हो गया। मेरी स्त्री बेहोश हो गई थी। नौकरों को हिम्मत न हुई कि उसे रोक सकें, वे सब उससे बहुत भयभीत हो गये थे। उसने बाहर निकलकर अपने कोचवानको पुकारा और इसके पहले कि मैं अपना होश संभालूँ, वह चला गया।"

फाउण्टने अपना क़िस्सा खतम कर दिया। इस प्रकार मुझे इस क़िस्से का अन्तिम भाग मालूम हुआ, जिसका आरम्भिक भाग सुनकर मैं इतना आकंपित हुआ था। इस कथाके नायकसे फिर मेरी कभी भेंट नहीं हुई। कहते हैं कि एलेक्ज़ेंडर यसलाण्टीकी अध्यक्षतामें जो विद्रोह हुआ था, सिलवियो उसमें एक दलका सेनापति था और उसीमें एक लड़ाईमें मारा गया।

बर्फ़का तूफ़ान

[पुश्किन]

[१]

सन् १८११ का अन्तिम भाग रूसियोंके लिए एक स्मरणीय समय था। उस समय आर० गैब्रिल नामक एक बूढ़ा रईस नेनाराडोवामें अपनी ज़मींदारीपर रहा करता था। वह अपने अतिथि-सत्कार और उदार-हृदयके लिए ज़िले-भरमें मशहूर था। अड़ोस-पड़ोसके भले आदमी हमेशा उसके घर आया-जाया करते थे। कोई तो उसके यहाँ खाने-पीनेके विचारसे आते थे, कोई उसकी स्त्री प्रसकोवियाके साथ ताश खेलने आते थे और कोई उसकी युवती लड़की मेरियाको देखनेके प्रलोभनसे आते थे। सत्रह वर्षकी मेरिया इकहरी देहकी थी। उसका रंग चम्पई था। वह अपने माता-पिताकी इकलौती लड़की थी, इसलिए लोग जानते थे कि उसके साथ विवाह करनेवालेको उसके पिताकी सब जायदाद भी मिलेगी। इसलिए बहुतसे लोग उसके साथ अपना अथवा अपने लड़कोंका विवाह करनेके इच्छुक थे।

मेरिया फ्रेंच उपन्यास पढ़-पढ़कर बड़ी हुई थी, फलतः वह प्रेम-बन्धनमें बँध चुकी थी। उसका प्रेम-पात्र फ़ौजका एक ग़रीब सब-लेफ्टिनेन्ट था,

जो उन दिनों छुट्टीपर गाँवमें आया था। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि नवयुवक लेफ्टिनेन्ट भी मेरियाके प्रेमका उतनी ही सरगर्मीसे प्रतिदान करता था। परन्तु मेरियाके माता-पिताने, उन दोनोंका पारस्परिक अनुराग देखकर, अपनी लड़कीको नवयुवक लेफ्टिनेन्टका विचार तक मनमें लानेकी सख्त मनाही कर दी थी। नवयुवकके साथ उनका व्यवहार तो अपराधीसे भी गया बीता था।

हमारे प्रेमी प्रेमिका छिपे-छिपे पत्र-व्यवहार करते और प्रायः प्रतिदिन, चीड़के जंगलमें या गिरजेके पीछे, किसी निर्जन स्थानमें गुप्त रूपसे मिला करते थे। जब वे मिलते, तो अनन्त काल तक एक दूसरेसे प्रेम करनेकी प्रतिज्ञा करते, क्रूर भाग्यपर अफ़सोस करते, और नाना प्रकारके प्रस्तावोंपर विचार करते। इस प्रकार पत्र व्यवहार और प्रेमालाप करके अन्तमें उनका इस परिणामपर पहुँचना बिलकुल स्वाभाविक ही था कि—

'जब हम एक दूसरेसे पृथक् रहकर जीवित नहीं रह सकते और जब हमारे निष्ठुर माता-पिता अपने अत्याचारसे हमारे सुखके मार्गमें रोड़े अटकाते हैं, तो क्या यह उचित नहीं है कि हम उनकी परवा किये बिना ही अपना काम निकालें।

निश्चय ही यह सुखप्रद विचार नवयुवकके दिमागमें पैदा हुआ था, परन्तु मेरियाका कल्पनाप्रिय हृदय इस विचारसे नाच उठा।

जाड़ा आरम्भ हो गया और इससे उन दोनोंका मिलना-जुलना भी बन्द हो गया। परन्तु उनका पत्र व्यवहार अधिक बढ़ गया। नवयुवक ब्लाडी-मीर मेरियासे प्रत्येक पत्रमें यही प्रार्थना करता था—"तुम राजी हो जाओ, तो चलो हम लोग गुप्तरीतिसे विवाह कर लें और कुछ दिनोंके लिए कहीं छिप

बर्फ़का तूफ़ान

[पुश्किन]

[१]

सन् १८११ का अन्तिम भाग रूसियोंके लिए एक स्मरणीय समय था। उस समय आर० गॅव्रिल नामक एक बूढ़ा रईस नेनारादोवामें अपनी ज़मींदारीपर रहा करता था। वह अपने अतिथि-सत्कार और उदार-हृदयके लिए ज़िले-भरमें मशहूर था। अड़ोस-पड़ोसके भले आदमी हमेशा उसके घर आया-जाया करते थे। कोई तो उसके यहाँ खाने-पीनेके विचारसे आते थे, कोई उसकी स्त्री प्रसकोवियाके साथ ताश खेलने आते थे और कोई उसकी सुन्दरी लड़की मेरियाको देखनेके प्रलोभनसे आते थे। सत्रह वर्षकी मेरिया छरहरी देहकी थी। उसका रंग चम्पई था। वह अपने माता-पिताकी इकलौती लड़की थी, इसलिए लोग जानते थे कि उसके साथ विवाह करनेवालेको उसके पिताकी सब जायदाद भी मिलेगी। इसलिए बहुतसे लोग उसके साथ अपना अथवा अपने लड़केका विवाह करनेके इच्छुक थे।

मेरिया अँग्रेजी उपन्यास पढ़-पढ़कर बड़ी हुई थी, फलतः वह प्रेम-बन्धनमें बँध चुकी थी। उसका प्रेम-पात्र फौजका एक गरीब सब-लेफ्टिनेन्ट था,

जो उन दिनों छुट्टीपर गाँवमें आया था। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि नवयुवक लेफिटनेन्ट भी मेरियाके प्रेमका उतनी ही सरगर्मीसे प्रतिदान करता था। परन्तु मेरियाके माता-पिताने, उन दोनोंका पारस्परिक अनुराग देखकर, अपनी लड़कीको नवयुवक लेफिटनेन्टका विचार तक मनमें लानेकी सख्त मनाही कर दी थी। नवयुवकके साथ उनका व्यवहार तो अपराधीसे भी गया बीता था।

हमारे प्रेमी-प्रेमिका छिपे-छिपे पत्र-व्यवहार करते और प्रायः प्रतिदिन, चीड़के जंगलमें या गिरजेके पीछे, किसी निर्जन स्थानमें गुप्त रूपसे मिला करते थे। जब वे मिलते, तो अनन्त काल तक एक दूसरेसे प्रेम करनेकी प्रतिज्ञा करते, क्रूर भाग्यपर अफ़सोस करते, और नाना प्रकारके प्रस्तावोंपर विचार करते। इस प्रकार पत्र व्यवहार और प्रेमालाप करके अन्तमें उनका इस परिणामपर पहुँचना बिलकुल स्वाभाविक ही था कि—

'जब हम एक दूसरेसे पृथक् रहकर जीवित नहीं रह सकते और जब हमारे निष्ठुर माता-पिता अपने अत्याचारसे हमारे सुखके मार्गमें रोड़े अटकाते हैं, तो क्या यह उचित नहीं है कि हम उनकी परवा किये बिना ही अपना काम निकालें।

निश्चय ही यह सुखप्रद विचार नवयुवकके दिमागमें पैदा हुआ था, परन्तु मेरियाका कल्पनाप्रिय हृदय इस विचारसे नाच उठा।

जाड़ा आरम्भ हो गया और इससे उन दोनोंका मिलना-जुलना भी बन्द हो गया। परन्तु उनका पत्र व्यवहार अधिक बढ़ गया। नवयुवक ब्लाडीमोर मेरियासे प्रत्येक पत्रमें यही प्रार्थना करता था—"तुम राजी हो जाओ, तो चलो हम लोग चुपकेसे विवाह कर लें और कुछ दिनोंके लिए कहीं छिप

रहें, बादमें आकर माता-पिताके चरणोंमें गिरकर क्षमा-प्रार्थना करें। हम लोगोंकी ऐसी दृढ़तापूर्ण लगन देखकर माता-पिताका हृदय भी अन्तमें द्रवित हो जायगा और वे कहेंगे 'अच्छा आओ बच्चो, हमारे गले मिल जाओ'।"

मेरिया बहुत दिन तक असमंजसमें पड़ी रही। उसके सामने तरह-तरहके अनेकों प्रस्ताव उपस्थित किये गये। उनमें कहीं भाग जानेका जो प्रस्ताव था, वह कुछ दिनोंके लिए अस्वीकृत कर दिया गया, पर अन्तमें मेरिया राज़ी हो गई। यह तै हुआ कि निश्चित दिनको वह सिर-दर्दका बहाना करके रात्रिका भोजन न करेगी और शामसे ही शयनागारमें चली जायगी। फिर वह और उसकी नौकरानी—जो इस भेदमें सम्मिलित थी—पीछेके ज़ीनेसे चुपकेसे उतरकर बाग़में चली जायँगी। बाग़के सिरेपर उन्हें एक 'स्ले' * तैयार मिलेगी, जिसपर चढ़कर वे सीधी जेड्रिनो गांवके गिरजेको—जो पांच मील दूर था—चली जायँगी। गिरजेमें व्लाडीमीर उनका इन्तज़ार करता हुआ मिलेगा।

उस परिवर्तनकारी दिनसे पहली रातको मेरिया रात-भर नहीं सोई, वह अपने कपड़े-लत्ते बांधती-बूँधती रही। इसके अलावा उसने दो लम्बी-लम्बी चिट्ठियाँ लिखीं। एक अपने माता-पिताको और दूसरी अपनी एक सहेलीको, जो एक बड़ी भावुक नवयुवती थी। माता-पितावाली चिट्ठीमें उसने बड़े मर्मस्पर्शी शब्दोंमें उनसे विदा मांगी थी। अपनी इस कार्रवाईके लिए उसने प्रेमकी अजेय शक्तिकी दुहाई दी थी। पत्र समाप्त करते हुए उसने लिखा था—"मैं उसे अपने जीवनका सबसे सौभाग्यशाली समय

---

* रूसमें वर्फ़ पर चलनेवाली विना पहियेकी गाड़ीको 'स्ले' कहते हैं।

समझूँगी, जब आप लोग मुझे अपने चरणोंमें गिरकर क्षमा-प्रार्थना करनेकी इजाज़त देंगे।" इन दोनों पत्रोंको लिफाफेमें वन्द करके और उनपर मुहर—जिसमें दो पान चटकीले लाल रंगमें अंकित थे और उनके नीचे उन्हींके उपयुक्त कुछ शब्द लिखे थे—लगाकर मेरिया विस्तरपर लेट रही। सवेरा होनेमें थोड़ी ही देर थी। उसे झपकी आ गई, परन्तु भयानक विचार आ-आकर प्रतिक्षण उसकी निद्रा भंग करने लगे। पहले तो उसे मालूम हुआ कि जिस समय वह विवाह करने जानेके लिए 'स्ले' पर चढ़ रही थी। ठीक उसी वक्त उसके पिताने आकर रोक लिया। उसने मेरियाको बेरहमीसे वर्फपर घसीटते हुए ले जाकर एक अन्धकारमय गहरे तहखानेमें ढकेल दिया। वह तहखानेमें सिरके बल गिरी, उसका हृदय वैठा जा रहा था। फिर उसने देखा कि व्लाडीमीर घासपर पड़ा है। वह पीला पड़ गया है और उसके शरीरसे खून बह रहा है। उसका दम निकल रहा है और वह अपनी मरती हुई आवाज में मेरियासे प्रार्थना कर रहा है कि वह शीघ्रतासे उसके साथ विवाह कर ले। इसी प्रकार और भी अनेक भयावने और बेसिर-पैरके दृश्य उसके सामनेसे एकके वाद एक गुज़रे। अन्तमें जब उसकी नींद टूटी और वह सोकर उठी, तब उसका चेहरा और दिनसे अधिक पीला पड़ गया था और उसके सिरमें सचमुच ही दर्द हो रहा था।

उसके माता-पिताने उसकी उतरी हुई शक्लको लक्ष्य कर लिया। वे बार-बार पूछने लगे—"मेरियो, तुम्हारा क्या हाल है, क्या कुछ तवीयत खराव है? उनके ये प्रेम और चिन्ता-भरे प्रश्न मेरियाके हृदयमें वर्छीसे चुभने लगे। उसने अपनेको प्रसन्नमुख बनानेकी चेष्टा करके उनको चिन्ताओंको शान्त करना चाहा, परन्तु सफल न हो सकी। शाम हो गई। 'आज मैं

अपने माता-पिता और परिवारके साथ अंतिम दिन व्यतीत कर रही हूँ'—यह विचार उसके हृदयको दुखी कर रहा था। उसने चुपचाप हरएक व्यक्ति और घरकी हरएक वस्तुसे मन ही मन विदा ली।

शामका भोजन परोसा गया। मेरियाका हृदय बड़े ज़ोरसे धक-धक कर रहा था। उसने काँपती हुई आवाज़में कहा—'मैं भोजन न करूँगी', और माता-पिताको सन्ध्याका प्रणाम किया। उन्होंने उसका चुम्बन करके प्रतिदिनकी भांति आशीर्वाद दिया। मेरिया प्रायः रो पड़ी।

अपने सोनेवाले कमरेमें पहुँचकर वह एक आरामकुर्सीपर गिर पड़ी और फूट-फूटकर रोने लगी। उसकी नौकरानीने उसे समझाया—'शान्त हो, हिम्मत करो। सब समान तैयार है।' आध घंटेमें मेरिया अपने माता-पिताका घर, अपना कमरा, अपना शान्तिपूर्ण बाल्य-जीवन—सभीको सदाके लिए छोड़ देगी।

बाहर बर्फ पड़ रही थी और जोरकी हवा चल रही थी। दरवाज़े और खिड़कियां हवासे खड़खड़ा रही थीं। मेरियाको हर चीज़में अपशकुन और डर मालूम पड़ रहा था।

थोड़ी ही देरमें सब सो गये, घरमें सन्नाटा छा गया। मेरियाने अच्छी तरह शाल ओढ़कर ऊपरसे एक गर्म लबादा पहन लिया और हाथमें एक बक्स लेकर पिछले जीनेकी ओर निकल गई। नौकरानी उसके पीछे दो बंडल ले आई। दोनों उतरकर बाग़में पहुँची। बर्फका तूफान ज़ोरोंपर था। उनके सामनेकी ओरसे बड़े ज़ोरकी हवा चल रही थी, मानो वह इस छोटी अपराधिनको रोकनेकी कोशिश कर रही हो। कठिनाईका सामना करती हुई वे दोनों बाग़के सिरेपर पहुँची। सड़कपर 'स्ले' उनकी राह देख रही थी।

सर्दीके मारे घोड़े चुपचाप खड़े न होते थे। व्लाडीमीरका कोचवान उनके सामने इधर से उधर टहल रहा था, और उन्हें शान्त रखनेकी कोशिश कर रहा था। उसने नवयुवती मेरिया और उसकी नौकरानीको सहारा देकर अपनी-अपनी जगहपर बिठाया और उनके श्रृङ्गारदान तथा असबावको ठीक-ठिकाने रखकर घोड़ोंकी रास सम्हाली। रात्रिके घने अन्धकारमें घोड़े उड़ चले।

[२]

मेरियाको कोचवान और उसके भाग्यके सुपुर्द करके, आइये, ज़रा उसके युवक प्रेमीकी खबर लें।

व्लाडीमीरको सारा दिन 'स्ले' पर घूमते बीता। सवेरे वह जैड्रिनो ग्रामके पादरीके पास गया। वहाँ बड़ी मुश्किलसे उसने उससे सब बातें तय कीं। इसके पश्चात् वह पास-पड़ोसके भले आदमियोंमें गवाह ढूँढ़नेके लिए चला। * सबसे पहले वह जिस आदमीके पास गया, उसका नाम ड्रेविन था। वह पहले घुड़सवारोंमें झंडाबरदार था। उसकी उम्र चालीस पैंतालीस वर्षकी थी, वह फौरन ही राज़ी हो गया। उसने ज़िद करके व्लाडीमीरको दोपहरके भोजनके लिए ठहराया और इस बातका विश्वास दिलाया कि अन्य दो गवाहोंके मिलनेमें जरा भी दिक्कत न होगी। बात भी कुछ ऐसी ही हुई। भोजनके उपरान्त ड्रेविनके यहाँ दो और आदमी आ

* रूसमें विधिवत विवाहके लिये तीन गवाहोंकी आवश्यकता होती है, जिनके सामने पादरी मन्त्र पढ़कर विवाहकी क्रिया सम्पन्न करता है।

गये। उनमें से एक श्मिट नामी सर्वेयर था। उसकी मूँछे बड़ी-बड़ी थीं और वह महमेज़ पहने हुए था। दूसरा एक मैजिस्ट्रेटका लड़का था। उसकी उम्र सोलह वर्षकी थी और वह कुछ ही दिन पहले उलहन फ़ौजमें भरती हुआ था। वे दोनों व्लाडीमीरका प्रस्ताव सुनकर केवल राज़ी ही नहीं हो गये, बल्कि इस बातका भी दम भरने लगे कि मौक़ा पड़नेपर वे उसके लिए जान देनेको भी तैयार हैं। व्लाडीमीरने प्रसन्नतासे उन्हें गला लगा लिया और 'स्ले' पर सवार होकर सब ठीक-ठाक करनेके लिए चल दिया।

अंधेरा हुए देर हो चुकी थी। व्लाडीमीरने अपने विश्वासपात्र कोचवानको जरूरतके अनुसार समझा बुझाकर दो घोड़ेवाली 'स्ले' के साथ मेरिया के बागकी ओर रवाना किया। अपने लिए उसने एक घोड़ेवाली 'स्ले' तैयार कराई और उसपर अकेला, बिना कोचवानके, जैड्रिनोके लिए चल पड़ा। मेरिया कोई दो घंटेमें जैड्रिनो पहुंचेगी। वह जैड्रिनोका रास्ता जानता ही था। उसे अपनी 'स्ले' पर वहां तक पहुंचनेमें बीस मिनट लगेंगे।

व्लाडीमीर फाटकसे बाहर निकलकर मुश्किलसे खुले मैदानमें पहुंचा था कि हवा उठ खड़ी हुई, और फौरन ही बर्फका ऐसे जोरका अन्धड़ चलने लगा कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। एक ही क्षणमें सड़क और मैदान बर्फसे पट गये। सड़कके तमाम निशान उस पीले अन्धकारमें, एक-एक करके गायब हो गये। मैदानसे व्लाडीमीरने सड़कपर पहुंचनेकी कोशिश की, मगर व्यर्थ हुई। घोड़ा अनिश्चित मार्गमें भटकता इधरसे उधर चलने लगा। एक क्षण वह बर्फपर पैर धरता तो दूसरा क्षण गाड़ीकी लीकके गढ़ेमें जा पड़ता, इसलिए पग-पगपर 'स्ले' उलट जाती थी। व्लाडीमीरने इस बातकी कोशिशकी कि कम-से कम वह ठीक दिशामें रहे। मगर उसे

यह जान पड़ा कि आध घंटेसे अधिक हो गया है, और वह अभी तक जैड्रिनो के जंगल तक भी नहीं पहुंचा। दस मिनट और गुजर गये, फिर भी जंगलका कहीं पता नहीं था। व्लाडीमीरकी 'स्ले' मैदानोंसे होकर जा रही थी, जिसमें जगह जगहपर खाइयां थीं। न वर्फका तूफान ही बन्द हुआ और न आस्मान ही साफ हुआ। चलते-चलते घोड़ा भी एक दम थक गया यद्यपि घोड़ेके पैर प्रति क्षण वर्फमें घूस रहे थे, फिर भी उसके वदनसे पसीना मेहकी तरह वरस रहा था।

अंतमें व्लाडीमीरको मालूम हुआ कि वह गलत दिशामें जा रहा है। वह रुका, गौर करके सोचने लगा, रास्ता याद करनेकी कोशिश की और सोच-विचारके बाद अन्तमें उसे यह निश्चय हुआ कि उसे दाहिनी ओर मुड़ना चाहिए था। खैर, अब वह दाहिनी ओर मुड़ा। उसका घोड़ा ऐसा थक गया था कि अब वह मुश्किलसे 'स्ले' को घसीट पाता था, लेकिन उसे घरसे निकले एक घंटेसे अधिक हो चुका है, इसलिए जैड्रिनो अब ज्यादा दूर न होगा। वह चलता गया, फिरभी मैदानका ओर-छोर न मिला। अब तक वर्फ गिर रही थी और खाइयां मिलती जाती थीं, प्रतिक्षण 'स्ले' उलट जाती थी और प्रतिक्षण व्लाडीमीरको उसे उठाकर सीधा करना पड़ता था।

समय बीतता जा रहा था। अब तो व्लाडीमीरको गहरी चिन्ता हुई। अन्तमें दूरपर कुछ काला-काला सा दिखाई पड़ा।

व्लाडीमीर उसी ओर मुड़ा और पहुंचनेपर उसे मालूम हुआ कि वह जंगल है।

"ईश्वरको धन्यवाद है, अब मैं मंजिलके करीब पहुंच गया" उसने—अपने मनमें कहा।

वह शीघ्र ही सड़कपर जा पहुंचा और जंगलके—जो जाड़ेके कारण, पत्तोंके बिना, नंगा हो रहा था—अँधेरेमें घुसा। यहां हवाका उतना जोर नहीं था, सड़क भी अच्छी हमवार थी, घोड़ेने भी थोड़ी हिम्मत बांधी और इससे ब्लाडीमीरको भी कुछ ढाढ़स हुआ।

वह चलता गया, किन्तु फिर भी जैड्रिनोंका कहीं पता न था। वह जंगल ही खतम न होने आता था। उसे मालूम हुआ कि वह किसी अज्ञात जंगलमें जा पहुंचा है। यह समझते ही उसका हृदय दहल उठा। उसने घोड़ेको चाबुक लगाया। बेचारा जानवर तेजीसे दुलकी जाने लगा, परन्तु भला इतनी मेहनतके बाद यह कब सम्भव था? वह जलद ही थक गया और ब्लाडीमीरके लाख कोशिश करनेपर भी, पन्द्रह मिनट बाद, फिर वही रेंग-रेंगकर चलने लगा।

धीरे-धीरे पेड़ कम होने लगे और ब्लाडीमीर जंगलके बाहर जा पहुंचा; मगर जैड्रिनो कहीं नजर न आया। प्रायः आधी रात बीत गई होगी। नवयुवककी आंखोंसे आंसू निकलने लगे। वह अनश्चित रूपसे जिधर हुआ, उसी ओरको घोड़ा हांकने लगा। अब तूफान थम गया, बादल छँट गये, सामने फैले हुए मैदानमें बर्फकी चांदनी बिछी थी। पहलेकी अपेक्षा अब रात भी साफ हो गई थी। उसने देखा कि थोड़ी दूरपर पाँच सात झोंपड़ों का एक गाँव है। ब्लाडीमीर उसी ओरको हाँकने लगा। पहले ही दरवाजेपर पहुंचकर वह 'स्ले' से कूद पड़ा और दौड़कर खिड़की खटखटाई।

कुछ मिनट बाद खिड़कीका एक पल्ला खुला, एक बुढ़ेने अपनी सफेद दाढ़ी निकालकर पूछा।

"क्या चाहते हो?"

"यहांसे जैड्रिनो कितनी दूर है ?"

"यहांसे जैड्रिनो कितनी दूर है ?"

"हां, हां। क्या वह यहांसे दूर है ?"

"नहीं, दूर तो नहीं है, दस मील होगा।"

यह उत्तर सुनकर व्लाडोमीरने अपने सरके बाल नोच लिये। वह वहीं इस प्रकार एकटक निश्चल होकर रह गया, मानो उसे मौतकी सज़ाका हुक्म सुनाया गया हो।

"तुम कहांसे आ रहे हो ?"— बूढ़ेने पूछा। व्लाडोमीरमें उत्तर देने की हिम्मत ही न थी।

उसने कहा—"भाई, तुम मेरे लिए जैड्रिनो जानेके लिए घोड़ोंका बन्दोबस्त कर सकते हो ?"

"हमारे घरमें घोड़े नहीं हैं।"—किसानने उत्तर दिया।

"क्या कोई आदमी रास्ता दिखानेके लिए दे सकते हो ? मैं उसे मुंहमांगी मज़दूरी दूँगा।"

"ठहरो, मैं अपने लड़केको तुम्हारे साथ किये देता हूँ, वह तुम्हें पहुँचा आवेगा।"—यह कहकर बूढ़ेने पल्ला बन्द कर दिया।

व्लाडोमीर ठहरा रहा। मुश्किलसे एक मिनट बीता होगा, उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया। पल्ला खुला, और फिर दाढ़ी दिखाई पड़ी।

"क्या चाहते हो ?"

"तुम्हारे लड़केका क्या हुआ ?"

"वह अभी आ रहा है, जूते पहन रहा है। तुम्हें सर्दी लगती होगी, भीतर आकर ज़रा गरमा लो।"

"धन्यवाद, इसकी ज़रूरत नहीं है। अपने बेटेको फौरन भेजो।"

दरवाज़ेकी चूँ-चूँ सुनाई दी और एक नौजवान डंडा लिये बाहर निकला। वह आगे-आगे चला। कभी वह हाथसे सड़क दिखाता और फिर दूसरे क्षण बर्फमें सड़क खोजने लगता।

"कै बजा होगा?"—व्लाडीमीरने पूछा।

"बस, सवेरा होनेमें थोड़ी ही देर है।"—नौजवानने उत्तर दिया। व्लाडीमीरके मुँहसे फिर दूसरा शब्द न निकला।

जब वे जैड्रिनो पहुँचे, तब सवेरा हो गया था; मुर्गे बोल रहे थे। गिरजाघरका फाटक बन्द था। व्लाडीमीरने पथप्रदर्शकको दाम देकर विदा किया और 'स्ले' लिये हुए सीधे पादरीके घरके बाहरी आँगनमें जा पहुँचा। आँगनमें उसको दो घोड़ोंवाली 'स्ले' कहीं न दिखाई पड़ी। यहाँपर उसके भाग्यमें क्या समाचार सुनने बदे थे!

[३]

अच्छा, अब ज़रा चलकर नेनाराडोवाके जमींदारोंकी दशा देखिये। उनके घरमें क्या हो रहा है?

कुछ नहीं।

बूढ़े-बुढ़िया—मेरियाके माता-पिता—अपने समयपर सोकर उठे और बैठकखानेमें जाकर बैठे। गैब्रिल फलालैनकी जाकेट पहने हुआ था, मेरियाकी माता ड्रेसिंग गाउन पहने थी। चायकी केतली सामने आई। गैब्रिलने नौकरानीको यह देखनेके लिये भेजा कि मेरियाकी तबियत अब कैसी

है और रातमें नींद कैसी आई। नौकरानीने आकर खबर दी कि छोटी मालिकिनको रातमें नींद अच्छी तरह नहीं आई, पर इस समय वे अच्छी हैं और अभी क्षण-भर बाद बैठकमें आती हैं। उसी क्षण दरवाज़ा खुला और मेरियाने आकर अपने माता-पिताको प्रणाम किया।

"मेरिया, अब तुम्हारा सिरका दर्द कैसा है?"—बापने पूछा।

"अच्छा है, पिताजी।"—मेरियाने उत्तर दिया।

"अंगीठीका धुआं लगनेसे तुम्हारे सिरमें दर्द हो गया होगा।"—माताने कहा।

"शायद यही हुआ हो।"—मेरियाने कहा।

दिन-भर अच्छी तरह बीता, शामको मेरिया बीमार पड़ गई। दूसरे दिन शहरसे डाक्टर बुलाया गया। उसने शामको आकर देखा कि मरीज़ सरसाममें जकड़ गया है। थोड़ी देरमें उसे बड़े ज़ोरका बुखार चढ़ आया और पन्द्रह दिनसे वह मौतके किनारे जा पहुँची।

घरके किसी आदमीको भी उस रातको चुपकेसे भागनेकी घटना नहीं मालूम थी। मेरियाने जो चिट्ठियां लिखी थीं, उन्हें उसने जला डाला था। मालिक-मालिकिनके क्रोधके डरसे मेरियाकी नौकरानीने उस घटनाके सम्बन्धमें किसीसे एक शब्द भी नहीं कहा। पादड़ी, झंडाबरदार, बड़ी मूंछवाला सर्वेयर और मैजिस्ट्रेटका लड़का—इन सबने भी बुद्धिमानी की, अपना मुँह बन्द रखा। उनके लिए मुँह बन्द रखनेका कुछ विशेष कारण भी था। इस प्रकार यह भेद ऐसा गुप्त रहा, जैसा आधे दर्जन षड्यन्त्रकारी भी नहीं रख सकते।

मगर उस लम्बी बीमारीमें—सरसामकी दशामें—स्वयं मेरियाने उस

गुप्त रहस्यकी सब बातें प्रकट कर दीं। परन्तु उसके शब्द और बातें इतनी असम्बद्ध और निरर्थकसी थीं कि मेरियाकी माता—जो एक क्षणके लिए भी उसके सिरहानेसे न हटती थी—केवल इतना ही जान सकी कि उसकी लड़की बड़ी बुरी तरह व्लाडीमीरके प्रेमसे फँसी है, और शायद वह प्रेम ही इस बीमारीका कारण है। उसने इस सम्बन्धमें अपने पति तथा अन्य दो-एक पड़ोसियोंसे सलाह की, और अन्तमें सबने एक मतसे यह निश्चय किया कि उन्हें मेरियाके भाग्यमें हस्तक्षेप न करना चाहिए। जिस स्त्रीके भाग्यमें जो पति बदा है, उससे उसे अलग करनेकी चेष्टा करना व्यर्थ है। फिर गरीबी कोई अपराध तो नहीं है। स्त्रीको पतिके साथ रहना है, न कि पैसेके साथ, इत्यादि। इसी तरह अन्य बहुत-सी बातें कहीं गईं। जब हम अपनी बातोंके औचित्यके पक्षमें कोई नई बात नहीं निकाल सकते, उस समय इस प्रकारकी नैतिक कहावतें कैसी उपयोगी होती हैं।

इसी बीचमें मेरियाकी दशा सुधरने लगी। व्लाडीमीरके साथ आरम्भ ही में मेरियाके पिताने जो व्यवहार किया था, उससे वह इतना डर गया था कि फिर वह कभी ग्रैविलके घरमें नहीं दिखाई दिया। अब यह निश्चय किया गया कि व्लाडीमीरको बुलाकर यह आनन्ददायक समाचार सुनाया जाय—जिसकी उसे रत्ती-भर आशा नहीं—कि मेरियाके माता-पिता उसके साथ मेरियाका सम्बन्ध करनेको राज़ी हैं।

परन्तु मेरियाके माता-पिताको इस बातसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनके निमन्त्रणके जवाबमें व्लाडीमीरने पागलोंका-सा ऊटपटांग उत्तर भिजवाया। उसने कहलवाया—"मैं कभी आपके घर पैर नहीं रख सकता। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप मुझ अभागेकी बात भूल जायं। अब तो मेरी एकमात्र

आशा मृत्युमें है।" इसके दो ही चार दिन बाद उन्होंने सुना कि ब्लाडीमीर गांव छोड़कर चला गया और फिर फ़ौजमें भर्ती हो गया।

धीरे-धीरे मेरिया अच्छी होने लगी। बहुत दिन बीतनेपर भी घर-वालोंकी यह हिम्मत न हुई कि उसे ब्लाडीमीरकी बात बतावें। उसने कभी ब्लाडीमीरके नामका ज़िक्र नहीं किया। कई महीने बाद उसने यह समाचार पढ़ा कि ब्लाडीमीरने एक लड़ाईमें बड़ी वीरता दिखलाई और बुरी तरह घायल हुआ। इस खबरको पढ़कर वह बेहोश हो गई, और इस बातका डर होने लगा कि कहीं फिर वह बुखार लौट न आवे; पर ईश्वरको धन्यवाद है, बेहोशीका दौरा शीघ्र ही ठीक हो गया और कोई बुरा परिणाम न हुआ।

मेरियाको एक और दुःख सहना पड़ा। उसके पिताकी मृत्यु हो गई, और वह उनकी समस्त धन सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी हुई; परन्तु इस उत्तराधिकारसे भी उसे किसी प्रकारकी सान्त्वना न मिल सकी। उसने सच्चे हृदयसे अपनी माके दुःखमें हाथ बंटाया और इस बातकी प्रतिज्ञा की कि वह अपनी माको छोड़कर कहीं न जायगी।

इस सम्पत्तिशालिनी सुन्दरीके चारों ओर विवाहेच्छु युवकोंकी टोली मंडराने लगी, मगर उसने किसीको रत्ती-भर भी आशा न दी। कभी-कभी उसकी माता उसे यह समझानेकी चेष्टा करती कि अब किसी पुरुषको अपने जीवनका साथी चुन लेना चाहिए, मगर मेरिया सिर हिलाकर चुप हो जाती और विचार-सागरमें डूब जाती।

ब्लाडीमीर अब जीवित न था। वह मास्कोमें फ्रेंच-सेनाके आनेके एक दिन पहले मर गया था। मेरिया उसकी स्मृतिको, पवित्रतासे अपने

हृदयमें सुरक्षित रखती थी। प्रत्येक चीजको, जो उसे ब्लादीमीरका स्मरण दिलाती थी; जैसे ब्लादीमीरकी पढ़ी हुई पुस्तकें, उसकी बनाई हुई ड्राइंग, उसकी नक़ल की हुई कविताओं आदिको वह बड़ी हिफ़ाज़तसे सहेज-सहेजकर रखती थी।

पड़ोसी लोग जो इन बातोंको सुनते थे, उसकी स्थिरतापर आश्चर्य करते थे। वे कहा करते थे—देखें कौनसा भाग्यवान नायक अन्तमें इस कुमारीके हृदयपर विजय पाता है?

इसी बीचमें युद्ध समाप्त हो गया था। * विदेशोंसे रूसी फ़ौजें विजय प्राप्त करके स्वदेशको लौट रही थीं। लोग प्रसन्नतासे दौड़-दौड़कर सैनिकोंका स्वागत करते थे। रेजीमेन्टोंके बाजोंमें कड़खोंकी ध्वनि और विजयके उल्लास-भरे गीत गूंजते थे। अफ़सर लोग, जो लड़ाईपर जानेसे पूर्व निरे छोकरे-से थे, अब जाड़ेकी स्वास्थ्यप्रद वायुसे परिपुष्ट होकर और लड़ाईमें अनेकों पदक और सम्मान प्राप्त करके हट्टे-कट्टे जवानोंके रूपमें लौट रहे थे। सैनिक लोग प्रसन्नतासे एक दूसरेसे बातचीत करते थे, परन्तु उनकी भाषामें बात-बातमें फ्रेंच और जर्मन शब्द मिश्रित दिखाई देते थे। वह विजय, प्रसन्नता और उल्लासका समय था! भला उसे कोई कैसे भूल सकता था? 'स्वदेशकी जय' इन शब्दोंपर रूसियोंका हृदय कैसा उछलने लगता था! बिछुड़े हुए सैनिकोंके मिलन-अश्रु कैसे मधुर थे! एक ओरसे दूसरी ओर तक राष्ट्रीय गर्व और ज़ारके प्रति प्रेमके भाव छलक रहे थे। और ज़ारके लिए तो वह क्षण कैसा सुखदाई था!

उन दिनों महिलाएं—हमारी रूसी महिलाएं—बड़ी शानदार दिखाई

---

* सन् १८१२ में रूसियोंसे फ्रांस और टर्कीसे युद्ध हुआ था।

देती थीं। उनकी स्वाभाविक उदासीनता दूर हो गई थी। उनकी प्रसन्नता सचमुच उन्मादकारी थी। वे विजयी सैनिकोंको देखकर प्रसन्नतासे जय-जयकार करती थीं और सैनिकगण बदलेमें खुशीसे अपनी टोपियां उछालते थे।

उस ज़मानेमें अफ़सरोंमें कौन ऐसा था, जो यह न मानता हो कि उसे विजयका जो सबसे मूल्यवान इनाम मिला है, उसके लिए वह किसी-न-किसी रमणीका आभारी नहीं है? इस आनन्दोत्सवके समय मेरिया अपने गांवमें माताके साथ एकान्तमें रहती थी। उन मा-बेटियोंमें कोई भी शहरके जल्से-तमाशे देखने नहीं गई। मगर देहातों और गांवोंमें यह आनन्द और उत्साह शायद और भी ज्यादा था। इन स्थानोंमें किसी अफ़सरका पहुँच जाना उसके लिए विजय-यात्राके समान था। उसीकी हर जगह पूछ थी। उन दिनों युवतियोंमें स्वीकृत प्रेमियोंकी भी, यदि फ़ौजीपोशाकमें न होते थे, कोई पूछ न थी। हम पहले ही कह चुके हैं कि विवाहके प्रति बिलकुल उदासीनता दिखानेपर भी अनेकों विवाहेच्छु युवक मेरियाको घेरे रहते थे। परन्तु जब वहांपर हुसारसफ़ौजका कप्तान बौरमिन आया, तब इन सब युवकोंको दुम दबा कर हट जाना पड़ा। बौरमिन लड़ाईमें जख्मी हुआ था, और उसने सेंट जार्जके पदकका सम्मान प्राप्त किया था। उसके चेहरेपर एक आकर्षक पीलिमा-सी थी। उसकी उम्र २६ वर्षकी थी। वह छुट्टी लेकर अपनी जमींदारीपर आया था, जो मेरियाके बँगलेके पास ही थी। मेरिया भी उस-पर इतना ध्यान देने लगी, जितना उसने और किसीपर भी नहीं दिया। बौरमिनकी उपस्थितिमें उसकी स्वाभाविक उदासी जाती रहती थी।

बौरमिन सचमुच बहुत ही सौम्य नवयुवक था। उसके व्यवहार-वर्तावमें

कुछ ऐसी मनोहरता थी, जो स्त्रियोंको बहुत रुचिकर प्रतीत होती थी। वह जानता था कि कौन बात कहना उचित है और क्या सुन्दर लगेगा। उसमें बनावटी आडम्बर नहीं था, और वह एक अजीब लापरवाहीसे हँसता था। मेरियाके प्रति उसका व्यवहार सरल और स्वाभाविक था, वह बहुत ही शान्त और विनम्र स्वभावका मालूम होता था। नगरमें यह अफ़वाह मशहूर थी कि किसी समय वह बड़ा उपद्रवी था, परन्तु इस अफ़वाहसे उसके प्रति मेरिया के विचारोंमें कोई अन्तर न पड़ा। क्योंकि सभी युवती स्त्रियां नवयुवकोंके भावुकता-भरे दुस्साहिक उपद्रवोंको प्रसन्नतासे क्षमा कर देती हैं।

बौरमिनका प्रेम-प्रदर्शन, उसकी हृदयहारी बातचीत, उसकी आकर्षक पीलिमा और उसका पट्टी बँधा हुआ जख्मी हाथ आदि आकर्षक बातोंकी अपेक्षा उसके मौनने मेरियाके कल्पना-जगतमें कहीं अधिक कौतूहल उत्पन्न कर दिया। वह अपने मनमें स्वीकार करने लगी कि बौरमिन उसे बड़ा भला लगता है। दूसरी ओर बौरमिनने भी शायद अपनी प्रखर बुद्धि और अनुभवसे यह देख लिया कि मेरियाके हृदयमें उसके प्रति अनुराग है, लेकिन एक बात समझमें न आती थी कि इतना सब होनेपर बौरमिनको उसके आगे घुटने टेककर प्रेमकी प्रार्थना करनी चाहिए थी; परन्तु अब तक उसने अपने मुँहसे एक शब्द भी नहीं कहा था। क्या मेरियाने उसे कोमलता दिखाकर प्रोत्साहित नहीं किया? क्या बौरमिनके मनमें कोई रहस्य है?

अन्तमें बौरमिन ऐसे गहरे विचारमें निमग्न हो गया और मेरियाको देखकर उसकी आंखोंसे ऐसी ज्योति निकलने लगी, जिससे यह प्रत्यक्ष जान पड़ने लगा कि वह क्षण अब दूर नहीं है, जब वह खुल्लमखुल्ला मेरियाको अपना हृदय समर्पित कर देगा। पड़ोसी आपसमें कानाफूसी करने लगे कि अब

मेरियाका विवाह बिलकुल निश्चित बात है। उधर मेरियाकी माताको भी इस बातकी प्रसन्नता थी कि अन्तमें उसकी कन्याको उपयुक्त वर प्राप्त हो गया। मेरियाकी माँ बैठकखानेमें बैठी हुई मेज़पर ताश बिछा रही थी। उसी क्षण बौरमिनने कमरेमें प्रवेश किया और पूछा—"मेरिया कहाँ है?"

"वह बाग़में है। वहीं चले जाओ। मैं अभी थोड़ी देर यहीं रहूंगी।"—वृद्धाने उत्तर दिया। उसने मन-ही मन हाथ जोड़कर कहा—"ईश्वर चाहेगा तो आज इन दोनोंका सम्बन्ध निश्चित हो जायगा।"

बौरमिनने देखा कि मेरिया तालाबके किनारे एक लतामण्डपमें बैठी किताब पढ़ रही है। वह सफेद पोशाक पहने थी और दूरसे किसी कल्पना-शील कहानीकी नायिका-सी प्रतीत होती थी आरम्भमें दो-एक बातोंकी पूछा-ताछके बाद मेरियाने जान-बूझकर बातचीत बन्द कर दी। इस मौनने उन्हें एक विचित्र परेशानीमें डाल दिया, इससे निकलनेका एक ही उपाय था कि बौरमिन एक बार ही प्रेमका प्रस्ताव उपस्थित कर दे। हुआ भी वही। बौरमिनने कहा—

"मैं बहुत दिनोंसे इस बातका मौक़ा ढूँढ़ रहा था कि आपसे अपने मनकी बात कहूं। क्या आप एक क्षणके लिए इधर ध्यान देंगी?"

मेरियाने किताब बन्द करके आँखें नीची कर लीं, मानो वह उसकी बात सुननेको तैयार है।

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं। समस्त हृदयसे प्यार करता हूं।"—बौर-मिनने कहा। मेरियाका मुंह लाल हो गया, उसका सिर और भी नीचा हो गया।

"मैंने बड़ी ग़लती की, जो रोज़ तुमसे मिलता रहा और तुम्हारे हृदयकी

गिरजेकी ओर हाँकनेको कहा। उसने आगे बढ़कर मुझसे कहा—"तुम रह कहाँ गये थे? वधू बेहोश हो गई है, पादरी बेचारे किं-कर्तव्य-विमूढ़ हो रहे हैं कि क्या करें। हम लोग भी बस जाने ही वाले थे। जल्दी करो, आओ।"

"मैंने चुपचाप 'स्ले' से उतरकर गिरजेमें प्रवेश किया। गिरजेमें दो-तीन पतली मोमबत्तियोंसे बढ़ी धुंधली-सी रोशनी हो रही थी। एक अँधेरे कोनेमें बेंचपर एक लड़की बैठी थी। एक दूसरी औरत उस लड़कीकी कनपटी सहला रही थी। वह दूसरी औरत बोली—"ईश्वरको धन्यवाद है कि तुम आ गये। तुमने तो इस बेचारीकी जान ही ले ली थी।"

"बुड्ढे पादरीने मेरे पास आकर कहा—'तो मैं शुरू करूं?' मैं बिना कुछ सोचे-समझे अन्यमनस्क भावसे बोल उठा—'हाँ, हाँ, शुरू कीजिये।'

"वह नवयुवती पकड़कर खड़ी की गई। मैंने देखा कि वह सुन्दरी थी। उफ़! उस वक्त मैंने ऐसा मूर्खतापूर्ण चिलबिलापन किया, जिसका प्रतिकार असम्भव है। मैं वेदीके सामने उस युवतीकी बगलमें जा खड़ा हुआ। पादरी जल्दी-जल्दी मन्त्र पढ़ने लगा। तीनों गवाह और वह औरत—नौकरानी.... उस युवतीको पकड़े हुए थे। उन सबका सारा ध्यान उसकी ओर था। बस, हमारा विवाह हो गया!

पादरीने कहा—'अपनी स्त्रीका चुम्बन करो।'

"मेरी स्त्रीने अपना पीला चेहरा मेरी ओर घुमाया। मैं उसे चुम्बन करने ही वाला था कि वह चीख उठी—'ओह! ये वे नहीं हैं, वे नहीं हैं!' यह कहकर वह बेहोश होकर गिर पड़ी। गवाह मेरी ओर घूर-घूरकर

देखने लगे। मैं घूम पड़ा और गिरजेके बाहर निकल गया। किसीने मुझे रोकनेकी कोशिश भी नहीं की। मैं जाकर अपनी 'स्ले' में गिर पड़ा और कोचवानसे चिल्लाकर बोला—'हांको!'"

मेरियाने कहा—"ऍं! तुम्हें यह भी पता नहीं कि तुम्हारी उस अभागी स्त्रीका फिर क्या हुआ?"

"नहीं"—बौरमिनने कहा—"न तो मुझे उस गाँवका नाम ही माल"

है, जिसमें मेरा विवाह हुआ था, और न उस चौकीका ही नाम मा ...रको दे

जहांसे मैं चला था। उस समय मैंने ...एक भोजनकी मेज़पर ...ठकर परोसने-

भर भी ख्याल ...ती है। तूफ़ानमें व... मुझे बहुत समय लगा था। आज ये

गया और सवेरे बचनेके लिए मुश्कि... ...ान पड़ती हैं। एक पुरानी कहावत है कि

जो नौकर मेरे एक फ़ौजी आता ... है।' यदि इस कहावतके स्थानमें यह कह

आशा भी नहीं टट्टू, जिनमें हरकार... मानका आदर करता है' तो क्या दशा हो?

साथ मैंने ऐसा एक वार 'धन्यवाद' क... ...गे और नौकर चाकर पहले किसकी फ़िक्र

का क्रूरतापूर्ण सुनाई देती है। एक श... पोस्ट-

"हे ईश्वहुक्म पटक देता है। ...से तीन मील इधर ही मेहकी पहुँचाने

तुम्हीं थे! औलोग इन सब बातोंपर गौर व... ...सलधार बारिश होने लगी। ...ते मांगी।

बौरमिन... ...ने सबसे पहले, जितनी ज...नके व्यापारको

-आफ़िस बने हुए थे, जहां ...

...ास्टरका काम यह था कि ...तैयार करनेका हुक्म दिय... प्रदान किया है,

...सरोंके लिए—घोड़ों और सवा... ...कारकर कहा—"केतली! और चुम्बनको

...आफ़िसमें घोड़े और सवारियोंकी"

...मी-कभी यात्रियोंको सवारीके ...वर्षकी एक लड़की प... उसी सड़क और

...ो उनके खाने-पीने और ठहर...

और मुझसे नम्रतासे बात करता था। महाशय, क्या आप इसपर विश्वास करेंगे कि दरबारी और शाही सन्देशवाहक लगातार आध-आध घंटे तक उससे बातें किया करते थे? वही गृहस्थी चलाती थी, घरकी सफाई करती थी, सब चीजें तैयार करती थी, और मज़ा तो यह था कि इन सभी बातोंके लिए उसे समय मिल जाता था, और मैं बूढ़ा मूर्ख हूँ कि मैंने उसकी काफ़ी क़दर न की, उसकी प्रर्याप्त प्रशंसा न की। क्या मैं अपनी दुन्नीको प्यार न करता था? क्या मैं अपनी बच्चीका दुलार न करता था? क्या उसका जीवन आनन्दमय न था? मगर नहीं, कोई भी व्यक्ति संसारमें मुसीबतसे नहीं बच सकता। जो कुछ बदा है, वह भुगतना ही पड़ता है।"

अब बूढ़ेने अपनी विपत्तियोंका विस्तृत वृत्तान्त बताया। तीन वर्ष हुए, एक दिन जब पोस्ट-मास्टर एक नये रजिस्टरमें लकीरें खींच रहा था और उसकी लड़की पर्देके पीछे एक नया कपड़ा सी रही थी, उस समय दरवाज़ेपर एक शिकरम आकर रुकी। उसमें से एक यात्री सरकेशियन टोपी लगाये, फ़ौजी चोंगा पहने और शाल ओढ़े हुए उतरा और कमरेमें दाखिल होकर उसने घोड़ोंके लिए हुक्म दिया। उस समय सभी घोड़े बाहर थे। यह खबर सुनते ही यात्री अपनी आवाज़ और छड़ी उठानेवाला ही था कि इतनेमें दुन्नी—जो इस प्रकारके दृश्योंकी आदी थी—बाहर निकल आई। उसने आगन्तुकसे नम्रतापूर्वक पूछा कि क्या आप कुछ जलपान करेंगे? दुन्नीकी उपस्थितिका स्वाभाविक प्रभाव पड़ा? यात्रीका क्रोध शान्त हो गया। वह घोड़ोंका इन्तज़ार करनेके लिए राज़ी हो गया, और उसने ब्यालू तैयार करनेके लिए हुक्म दिया। उसने अपनी गीली टोपी डाली, शाल अलग कर दिया, चोगा खोल डाला और उसके भीतरसे

इकहरे वदन और छोटी-छोटी काली मूँछोंवाला हुसार फ़ौजका एक नौजवान अफ़सर निकल आया। वह बेतकल्लुफ़ीके साथ बैठ गया, और हँस-हँसकर पोस्ट-मास्टर और उसकी लड़कीसे बातें करने लगा। व्यालू परोसी गई। इसी बीचमें घोड़े लौट आये। पोस्ट-मास्टरने उन्हें बिना खिलाये-पिलाये ही तैयार करनेका हुक्म दिया, परन्तु जब वह फिर लौटकर कमरेमें आया, तो उसने देखा कि वह नवयुवक एक बेंचपर प्रायः अचेत-सा पड़ा था। उसे एकाएक गश आ गया था, उसके सिरमें बड़ा दर्द था और उस समय उसका आगे जाना असंभव था। अब क्या किया जाय? पोस्ट-मास्टरने उसे अपने पलंगपर लेटाया। यह निश्चय किया गया कि सवेरे तक रोगीकी तबीयत न सम्हले, तो स——स्थानसे डाक्टर बुलाकर दिखलाया जाय।

दूसरे दिन हुसारकी हालत और भी खराब हो गई। उसका नौकर घोड़ेपर शहरमें डाक्टरको बुलाने गया। दुन्नोने उसके सिरमें सिरकेमें तर करके पट्टी बाँधी, और उसके पलंगके पास बैठकर अपना काम करने लगी। पोस्ट-मास्टरके सामने रोगी कराहता था और मुश्किलसे बोलता था, मगर फिर भी उसने काफ़ीके दो प्याले खाली कर दिये, और कराहते ही कराहते भोजन तैयार करनेका हुक्म दिया। दुन्नी एक क्षणके लिए भी उससे अलग न हुई। वह बार-बार पीनेके लिए कुछ-न-कुछ माँगता था। दुन्नी अपने हाथसे बनाये हुए लेमोनेडका गिलास उसके मुँहसे लगा देती थी। रोगी उससे अपने ओंठ तर करता था, और जब गिलास वापस करता, तो कृतज्ञता प्रकाशित करनेके लिए अपने कमज़ोर हाथोंसे दुन्नीका हाथ धीरेसे दबा देता था। दोपहरके बाद डाक्टर आया। उसने रोगीकी नब्ज़ देखी, और जर्मन भाषामें उससे कुछ बातचीत की, फिर रूसी भाषामें कहा—"रोगीको

डाक्टरने उस हुसारको देखा था, उसीने पोस्ट-मास्टरकी दवा की। उसने पोस्ट-मास्टरको विश्वास दिलाया कि हुसार बिलकुल भला-चंगा था। उसे उसके बुरे इरादेका शक हो गया था, मगर उसने डरके मारे नहीं कहा। डाक्टरने जो कुछ कहा, वह सच था, या उसने केवल अपनी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता दिखानेके लिए ही ऐसा कहा—चाहे जो हो, उससे रोगीको किसी प्रकारकी सान्त्वना नहीं मिली। पोस्ट-मास्टर मुश्किलसे बीमारीसे अच्छा हुआ था कि उसने दो मासकी छुट्टीकी दरख्वास्त दे दी, और किसीसे अपना इरादा ज़ाहिर किये बिना ही वह पैदल अपनी लड़कीकी तलाशमें चल पड़ा। उसे अपने कागज़-पत्रोंसे मालूम था कि घुड़सवारोंका कप्तान मिन्स्की सेंट-पीटर्सबर्गको जा रहा है। जो आदमी उनकी गाड़ी हाँककर ले गया था, उसने बताया कि यद्यपि दुन्नी अपनी खुशीसे गई थी, मगर फिर भी वह रास्ते-भर रोती गई। पोस्ट-मास्टरने सोचा—'बहुत सम्भव है कि मैं अपनी खोई हुई लड़कीको पुनः वापस लानेमें समर्थ हो सकूँ।' बस, इसी विचारको लेकर वह सेंट-पीटर्सबर्ग आया। वहाँ वह अपने एक पुराने साथीके यहाँ ठहरा था, और वहांसे उसने खोज शुरू की। उसे शीघ्र ही पता लग गया कि मिन्स्की पीटर्सबर्ग ही में है और डीमथकी सरायमें ठहरा है। पोस्ट-मास्टरने उसके पास जानेका निश्चय किया।

दूसरे दिन तड़के वह उसके दरवाजेपर हाज़िर हुआ, और नौकरसे कहा कि वह हुजूरको इत्तिला कर दे कि एक पुराना सैनिक हुज़ूरसे मिलना चाहता है। फ़ौजी नौकरने बूट साफ़ करते हुए कहा कि उसका मालिक सो रहा और वह ग्यारह बजेसे पहले किसीसे नहीं मिलता। पोस्ट-मास्टर लौट

गया और नियत समयपर फिर आकर उपस्थित हुआ। मिन्स्की एक ड्रेसिंग-गाउन और लाल टोपी पहने हुए स्वयं उससे मिलने आया।

"कहो, क्या चाहते हो?" उसने पूछा।

बूढ़ेका हृदय ज़ोरसे धक-धक करने लगा। उसकी आँखोंमें आँसू भर आये, और वह काँपती हुई आवाज़में केवल इतना ही कह सका—"हुज़ूर, ईश्वरके लिए मुझपर रहम करें।"

मिन्स्कीने तेज़ीसे उसपर एक निगाह डाली, सिर हिलाया और उसका हाथ पकड़कर अपने पढ़नेके कमरेमें ले जाकर उसका दरवाज़ा बन्द कर लिया।

"हुज़ूर!" बूढ़ेने कहा—"जिसका पतन हुआ, वह सत्यानाश हुआ। मेरी दुन्नीको मुझे लौटा दीजिए। आप उसके साथ काफ़ी खेल कर चुके। अब बेकारके लिए उसका जीवन नष्ट न कीजिए।"

नवयुवकने बड़ी गड़बड़ीमें जवाब दिया—"जो हो चुका, वह मिट नहीं सकता। मैं तुम्हारा अपराधी हूँ, और तुमसे क्षमा माँगनेको तैयार हूँ, मगर यह न समझो कि मैं दुन्नीको छोड़ दूँगा। मैं इस बातका वचन देता हूँ कि वह सुखी रहेगी। तुम उसे किस लिए चाहते हो? वह मुझे प्यार करती है: और अब वह उस पुराने ढंगसे रहने की आदी नहीं रही। तुम दोनों ही भूतकालकी बातें न भूल सकोगे।"

यह कहकर उसने बूढ़ेकी आस्तीनमें कोई चीज़ खिसका दी, दरवाज़ा खोला और पोस्ट-मास्टरने अपने-आपको सड़कपर खड़ा पाया उसे यह भी न मालूम हुआ कि वह सड़कपर कैसे आ पहुँचा।

मिन्स्कीको प्रेम-भरी दृष्टिसे देख रही थी और अपनी रत्नभूषित उंगलियोंसे उसके लम्बे बालोंको मरोड़ रही थी। बेचारा पोस्ट-मास्टर! उसने कभी अपनी लड़कीको इतना सुन्दर नहीं देखा था। वह मन-ही-मन उसके सौन्दर्यकी प्रशंसा किये बिना न रह सका। दुन्नीने बिना अपना सिर उठाये, पूछा-"यहां कौन है?" पोस्ट-मास्टर चुपचाप रहा। कुछ उत्तर न पानेपर दुन्नीने सिर उठाकर देखा और चीखकर फ़र्शपर गिर पड़ी। मिन्स्की उसे घबराकर उठानेके लिए दौड़ा, पर पोस्ट-मास्टरको देखकर उसने दुन्नीको छोड़ दिया और गुस्सेसे कांपता हुआ उसकी ओर बढ़ा। उसने दांत पीसकर कहा—"तू क्या चाहता है? मेरा पीछा क्यों कर रहा है? क्या मैं डाकू हूँ? क्या तू खून करना चाहता है? निकल यहांसे!" उसने अपने बलिष्ठ हाथ से बूढ़ेका कालर पकड़ कर सीढ़ीके नीचे ढकेल दिया।

बूढ़ा अपने स्थानको लौट आया। उसके मित्रने सलाह दी कि वह रिपोर्ट कर दे, परन्तु पोस्ट-मास्टरने कुछ देर सोचने के बाद अपना सिर हिलाया और इस मामलेको योंही छोड़ देनेका निश्चय किया। दो दिन बाद उसने सेंट-पीटर्सबर्ग त्याग दिया और वहांसे वह सीधा अपने पोस्ट-आफ़िसको चला आया। यहां आकर उसने पुनः अपना कार्य-भार ग्रहण कर लिया।

"अब यह तीसरा वर्ष है कि मैं बिना दुन्नीके रहता हूँ। तबसे न तो मैंने उसे देखा और न उसके सम्बन्धमें कुछ सुना। ईश्वर जाने वह जिन्दा है, या मर गई। उसपर जो चाहे बीत सकता है। दुन्नी ही पहली या अन्तिम लड़की नहीं है, जिसे दुष्ट राहगीर बहकाकर ले गये हैं। इन बहकाईहुई लड़कियोंको पहले तो खातिर होती है, बादमें वे निकाल बाहर की जाती

हैं। सेंट-पीटर्सबर्गमें इस प्रकारकी मूर्ख नवयुवतियाँ बहुत हैं, जो आज साटन और मखमल पहने घूमती हैं, परन्तु कल ही दरिद्रता और कष्टमें सड़कोंपर झाड़ू लगाती दिखाई देंगी। जब मेरे मनमें यह विचार आता कि दुन्नी भी इसी प्रकार अपनेको बरबाद कर रही है, तब मनमें अनिच्छा-पूर्वक ही पाप उत्पन्न होता है, और मैं चाहता हूँ कि वह क़ब्रमें हो।"

मेरे मित्र पोस्ट-मास्टरकी यह कहानी है। इस कहानीके कहनेमें कई बार उसके आँसुओं ने बाधा डाली,परन्तु उसने उन आँसुओंको अपने कोटके दामनसे पोंछ लिया। इन आँसुओंमें कुछ शराबके कारण हो सकते हैं, जिसके उसने पांच गिलास खाली किए थे। मगर जो कुछ भी हो, उसकी कहानीने मुझपर बड़ा प्रभाव डाला। उससे विदा होनेके बाद भी मैं बहुत दिनों तक पोस्ट मास्टरको न भूल सका और बहुत दिनों तक मैं उसकी दुन्नी को याद करता रहा। हालमें जब मैं………… स्थानसे गुज़रा, तब मुझे फिर अपने मित्रकी याद आई। मुझे मालूम हुआ कि वह पोस्ट-आफ़िस, जिसमें वह था, तोड़ दिया गया है। मेरे यह पूछनेपर कि क्या बूढ़ा पोस्ट-मास्टर ज़िन्दा है; मुझे कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिल सका, अतः मैंने उस सुपरिचित स्थानकी पुनः यात्रा करना निश्चय किया और एक प्राइवेट सवारी लेकर……ग्रामको रवाना हुआ।

पतझड़का मौसम था। पीले-पीले बादल आस्मानपर छाये हुए थे। कटे हुए खेतोंमें ठंडी हवा बह रही थी। लालपीली पत्तियां हवामें बह रही थीं। मैंने सूर्यास्तके समय गांवमें प्रवेश किया और पोस्ट-आफ़िसके दरवाज़ेपर जाकर रुका। एक मोटी बूढ़ी और बरामदेमें (जहां एकबार बेचारी दुन्नीने मेरा चुम्बन लिया था) आई। मेरे प्रश्नपर उसने बताया कि

बूढ़े पोस्ट-मास्टरको मरे एक वर्ष हो गया। अब उस मकानमें एक शराब वाला रहता है और वह उसी शराबवालेकी स्त्री है। मैं अपनी व्यर्थ यात्रा पर और सात रुबलपर, जो मैंने वहाँ जानेमें बेकार खर्च किये थे, अफसोस करने लगा।

"उसकी मृत्यु कैसे हुई?" मैंने शराबवालेकी स्त्रीसे पूछा।

"बहुत शराब पीनेसे।"—उसने जवाब दिया।

"वह गाड़ा कहां गया है?"

"क़ब्रिस्तानमें अपनी स्त्रीकी समाधिके बगलमें।"

"क्या कोई ऐसा है, जो मुझे उसकी क़ब्र दिखला सके?"

"क्यों नहीं? इधर आ ओ वंका, बिल्लियोंको मारना छोड़। देख, इन सज्जनको गिरजाघरके क़ब्रिस्तानमें ले जा और वहाँ पोस्ट-मास्टरकी क़ब्र दिखा दे।"

इन शब्दोंपर फटे पुराने कपड़े पहने, लाल बाल और कानी आंखवाला एक लड़का दौड़कर मेरे पास आया और मेरा पथ-प्रदर्शक बनकर चला।

"क्या तू मृत पोस्ट-मास्टरको जानता था?"—मैंने यों ही पूछा।

"मैं उसे न जानूँगा? उसीने तो मुझे नरकुलकी सीटी बनाना सिखाया था। जब वह शराबखानेसे लौटता था, [ईश्वर उसकी आत्माको शान्ति दे] तब मैं न मालूम कितनी बार चिल्लाया हूंगा—'बाबा, बाबा, बादाम दो।' इसपर वह हम लोगोंपर बादाम फेंकता था। वह हमेशा हम लोगोंके साथ खेलता था।"

"अच्छा, कभी यात्रियोंनें भी उसकी बात पूछी है?"

"अब यात्री ही बहुत कम आते हैं, और जो आते भी हैं वे मुर्दोंको

नहीं पूछते। हाँ, गर्मीमें एक महिला ज़रूर आई थी! उसने पोस्ट-मास्टर को पूछा था और उसकी क़ब्र देखने भी गई थी।"

"कौन महिला थी?"—मैंने कौतूहलसे पूछा।

"बड़ी सुन्दरी महिला थी।" लड़केने जवाब दिया—"वह एक गाड़ीमें चढ़कर आई थी, जिसमें छै घोड़े जुते थे। उसके साथ तीन छोटे लड़के, एक धाय और एक काला चीनी कुत्ता था। जब उससे कहा गया कि बूढ़ा पोस्ट-मास्टर मर गया, तब वह रोने लगी और लड़कोंसे कहा—'तुम लोग यहाँ चुपचाप बैठो, तब तक मैं क़ब्रिस्तान हो आऊँ।' मैं उसे सड़क दिखानेको तय्यार हुआ, परन्तु उस महिलाने कहा—'मैं सड़क अच्छी तरह जानती हूँ।' फिर उसने मुझे पाँच चाँदीकी चवन्नियाँ इनाम दीं—ऐसी महिला थी!"

हम लोग समाधि-स्थानमें पहुँचे। समाधि-स्थान एकदम खुली हुई जगहमें था। उसकी सीमा निर्धारित करनेके लिए किसी प्रकारका कोई चिह्न नहीं था। वहाँ अनेकों लकड़ीके क्रास भरे हुए थे, परन्तु छायाके लिए एक भी पेड़का नाम-निशान तक न था। मैंने अपने जीवनमें ऐसा वियाबान क़ब्रिस्तान कभी नहीं देखा।

"यह पोस्ट-मास्टरकी समाधि है।" लड़केने एक मिट्टीके टीलेपर कूदकर कहा, जिसपर एक काला क्रास और एक तांबेकी मूर्ति खड़ी थी।

"यहींपर वह महिला आई थी?"—मैंने पूछा।

"हाँ"—लड़केने जवाब दिया—"मैं उसे दूरसे देखता था, वह यहाँ आकर गिर पड़ी और बड़ी देर तक यहीं रही। फिर वह गाँवमें गई और पादरीको ढूँढकर उसने उसे कुछ रुपये दिये और गाड़ीमें बैठकर चली गई।

बूढ़े पोस्ट-मास्टरको मरे एक वर्ष हो गया। अब उस मकानमें एक शराब वाला रहता है और वह उसी शराबवालेकी स्त्री है। मैं अपनी व्यर्थ यात्रा पर और सात रुबलपर, जो मैंने वहां जानेमें बेकार खर्च किये थे, अफ़सोस करने लगा।

"उसकी मृत्यु कैसे हुई?" मैंने शराबवालेकी स्त्रीसे पूछा।

"बहुत शराब पीनेसे।"—उसने जवाब दिया।

"वह गाड़ा कहां गया है?"

"क़ब्रिस्तानमें अपनी स्त्रीकी समाधिके बगलमें।"

"क्या कोई ऐसा है, जो मुझे उसकी क़ब्र दिखला सके?"

"क्यों नहीं? इधर आ ओ वंका, बिल्लियोंको मारना छोड़। देख, इन सज्जनको गिरजाघरके क़ब्रिस्तानमें ले जा और वहां पोस्ट-मास्टरकी क़ब्र दिखा दे।"

इन शब्दोंपर फटे पुराने कपड़े पहने, लाल बाल और कानी आंखवाला एक लड़का दौड़कर मेरे पास आया और मेरा पथ-प्रदर्शक बनकर चला।

"क्या तू मृत पोस्ट-मास्टरको जानता था?"—मैंने यों ही पूछा।

"मैं उसे न जानूँगा? उसीने तो मुझे नरकुलकी सीटी बनाना सिखाया था। जब वह शराबखानेसे लौटता था, [ईश्वर उसको आत्माको शान्ति दे] तब मैं न मालूम कितनी बार चिल्लाया हूंगा—'बाबा, बाबा, बादाम दो।' इसपर वह हम लोगोंपर बादाम फेंकता था। वह हमेशा हम लोगोंके साथ खेलता था।"

"अच्छा, कभी यात्रियोंनें भी उसकी बात पूछी है?"

"अब यात्री ही बहुत कम आते हैं, और जो आते भी हैं वे मुर्दोंको

ाहीं पूछते। हाँ, गर्मीमें एक महिला ज़रूर आई थी! उसने पोस्ट-मास्टर को पूछा था और उसकी क़ब्र देखने भी गई थी।"

"कौन महिला थी?"—मैंने कौतूहलसे पूछा।

"बड़ी सुन्दरी महिला थी।" लड़केने जवाब दिया—"वह एक गाड़ीमें चढ़कर आई थी, जिसमें छै घोड़े जुते थे। उसके साथ तीन छोटे लड़के, एक धाय और एक काला चीनी कुत्ता था। जब उससे कहा गया कि बूढ़ा पोस्ट-मास्टर मर गया, तब वह रोने लगी और लड़कोंसे कहा—'तुम लोग यहाँ चुपचाप बैठो, तब तक मैं क़ब्रिस्तान हो आऊँ।' मैं उसे सड़क दिखाने-को तय्यार हुआ, परन्तु उस महिलाने कहा—'मैं सड़क अच्छी तरह जानती हूँ।' फिर उसने मुझे पाँच चाँदीकी चवन्नियाँ इनाम दीं—ऐसी महिला थी।"

हम लोग समाधि-स्थानमें पहुँचे। समाधि-स्थान एकदम खुली हुई जगहमें था। उसकी सीमा निर्धारित करनेके लिए किसी प्रकारका कोई चिह्न नहीं था। वहाँ अनेकों लकड़ीके क्रास भरे हुए थे, परन्तु छायाके लिए एक भी पेड़का नाम-निशान तक न था। मैंने अपने जीवनमें ऐसा विया-बान क़ब्रिस्तान कभी नहीं देखा।

"यह पोस्ट-मास्टरकी समाधि है।" लड़केने एक मिट्टीके टीलेपर कूद-कर कहा, जिसपर एक काला क्रास और एक तांबेकी मूर्ति खड़ी थी।

"यहींपर वह महिला आई थी?"—मैंने पूछा।

"हाँ"—वंकाने जवाब दिया—"मैं उसे दूरसे देखता था, वह यहाँ आकर गिर पड़ी और बड़ी देर तक पड़ी रही। फिर वह गाँवमें गई और पादरीको ढूँढ़कर उसने उसे कुछ रुपये दिये और गाड़ीमें बैठकर चली गई।

उसने मुझे पांच चांदीकी चवन्नियां दी थीं, वह ज़रूर कोई बड़ी भारी महिला थी।"

मैंने भी उस लड़केको पांच चवन्नियां दीं। अब मुझे न तो यहांकी यात्राका और न सात रूबल खर्च करनेका अफ़सोस है।

आइवन तुर्गनेव

(१८१८—१८८३)

तुर्गनेव रूसी गद्य-साहित्यका भीष्म था। उसने अपनी कहानियोंमें रूसी जीवन और रूसकी अवस्थाके अत्यन्त भव्य और विस्तृत चित्र खींचे हैं। जगतके उन महारथियोंमें, जिनकी कृतियाँ केवल एक ही देश या प्रान्तमें परिमित नहीं रहतीं, बल्कि जिनके भाव समुद्रों, वनों और महाद्वीपों-की दूरीको चीरते हुए प्रत्येक सहृदय मनुष्यके अन्तस्तल तक पहुँचनेकी शक्ति रखते हैं—तुर्गनेवकी गणना निस्संकोच की जा सकती है।

तुर्गनेवका बाप फ़ौज़में लेफ्टिनेण्ट था, और माता बड़ी धनाढ्य, हज़ारों एकड़ भूमि और पाँच हज़ार किसानोंको स्वामिनी थी। तुर्गनेवकी माताका स्वभाव अत्यन्त क्रोधी और खराब था। पिताका जीवन भी संयमहीन था। माताकी निष्ठुरता और पिताकी चरित्र-हीनताका प्रभाव तुर्गनेवपर भी पड़ा। तुर्गनेव जीवन-भर अविवाहित रहा, मगर हमेशा किसी न किसीसे उसका प्रणय-सम्बन्ध चलता रहा।

बचपनसे ही उसे बाग़ों और खेतोंपर घूमने तथा प्रकृतिका आनन्द लेने-का शौक़ था। उसके उपन्यासोंमें प्राकृतिक दृश्योंका जो सुन्दर वर्णन है, वह उसके इसी अनुभवका फल है।

तुर्गनेवकी पहली किताब 'एक शिकारीके भ्रमण-वृत्तान्त' में उसने रूसके ग़ुलाम-किसानोंके जीवनका ऐसा करुणाजनक चित्र अंकित किया था, जिसे

पढ़कर रूसियोंका हृदय द्रवित हो उठा। रूससे गुलामीके उठानेमें इस पुस्तकने भी बड़ी सहायता दी थी। स्वयं रूसके ज़ारने इस पुस्तकको पढ़ा था और तुर्गनेवसे कहलाया था कि दासत्व-प्रथाके बन्द करनेमें अन्य कारणोंमें यह पुस्तक भी एक है। 'देहाती डाक्टर' नामक कहानी इसी पुस्तकसे ली गई है।

सन् १८५२ में तुर्गनेवने प्रसिद्ध रूसी लेखक गोगलके स्वर्गवासपर एक लेख छपवाया, जिसपर ज़ारकी सरकारने उसे जेल भेज दिया। इससे तुर्गनेवकी लोकप्रियता बहुत बढ़ गई। इस कारावास-कालमें ही तुर्गनेवने 'मूसू' नामक कहानीकी रचना की थी। अंग्रेज़-लेखक कार्लायलने इस कहानीको संसारकी सबसे करुणाजनक कहानी बतलाया था। इस कहानीमें उसने जिस क्रूर स्वभाववाली स्त्रीका चरित्र अंकित किया है, वह उसकी माताका ही प्रतिबिम्ब है। कलाकी दृष्टिसे तुर्गनेवको सच्चा कलाकार कह सकते हैं।

तुर्गनेवके जीवनके बहुतसे वर्ष विदेशोंमें बीते थे। रूसके अराजकवादियों और क्रान्तिकारियोंमें बहुतोंसे उससे जान-पहचान थी और बहुतोंको उसने सहायता की थी। उसकी एक बड़ी भारी विशेषता यह थी कि वह नवयुवक लेखकोंको बहुत प्रोत्साहन दिया करता था। अपनी मृत्यु-शय्यापर लेटे हुए भी उसने किसी प्रकाशकको एक नवयुवक लेखकके लिए सिफ़ारिशी चिट्ठी लिखी थी। वह साहित्य-सेवियोंकी हर तरहसे सहायता करता था।

मास्को नगरके बाहरकी एक गलीके एक सफ़ेद रंगके मकानमें, जिसके खंभे और बरामदे तिर्छे मुड़े हुए थे, किसी समय एक विधवा स्त्री रहा करती थी। उस स्त्रीकी घर-गृहस्थीका कार्य चलानेके लिए कितने ही दास दासियाँ नियुक्त थीं, जो बराबर उसे घेरे रहती थीं। उसके लड़के पीटर्सवर्गमें सरकारी नौकर थे और लड़कियोंका विवाह हो चुका था। वह अपने घरसे शायद ही कभी बाहर निकला करती थी। उस एकान्त स्थानमें रहकर ही वह अपने दुःखपूर्ण और सुनसान बुढ़ापेके आन्तिम दिन व्यतीत कर रही थी। उसके जीवनके निरानन्द एवं अन्धकारपूर्ण दिन बहुत पहले ही व्यतीत हो चुके थे, किन्तु उसके जीवनका यह अन्तिम भाग तो रात्रिसे भी बढ़कर अन्धकार-पूर्ण था।

उसके नौकरोंमें जिरेसिम दरबान ही सबसे बढ़कर उल्लेखनीय व्यक्ति था। साधारण मनुष्योंकी ऊँचाईसे उसकी ऊँचाई बारह इंच अधिक थी, उसके शरीरकी गठन एक वीर पुरुष जैसी थी और वह जन्मसे गूँगा और बहरा था। उसकी स्वामिनी उसे देहातके एक गाँवसे लाई थी, जहाँ वह एक छोटी झोंपड़ीमें अपने भाइयोंसे अलग अकेले रहा करता था, और उस स्त्रीकी रैयतोंमें लगानका बकाया चुकानेमें सबसे बढ़कर नियमित समझा जाता था। असाधारण शक्ति-सम्पन्न होनेके कारण वह अकेले चार मनुष्योंका काम कर लिया करता था। उसके हाथमें जो काम पड़ते थे, वे बात-की-बातमें

पूरे हो जाते थे। जिस समय वह अपनी विशाल हथेलियोंसे हलको ज़ोरसे दबाकर चलता था, उस समय ऐसा मालूम होता था, मानो वह घोड़ोंकी मददके बिना ही पृथ्वीके वक्षस्थलको विदीर्ण कर रहा है। इसी प्रकार जब वह प्रचण्ड शक्तिके साथ हँसुआ चलाने लगता अथवा जल्दी-जल्दी बिना थके हुए दो-दो गज़को दूरीपर रखे हुए अनाजके ढेरको पीटकर दाना निकालने लगता था और इस अवस्थामें उसके कंधेका चौड़ा मुड्ढा ढेकलीके समान ऊपर-नीचेकी ओर आने-जाने लगता था, उस समय उसे समय देखकर बड़ा आनन्द मिलता था। उसके निरन्तर मौन रहनेके कारण उसके अथक परिश्रमकी मर्यादा और भी गम्भीर रूप धारण कर लेती थी। वह एक उत्कृष्ट किसान था, और यदि वह दैववशात् गूंगा और बहरा न होता, तो कोई भी लड़की उसके साथ विवाह करनेमें अपनेको भाग्यवती समझती।

किन्तु अब उसी जिरेसिमको मास्कोमें लाकर लोगोंने एकदम शहराती बना दिया। उसके लिए जूता, गर्मीका कोट और जाड़ेके लिए भेड़की खाल खरीदी गई, और उसके हाथमें एक झाड़ू और फावड़ा देकर दरबान नियुक्त कर दिया गया।

शुरूमें तो जिरेसिमको अपने जीवनका यह नया ढंग बिलकुल पसन्द नहीं आया। लड़कपनसे ही वह खेतोंमें काम करने और ग्राम्य जीवन व्यतीत करनेका आदी था। अपनी विपत्तिके कारण मनुष्य-समाजसे पृथक् रहकर ही वह गूँगा और शक्तिशाली व्यक्ति उसी प्रकार जवान हुआ था, जिस प्रकार कि कोई विशाल वृक्ष उर्वर भूमिमें उत्पन्न होकर फलता-फूलता है। जिस समय वह ग्रामसे नगरमें लाया गया, वह बिलकुल ही नहीं समझ सका कि आखिर ये लोग मेरे साथ क्या बर्ताव करना चाहते हैं। वह

दुःखित एवं हतबुद्धि-सा हो रहा था। उस समय उसकी अवस्था एक ऐसे जवान साँड़की जैसी हो रही थी, जो किसी हरे-भरे मैदानसे पकड़ लाया जाकर मालगाड़ीके डब्बेमें रख दिया हो और वहाँ धुआँ, आगकी चिनगारियाँ, और भापके निकलनेसे वह ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाकर—चिंघाड़ मारकर—आगे भागनेकी कोशिश कर रहा हो और रेलगाड़ी धक करती और सीटी बजाती उसे भगाये लिए जा रही हो; कहाँको, यह ... ही जाने !

एक किसानके रूपमें कठिन परिश्रम करनेके बाद बुद्धि ... जिरेसिमको अपने निर्दिष्ट कर्त्तव्योंके संपादनमें जितना काम करना हो... छी तरह ... वह उसे अत्यन्त तुच्छ जान पड़ता था। आध घंटेमें ही उनके सब कार्य ... प्राप्त हो जाते थे, और तब वह बीच आँगनमें पत्थरकी तरह खड़ा होकर, मुँह बाये रास्तेसे आने-जानेवाले मुसाफ़िरोंकी ओर टकटकी लगाये इस प्रकार देखा करता था, मानो वह उनसे अपनी वर्तमान घबराहटपूर्ण अवस्थाकी कैफ़ियत जानना चाहता हो। कभी-कभी काम समाप्त हो जानेपर वह आँगनके किसी कोनेमें एकाएक दौड़ जाता और वहाँ अपने हाथकी झाड़ू और फावड़ा दूर फेंककर मुँहके बल ज़मीनपर लेट जाता था और इसी अवस्थामें घंटों बिना टस-से-मस हुए, पिंजड़ेमें बन्द जानवरकी तरह पड़ा रहता था। चाहे कोई भी काम हो, मनुष्य उसे करते-करते उसका आदी बन जाता है। इसी प्रकार जिरेसिम भी आखिरकार शहरी जीवन व्यतीत करनेमें अभ्यस्त बन गया, पर उसके पास करनेके लिए बहुत थोड़ा काम था।

आँगनको साफ़ रखना, दिनमें दो बार पीपेमें पानी भरकर लाना, रसोई-घर और रहनेके घरमें जलानेके लिए लकड़ी चीरना और उसे यथास्थान पहुँचाना, बाहरी आदमियोंको घरके अहातेके भीतर न आने देना, और

रातमें पहरा देना, बस इसने ही में उसके सारे काम समाप्त हो जाते थे। वह अपने कर्त्तव्यका पालन पूर्ण उत्साहके साथ करता था। उसके आँगनमें किसी चीज़का छिलका, या कटा हुआ बाल अथवा धूलका कोई निशान तक कभी नहीं पाया गया। बरसातके दिनोंमें जब कभी उसका टट्टू, जो पानी ढोनेके लिए उसके जिम्मे रखे दिया था, सड़ककी कीचड़में गाड़ी समेत फँस जाता था, उस समय उसके कन्धेसे एक हल्का धक्का दे देना ही उसके लिए काफ़ी था। उसके ज़ोरसे वह गाड़ी ही नहीं, बल्कि टट्टू भी आगे घसिट जाता था। उसके समय वह लकड़ी काटने बैठता उसकी कुल्हाड़ी शिशेकी तरह चमकने लगती थी और लकड़ीकी छोटी-छोटी चिपें उड़-उड़कर इधर-उधर बिखर जाती थीं। जबसे उसने एक रातमें दो चोरोंको पकड़कर उनके सिरोंको आपसमें एक दूसरेसे इतने जोरके साथ टकरा दिया कि समयसे अजनबी मनुष्यकी बात कौन कहे, उसके पड़ोसमें रहनेवाले लोग भी उसके धाक मानने लग गये। यहाँ तक कि जो अपरिचित दिनके समय भी वहाँ पहुँचते, वह उस भयानक दरवानको दूरसे ही देखकर अपने हाथोंको ऊपर उठाते हुए ज़ोर-ज़ोरसे इस तरह चिल्लाने लगता, मानो वह दरवान उसकी चिल्लाहटको सुन सकता हो। उस मकानमें और जितने नौकर थे, उन सभीके साथ जिरेसिमका वर्ताव दोस्ताना तो नहीं, किन्तु साधारणतः ठीक था। वे लोग जिरेसिमसे भयभीत रहते थे, किन्तु उसके साथ मिलते-जुलते थे। जिरेसिम भी उसे अपना साथी समझता था। वे लोग इशारोंसे ही मनका भाव जिरेसिमपर प्रकट करते, जिन्हें वह समझ लेता, और उनके समस्त आदेशोंका ठीक-ठीक पालन कर देता। परन्तु वह अपने निजी अधिकारोंको भी समझता था, अतएव किसीको टेबुलपर उसकी

जगहपर बैठनेका साहस न होता था। जिरेसिम बिल्कुल कठोर एवं गम्भीर प्रकृतिका मनुष्य था। वह हर एक बातमें सुव्यवस्था पसन्द करता था। यहाँ तक की उसके सामने मुर्गों को भी आपसमें लड़नेकी हिम्मत न पड़ती थी। यदि वे लड़ पड़ते, तो उनकी आफ़त ही आ जाती थी। नज़र पड़ते ही वह उन मुर्गोंको पाँव पकड़कर उठा लेता और चक्रकी तरह उन्हें हवामें बीसियों बार घुमाकर अलग-अलग दिशाओंमें फेंक दिया करता। उस आँगनमें हंस भी थे, किन्तु हंसको एक श्रेष्ठ और बुद्धिमान जातिका पक्षी समझकर जिरेसिम उनका आदर करता; उनकी अच्छी तरह देख-भाल करता और उन्हें दाना खिलाता। उसे रहनेके लिए एक छोटासा कमरा रसोई-घरके ऊपर दिया गया था, जिसे जिरेसिमने अपनी रुचिके अनुसार स्वयं सजाया था। उसमें लकड़ीके चार कुन्दोंके ऊपर कई तख़्ते रखे हुए थे, जो उसकी चारपाईका काम देते थे। वह चारपाई इतनी भारी थी कि उसके ऊपर यदि एक या दो टनका बोझा भी लाद दिया जाता तो वह न दबती। चारपाईके नीचे एक गोल सन्दूक़ रखा हुआ था। कमरेके एक कोनेमें एक मज़बूत टेबुल था और टेबुलके पास ही एक तिपाई रक्खी थी, जो इतनी भारी और मोटी थी कि कभी जिरेसिम उसे स्वयं हाथसे उठाकर हँसते-हँसते ज़मीन पर पटक देता था। उस कमरेमें एक ताला बन्द रहता था, जिसकी चाभी जिरेसिम अपनी कमरमें बाँधे रहता था। अपने इस कमरेमें दूसरे लोगोंको आने देना उसे पसन्द नहीं था। इस प्रकार रहते हुए जिरेसिमको एक वर्ष बीत चला था, जब एक छोटीसी घटना हो गई।

जिस वृद्धा स्त्रीके यहाँ जिरेसिम दरबानका काम करता था, वह हरएक बातमें पुराने तरीक़ोंको ही पकड़े हुए थी। उसके बहुतसे नौकर-चाकर थे।

उसके नौकरोंमें एक घोड़ेका साज़ बनानेवाला भी था, जो पशु-चिकित्सक भी समझा जाता था। यही आदमी नौकरोंका डाक्टर भी था। घरकी स्वामिनीके लिए एक पृथक् गृह-चिकित्सक नियुक्त था। इन नौकरोंके सिवा एक चमार नौकर केपिटन क्लीमोव नामका था, जो खूब पियक्कड़ था। केपिटन क्लीमोव, अपनेको एक ऐसा क्षतिग्रस्त जीव समझता था, जिसकी क़द्र दुनियाने न की थी। वह कहा करता था कि 'कहां मैं पीटर्सवर्गका रहनेवाला शरीफ़ आदमी, और कहाँ यह मास्कोका जंगल। कहाँ बेमतलब आ फँसा!' शराब पीनेकी बुरी आदत उसे ज़रूर थी; किन्तु इसका कारण प्रकट करते हुए अपनी छातीमें घूँसा मारता और ज़ोर देकर कहा करताः—"शोकसे हताश होकर मैं इस आदतका ग़ुलाम बन गया हूं।"

एक दिन उसकी स्वामिनीकी अपने प्रधान सेवक गवरीलाके साथ उसके सम्बन्धमें बात चीत हुई। गवरीलाकी छोटी-छोटी पोली आँखें और बतक़की चोंचकी तरह नुकोली नाक देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो दैवने उसे हुकूमत करनेके लिए ही पैदा किया हो। गृह-स्वामिनीने केपिटनके नैतिक चरित्रकी भ्रष्टतापर खेद प्रकट किया, क्योंकि उस दिन शामको वह सड़कपर कहीं बेहोश पड़ा हुआ देखा गया था। वार्तालापके प्रसंगमें वह वृद्धा स्त्री एकाएक बोल उठी—"गवरीला, यदि हम लोग केपिटनकी शादी करा दें, तो क्या तुम समझते हो कि उसमें कुछ अधिक स्थिरता आ जायगी?"

"हाँ, सचमुच उसका विवाह कर देना चाहिए। निश्चय ही उसके लिए यह एक अच्छी बात होगी।"

...। स्त्री—"हाँ, लेकिन उसके साथ शादी कौन स्त्री करेगी?"

गवरीला—"यह तो आपकी मर्ज़ीपर निर्भर है। कभी-न-कभी उससे कुछ काम निकल सकता है। उसे यों ही दुनियामें भटकते हुए नहीं छोड़ा जा सकता।"

वृद्धा स्त्री—"मेरा ख़याल है कि वह टेटियानाको चाहता है।"

इसके उत्तरमें गवरीला कुछ कहना ही चाहता था, किन्तु उसने ज़ोरसे अपने ओठ बन्द कर लिये और कुछ नहीं बोला।

सन्तुष्ट-भावसे नसकी एक चुटकी लेकर उस वृद्धाने अपना निश्चय जताते हुए कहा—"हाँ, केपिटनकी शादी टेटियानाके साथ हो जानी चाहिए।" और फिर गवरीलाकी ओर मुड़कर कहा—"क्या तुम मेरी बात सुन रहे हो?"

गवरीलाने उत्तर दिया—"हाँ", और फिर वहाँसे चल दिया।

अपने कमरे में वापस लौटकर उसने सबसे पहले अपनी स्त्रीको बाहर भेज दिया और फिर खिड़कीके पास बैठकर विचार करने लगा। गृह-स्वामिनीके इस अचानक किये हुए प्रबन्धने उसे एक कठिनाईमें डाल दिया था। ख़ैर, वह उठा और केपिटनको बुला भेजा। थोड़ी ही देरमें केपिटन वहाँपर उपस्थित हो गया, किन्तु इन दोनोंके बीच उस समय जो बातचीत हुई, उसका वर्णन करनेके पूर्व पाठकोंसे संक्षेपमें यह बता देना अप्रासंगिक न होगा कि यह टेटियाना थी कौन, जिसके साथ शादी करना केपिटनके भाग्यमें बदा था और गृह-स्वामिनीके इस प्रस्तावसे गवरीलाके विचलित होनेका क्या कारण था।

टेटियाना कपड़ा साफ़ करनेवाली औरतोंमें से एक थी, जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका है। उसकी अवस्था अठ्ठाइस वर्षकी थी। वह शरीरसे

पर बैठकर वह सोचने लगा, 'इसमें सन्देह नहीं कि गृह-स्वामिनी जिरेसिमके प्रति अनुग्रह रखती है।' गवरीला इस बातको अच्छी तरह जानता था और इसी कारण वह स्वयं भी जिरेसिमके प्रति कृपादृष्टि रखता था। 'किन्तु वह गूँगा आदमी है। मैं गृह-स्वामिनीके सामने इस बातको प्रकट नहीं कर सकता कि जिरेसिम टेटियानाके प्रणयकी याचना कर रहा है, किन्तु यह सब होनेपर भी इसमें सन्देह नहीं कि जिरेसिम एक विचित्र पति सिद्ध होगा, पर दूसरी ओर यदि उस शैतानको मालूम हो जाय कि हम लोग केपिटनके साथ टेटियानाका विवाह करने जा रहे हैं, तो वह किसीको चैन नहीं लेने देगा। उसके साथ युक्ति और दलीलसे काम नहीं चल सकता। परमात्मा उससे बचावे। वह इतना बड़ा शैतान है कि उससे छुटकारा पाना बिलकुल असम्भव है।'

गवरीला इन्हीं सकल्प-विकल्पोंमें मग्न हो रहा था, इतनेमें केपिटन भी वहां आ उपस्थित हुआ और उसने उसका ध्यान दूसरी ओर कर दिया। जिस समय यह भ्रष्ट चमार वहां पहुँचा, उसके दोनों हाथ पीछेकी ओर मुड़े हुए थे। वह लापरवाहीसे समीपकी दीवारमें अपने शरीरको टिकाये हुए खड़ा था, और उसका दाहिना पांव उसके बाएं पांवके सामने रखा हुआ था, और वह अपने सिरको इस प्रकार हिला रहा था, मानो वह पूछना चाहता हो कि उसे किस लिए बुलाया गया है।

गवरीला केपिटनकी ओर देखते हुए अपनी अगुलियोंसे खिड़कीकी चौखटको खटखटाने लगा। इसपर केपिटन अपनी भरी हुई आँखोंको सिकोड़कर दांत निपोरने लगा, और इधर-उधर बिखरे हुए सफ़ेद बालोंपर हाथ फेरता हुआ बोला—"कहो' मैं आ गया हूं, क्या चाहते हो?"

गवरीलाने कहा—"तुम एक सुन्दर मनुष्य हो।" इतना कहकर वह

कुछ रुक गया और फिर बोल उठा—"तुम सुन्दर मनुष्य हो, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता !"

केपिटन अपने छोटे कन्धोंको खुजाते हुए अपने मनमें कहने लगा, "मानो ये मुझसे कुछ अच्छे हैं।"

गवरीला घृणापूर्ण शब्दोंमें कहने लगा—"केपिटन, ज़रा अपनी सूरत देखो, इस समय तुम कैसे मालूम पड़ते हो?"

इसपर केपिटन गम्भीरता-पूर्वक अपने फटे-पुराने कोट और पेवँद लगे हुए पायजामाको अच्छी तरह देखभाल करने लगा। उसने अपने फटे हुए जूतेको विशेष ध्यान देकर देखा, और फिर गवरीलाकी ओर दृष्टि गड़ाकर बोला—"कहो, क्या कहते हो?" गवरीलाने फिर उसी बातको दोहराते हुए कहा—"तुम्हारी सूरत बुड्ढे गिद्ध जैसी भद्दी मालूम होती है।"

केपिटन अपनी आँखोंको जल्दी-जल्दी मिचमिचाने लगा। वह अपने मन-ही-मन कहने लगा—"अच्छा गवरीला, मुझे खूब गाली दे ले।"

गवरीला बोला—"इस समय भी तुम फिर नशा पीकर यहाँ आये हो, क्या तुमने शराब नहीं पी है? बोलो, मेरे सवालका जवाब दो।"

केपिटनने उत्तर दिया—"हाँ, स्वास्थ्यकी दुर्वलताके कारण मुझे मादक-द्रव्य ग्रहण करनेके लिए बाध्य होना पड़ा है।"

"स्वास्थ्यकी दुर्बलताके कारण।.......तुम्हारे साथ बड़ी नर्मीका व्यवहार किया जाता है, इसीसे। पोटर्सवर्गमें तुमने काम सीखा है, फिर भी तुम काहिलकी तरह बैठे-बैठे मुफ्तकी रोटियाँ खाते हो।"

"गवरीला! इस बातमें मेरा इन्साफ करनेवाला परमात्माके सिवा और

दूसरा कोई नहीं है। वही जानता है कि इस दुनियामें मैं किस तरहका आदमी हूँ, और बेकार बैठकर खाता हूँ या मेहनतसे। नशा पीनेके सम्बन्धमें तुम्हारा जो उलाहना है, उस विषयमें भी मैं दोषी नहीं हूँ; बल्कि मेरे एक मित्र हैं, जो मुझे इस प्रलोभनमें फँसाकर स्वयं चालाकीसे निकल भागे और मैं.......।"

"हाँ, और तुम फँसे रह गये! अच्छा, इन बातोंको इस समय जाने दो। मुझे तुमसे कुछ खास बात कहनी है। हमारी स्वामिनी"—इतना कहकर प्रधान सेवक कुछ देरके लिये रुक गया और फिर कहने लगा—"हमारी स्वामिनी की यह इच्छा है कि तुम्हारी शादी हो जाय। कहो, तुमने सुना है न? उनका ख़याल है कि शादी होनेपर शायद तुममें कुछ अधिक गम्भीरता आ जाय। समझे न?"

"हाँ, ज़रूर समझता हूँ।"

"अच्छा, तो मैं तुम्हें एक अच्छी खबर सुनाता हूँ। कहो, तुम सहमत हो न?"

केपिटन दाँत निकालकर कहने लगा—"गवरीला! वैवाहिक सम्बन्ध किसीके लिए भी एक अच्छी वस्तु है और इस विषयमें जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं हर प्रकारसे सहमत हूँ।"

गवरीलाने उत्तर दिया—"बहुत अच्छा", और फिर अपने-आप सोचने लगा, निस्सन्देह यह आदमी बड़े अच्छे ढंगसे अपना भाव प्रकट करता है। सिर्फ एक ही बात है। फिर वह ज़ोरसे बोल उठा—"गृह-स्वामिनीने तुम्हारी स्त्री बननेके लिए जिसे चुना है, वह अभागी है।"

"क्यों? वह कौन है? क्या मैं यह जान सकता हूं?"

"टेटियाना।"

"टेटियाना!" इतना कहकर केपिटनने अपनी मुँदी हुई आँखें खोल लीं और दीवालसे कुछ दूर खिसक गया।

"ऐं, तुम इस प्रकार चकित क्यों होते हो? क्या वह तुम्हारे पसन्दकी नहीं है?"

"मेरे पसन्दकी नहीं, क्या तुम कहते हो? गवरीला! मेरे लिए तो वह बिलकुल ठीक है। वह एक कठिन परिश्रम करनेवाली लड़की है।...लेकिन गवरीला, तुम तो खुद अच्छी तरह जानते हो कि उस लड़कीके पीछे वह जंगली आदमी वह पहाड़ी दैत्य किस तरह पड़ा हुआ है।"

केपिटनके कथनको बीचमें ही काटकर गवरीला खिन्न स्वरमें बोल उठा—"हाँ, भाई इस विषयमें मुझे सब-कुछ ज्ञात है, लेकिन तुम जानते हो।"...

"जानकी क़सम गवरीला, वह मुझे मार डालेगा; ईश्वरकी शपथ, वह मुझे मक्खीकी तरह कुचल डालेगा; उसके मुक्के कितने मज़बूत हैं, इसे तो स्वयं विचार सकते हो। भीमके समान उसके मुक्के हैं। तुम तो जानते ही हो कि वह बहरा है, इसलिए जब वह किसीको पीटने लगता है, तो उसे यह सुनाई नहीं पड़ता कि उसका घूँसा कितने ज़ोरसे बैठा है। वह अपने भारी घूँसेको इस तरह चलाने लगता है, मानो वह सोया हुआ हो। उसे सन्तुष्ट करनेको भी कोई सम्भावना नहीं है, क्योंकि गवरीला, तुम्हें मालूम है कि वह बहरा है, और उसमें इतनी भी अक़्ल नहीं, जितनी मेरे जूतेकी ऐंड़ीमें। इतना ही क्यों गवरीला, बल्कि वह एक जानवर है, मिट्टी की मूरत है, या इससे भी बदतर लकड़ीका कुन्दा है। मैंने कौनसा अपराध किया है कि मुझे अब उसके हाथसे यह सब कष्ट सहन करना होगा? बस, अब मेरा खात्मा है! अवश्य ही मैं अब तक बहुत कष्ट भोग चुका हूँ। मैं इधर-उधर बहुत भटक चुका हूँ, बहुत कुछ बर्दाश्त किया है। मिट्टीके

बर्त्तनकी तरह मैं ठोंका-पीटा गया हूँ, किन्तु यह सब होनेपर भी आखिर मैं मनुष्य ही हूँ, न कि एक बेकार वर्त्तन।"

गवरीला बोल उठा—"मैं जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ, बहुत बकनेकी ज़रूरत नहीं।"

"प्रभो! हा ईश्वर! वह जूता बनाने वाला आवेशमें आकर कहने लगा—"मेरे दुखोंका अन्त कब होगा? हे भगवान्, मेरे जैसा दीन अभागा आदमी और दूसरा कौन होगा, जिसके दुःखोंका कोई अन्त ही नहीं है? मेरा जीवन कैसे बीता है। लड़कपनमें मुझे एक जर्मन ने पीटा था, जिसके पास मैं काम सीखता था; वयस्क होनेपर अपने देशवासियों द्वारा पीटा गया, और अन्तमें इस बुढ़ापेमें इश दशाको पहुँचाया जा रहा हूँ।"

"तुम बड़े हो तुनुक-मिज़ाज आदमी मालूम पड़ते हो" गवरीलाने कहा—"एक मामूली बातके लिए इतना बकबक क्यों करते हो?"

"क्यों? गवरीला, तुम्हारे कहनेका क्या मतलब? क्या यह पीटना नहीं है? निरालेमें चाहे कोई सज्जन मुझे भले ही दण्ड दे, किन्तु सर्व-साधारणके सामने तो मेरे प्रति भद्रोचित शब्दोंका व्यवहार होना चाहिए! आखिर मैं इस दशामें भी मनुष्य ही हूं। किन्तु देखो, अब मुझे किसके साथ निर्वाह करना है!"

गवरीला अधीर होकर बीचमें ही बोल उठा—"अच्छा, अब चलते बनो।" केपिटन पीछेकी ओर मुड़कर वहांसे चल दिया।

उसके वहांसे चल देनेपर गवरीलाने चिल्लाकर उससे पूछा—"तुम अपनी ओरसे तो राज़ी हो न?"

"मैं अपनी स्वीकृति करता हूँ।" केपिटनने उत्तर दिया और फिर नज़रसे ओझल हो गया।

प्रधान सेवक गवरीला अपने कमरेमें इधर-से-उधर चक्कर मारने लगा और आखिर उसने निश्चय किया, 'अच्छा, अब टेटियानाको बुलाना चाहिए। कुछ ही समयके बाद टेटियाना चुपकेसे वहां पहुंचकर दरवाज़ेपर हाज़िर हो गई।

उसने कोमल स्वरमें पूछा—"कहिए, क्या आज्ञा है, गवरीला एण्ड्रीच?"

प्रधान सेवक उसकी तरफ़ गौरसे देखने लगा। फिर बोला—"कहो, टेन्यूशा; क्या तुम विवाह करना पसन्द करोगी? हमारी गृह-स्वामिनी ने तुम्हारे लिए एक पति चुना है।"

"हां, गवरीला एण्ड्रीच" इतना कहकर फिर उसने कांपते हुए स्वरमें पूछा—"किन्तु यह तो बताइए कि उन्होंने मेरे पति होने के लिए किस व्यक्तिका नाम लिया है?"

"केपिटन चमारका।"

"अच्छा!"

"इसमें सन्देह नहीं कि वह हल्के दिमागका आदमी है। लेकिन इसी कारणसे तो गृह-स्वामिनीने तुम्हें उसके लिए चुना है। लेकिन इसमें एक कठिनाई है। तुम जानती हो कि वह बहरा जिरेसिम तुम्हारा प्रणय-प्रार्थी हो रहा है। न मालूम उस रीछ पर तुम्हारे रूपका जादू क्योंकर चल गया? लेकिन देखो, कहीं ऐसा न हो कि वह जानवर तुम्हें जानसे मार डाले।"

"हाँ, गवरीला एन्ड्रीच, वह मुझे निश्चय ही मार डालेगा। इसमें कोई शक नहीं।"

"ऐं, मार डालेगा! ......खैर उसके लिए हम देखेंगे। जानसे मार डालना क्या तुम खेल समझती हो? तुम्हीं बताओ, तुम्हें मार डालनेका उसे हक़ है?"

"उसे हक़ है या नहीं, इस सम्बन्धमें मैं कुछ नहीं जानती।"

"तुम कैसी स्त्री हो! मैं समझता हूँ, तुमने उसके साथ कोई प्रतिज्ञा नहीं की है, क्यों?"

"भला इस विषयमें भी मुझसे पूछनेकी कोई ज़रूरत थी?"

प्रधान सेवक कुछ समय तक चुपचाप सोचता रहा, यह एक भीरु प्रकृतिकी स्त्री है, किन्तु यह अच्छा ही है। फिर उसने ऊँचे स्वरमें कहा—"टेन्यूशा, इस समय तुम जा सकती हो। बादमें हम तुम्हरे साथ फिर बातें करेंगे। मैं देखता हूँ, तुम अशिष्ट नहीं हो।"

टेटियानाने पीछेकी ओर घूमकर दरवाज़ेके खम्भेसे ज़रासा सहारा लिया और फिर वहाँसे चलती बनी।

उसके चले जानेपर प्रधान सेवक अपने मनमें सोचने लगा—"सम्भव है कि गृहस्वामिनी इस विवाहके सम्बन्धमें कल ही सब कुछ भूल जायँ, तो फिर मैं ही इस बेकार बातके लिये क्यों माथापच्ची कर रहा हूँ? अगर इस मामलेमें वह बदमाश जिरेसिम बहुत ढिठाई दिखायेगा, तो हम उसे बाँधकर पुलिसके हवाले करेंगे।" फिर उसने ज़ोरसे अपनी स्त्रीको पुकारकर गरम चाय करनेके लिये कहा। उसदिन टेटियाना कपड़ा धोनेके कमरेसे शायद ही बाहर निकली हो। पहले उसने चिल्लाकर रोना शुरू

किया और फिर आंसू पोंछकर पहलेके समान अपने काममें लग गई। केपिटन अपने एक मनहूस शकलवाले मित्रके साथ रातमें देर तक शराबकी दूकानपर बैठा रहा और अपने उस मित्रको अपने गत जीवनकी कहानी सुनाता रहा कि वह किस प्रकार पीटर्सबर्गमें एक सज्जनके साथ रहा करता था, जो स्वभावमें कुछ कड़े थे, पर थे वे बड़े भले मानस, लेकिन उनमें एक कमजोरी यह थी कि वे शराब बहुत पसन्द करते थे और स्त्रियोंके विषयमें उनका चित्त बड़ा चंचल था। केपिटनकी कहानीको सुनते हुए उसका साथी सिर्फ 'हूँ' कहता जाता था। इस प्रकार कुछ अधिक समय बीतनेपर केपिटनने अपने मित्रसे कहा—"शायद कल यदि कुछ काम आ पड़ा, तो रुपये-पैसेसे आपकी मदद लेनी होगी।" यह सुनकर उसके मित्रने कहा—"अब सोनेका समय हो गया है", इसके बाद दोनों चुपचाप एक दूसरेसे अलग हुए।

इधर वह वृद्धा गृह-स्वामिनी केपिटनकी शादीके बारेमें इतनी ध्यानमग्ना थी कि रात-भर वह अपने संगकी एक स्त्रीसे सिर्फ इसी विषयकी बातें करती रही। यह स्त्री रातमें उसे नींद न आनेपर क़िस्से-कहानियोंसे उसका मनोरंजन किया करती थी, और उसी कमरेमें सोती थी। वह पहरेदारोंकी तरह दिनोंमें सोती और रातमें जागती थी। सवेरे जब गवरीला अपना संवाद सुनानेके लिए गृह-स्वामिनीके पास पहुँचा, तो पहला सवाल उससे यही हुआ—"कहो, शादीके सम्बन्धमें क्या समाचार है, सब ठीक हो रहा है न?" उसने उत्तर दिया—"हाँ, सब ठीक हो रहा है। केपिटन आज ही श्रीमतीकी सेवामें उपस्थित होगा।"

वृद्धा स्त्री उस समय कुछ अनमनी-सी जान पड़ती थी, अतएव इस सम्बन्धमें विचार करने के लिए वह विशेष समय देना नहीं चाहती थी।

प्रधान सेवक गवरीला अपने कमरेमें चला गया और वहाँ उसने एक परामर्श समिति बुलाई। यह एक ऐसा विषय था, जिसपर गम्भीर विचारकी आवश्यकता थी। टेटियानाकी ओरसे तो कोई अड़चन नहीं थी, किन्तु जिरेसिमके डरसे केपिटन इस प्रस्तावपर राज़ी नहीं था। उसने कहा था—"आख़िर मेरे सिर तो एक ही है, दो-तीन बार तो फूटेगा नहीं, वह तो एक ही बारमें फूट जायगा", यह बात सब लोगोंने सुन ली थी। उधर जिरेसिमके चेहरेका रुख़ एकदम बदल गया था। वह सबकी ओर उदासभावसे देखने लगा था, और दासियोंके घरकी सीढ़ियोंसे कहीं एक डग भी हटकर नहीं जाता था? उसे ऐसा अनुमान हो रहा था, मानो उसके विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रचा जा रहा हो। परामर्श-समिति बैठी, और उसमें सब लोग सम्मिलित हुए। सम्मिलित होनेवालोंमें एक ख़ानसामा था, जिसे सब टेल काका कहते थे। उसकी सलाह हरएक आदमी सम्मान-पूर्वक लिया करता था। और वह सलाह भी यही देता था—"है मामला बड़ा मुश्किल, वाक़ईमें सचमुच।"

बिना किसी विघ्न-बाधाके ठीक तरहसे विचार हो सके, इसके लिए यह उपाय किया गया कि केपिटनको पहलेसे ही कबाड़ख़ानेके कमरेमें बन्द कर दिया गया, और तब गम्भीरता पूर्वक इस विषयमें विचार होने लगा। पहले तो यह विचार हुआ कि अगर जिरेसिम इस सम्बन्धमें बाधा उपस्थित करें, तो उसके साथ बल-प्रयोग किया जाय, किन्तु पीछे यह विचार इसलिए छोड़ दिया गया कि इस प्रकार करनेसे हो-हल्ला मच जायगा, और गृह-स्वामिनी घबराहटमें पड़ जायगी। आख़िर होना क्या चाहिए? कुछ समय तक यों ही तर्क-वितर्क होता रहा, और अन्तमें एक उपाय सोच निकाला गया। जिरे-

सिमको नशेबाज़ोंसे बड़ी घृणा थी। जिस समय वह दरवाज़ेपर बैठता था, उस समय यदि कोई आदमी नशा पीकर, उन्मत्त अवस्थामें, कोनके एक तरफ तिरछी टोपी लगाये हुए, डगमगाते क़दमोंसे उसके सामनेसे होकर गुज़रता था, तो वह उसे देखकर घृणासे अपना मुँह उस ओरसे फेर लेता था। उसके इस स्वभावको जानते हुए उन लोगोंने यह निश्चय किया कि टेटियानासे कहा जाय कि वह मतवाली-जैसी बनकर जिरेसिमके सामनेसे झूमती और अंट-संट बकती हुई निकले। बेचारी टेटियाना पहले तो इस प्रस्तावपर सहमत नहीं हुई, पर अन्तमें जब उसने देखा कि जिरेसिमसे छुटकारा पानेका कोई दूसरा उपाय ही नहीं है, तो आखिर उनलोगोंके बहुत कहने-सुननेपर वह राज़ी हो गई। इसके बाद वह वहाँसे चली गई। केपिटनको बन्द कमरेसे बाहर कर दिया गया, क्योंकि इस घटनाके साथ उसका भी बहुत कुछ सम्बन्ध था। उस समय जिरेसिम दरवाज़ेके पास एक पत्थरपर बैठा कुदालसे ज़मीन खोद रहा था। उसके पीछे हरएक कोनेसे, खिड़कोकी झिल-मिलीसे सब लोग उसकी ओर देख रहे थे। आखिर उन लोगोंकी चाल सफल हुई, और टेटियानाको देखकर पहले तो जिरेसिम—जैसा कि उसका अभ्यास था—सिर हिलाने लगा और प्यारसे भरे हुए अस्पष्ट शब्दोंमें कुछ कहने लगा। फिर उसने उसकी ओर ध्यानसे देखते हुए अपनी कुदाल वहीं छोड़ दी, और दौड़कर उसके चेहरेके सामने खड़ा हो गया। मारे डरके बेचारी टेटियानाने अपनी आँखें बन्द कर लीं, और उसके पैर और भी लड़-खड़ाने लगे।

जिरेसिम उसकी बाँह पकड़कर उसे आँगनमें घुमाते हुए उस कमरेमें ले गया, जहाँ परामर्श-समिति बैठी थी और वहाँ ठीक केपिटनके सामने

करके उसे उसकी ओर धकेल दिया। टेटियाना तो मूर्छित-सी हो गई। जिरेसिम उसकी ओर टकटकी लगाये खड़ा देखता रहा, और अपना हाथ हिला-हिलाकर हँसने लगा। इसके बाद वह धीरे-धीरे पाँव बढ़ाकर वहाँसे अपनी कोठरीमें चला गया।

चौबीस घंटे तक जिरेसिम अपनी कोठरीसे बाहर नहीं निकला। बादमें कोचवान एनटिपकासे मालूम हुआ कि उसने दीवालके एक छेदसे झाँककर जिरेसिमको खाटपर बैठे हुए और अपने मुँहको हाथसे ढके हुए देखा था। थोड़ी-थोड़ी देरपर उसके मुँहसे कुछ धीमे-धीमे शब्द निकल पड़ते थे। उसे उस समय देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो वह आँख बन्द करके आगे-पीछे हिलते हुए, और अपना सिर हिलाते हुए इस प्रकार शोकपूर्ण गान गा रहा हो, जैसा कि नाविक लोग विषादमयी तान छेड़नेके समय किया करते हैं। एनटिपका इस दृश्यको देख नहीं सका, और दीवालके पाससे हटकर चला गया। दूसरे दिन जब जिरेसिम अपनी कोठरीसे बाहर निकला, तो उसके चेहरेपर किसी प्रकारका परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ा, सिर्फ वह उदास मालूम पड़ता था। टेटियाना और केपिटनकी ओर उसका ध्यान बिलकुल ही न रह गया था। उसी दिन संध्याको टेटियाना और केपिटन गृह-स्वामिनीके सामने उपस्थित हुए, और एक सप्ताहके भीतर उन दोनोंका विवाह हो गया। विवाहके दिन भी जिरेसिमके वर्तावमें किसी प्रकारका कोई परिवर्तन नहीं देख पड़ा। बस, उस दिन रास्तेमें पानी भरनेके लिए जाते वक़्त पानीका पीपा फूट गया था, जिससे वह बिना पानी लिए ही नदी-से वापस लौट आया। रातमें अस्तबलमें उसने घोड़ेको नहलाने और मलनेमें इतना ज़ोर लगाया कि घोड़ा घासकी पत्तीकी तरह हिलने लगा, और उसके फौलादी पंजेमें पड़कर उसके पाँव एक दूसरेसे टकराने लगे थे।

ये सब घटनाएँ वसन्त-ऋतुमें हुई थीं, जिनको बीते हुए पूरा एक वर्ष हो चुका था। इस बीचमें केपिटन बहुत बड़ा पियक्कड़ हो गया था, और उसकी यह आदत छूटनेकी कोई आशा नहीं रह गई थी। इसलिए बेकार समझ उसे अपनी स्त्रीके साथ एक दूरके गाँवमें भेज दिया गया। विदा होनेके दिन पहले तो वह प्रसन्न-वदन देख पड़ता था और कहता था—"इससे क्या? चाहे मुझे दुनियाके छोरपर भेज दो, मैं वहां भी प्रसन्नता-पूर्वक रहूँगा", किन्तु बादमें वह भिनभिनाकर कहने लगा कि उसे अशिक्षित लोगोंके बीचमें भेजा जा रहा है। इस चिन्तामें पड़कर वह इतना विह्वल हो रहा था कि उसे अपने सरपर संभालकर टोपी रखने तककी सुध नहीं रही। किसीने दया करके उसकी टोपी उसके सिरपर रख दी, उसकी नोक सामनेकी ओर ऊपरसे एक चपत जमा दी। इस प्रकार सब कुछ तैयार हो जानेपर जिस समय गाड़ी हाँकनेवाले किसान घोड़ेकी बागडोर हाथमें लिये हुए चलनेकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उसी समय जिरेसिम अपनी कोठरीसे वहाँ आ पहुँचा, और सीधे टेटियानाके पास जाकर एक लाल रंगका सूती रूमाल उसे विदाईके समय भेंटके रूपमें दिया। उस रूमालको उसने उसीके लिए एक वर्ष पूर्व खरीदा था। टेटियाना जो इतने दिनों तक अपने जीवनकी बीभत्स घटनाओंको उदासीनता-पूर्वक सहन करती आ रही थी, इस समय अपनेको न रोक सकी, और फूट-फूटकर रोने लगी। गाड़ीपर सवार होते समय उसने जिरेसिमको एक सच्चे ईसाईकी तरह तीन बार चूमा। जिरेसिम उसकी गाड़ीके साथ नगरकी सीमा तक जाना चाहता था, किन्तु क्रीमियन घाटपर आकर वह सहसा रुक गया, और वहाँ से हाथ हिलाकर अभिवादन करते हुए नदी-तटकी ओर चला गया।

सन्ध्याका समय निकट आ रहा था। जिरेसिम पानीकी ओर दृष्टि लगाये हुए धीरे-धीरे चल रहा था। एकाएक उसे ऐसा मालूम पड़ा, मानो कोई चीज़ किनारेकी कीचड़में छटपटा रही हो। वह वहीं ठहर गया और ग़ौरसे देखने लगा। उसे मालूम पड़ा कि सफ़ेद और काले रंगका कुत्तेका एक छोटा बच्चा बहुत कोशिश करने पर भी पानीसे बाहर नहीं निकल सकता, और वह बार-बार कोशिश करके कुछ दूर आगे बढ़ता और फिर फिसलकर पानीमें गिर पड़ता था। उसका भीगा हुआ दुर्बल शरीर नीचेसे ऊपर तक काँप रहा था। जिरेसिमने उस कुत्तेकी यह दुर्दशा देखकर उसे हाथसे उठा लिया, और अपने कोटके नीचे, छातीके निकट दबाकर जल्दीसे घरकी ओर रवाना हुआ। अपने कमरेमें पहुँचकर उसने कुत्तेके बच्चेको अपने बिछौने पर सुला दिया, और अपना गर्म कोट उसके ऊपरसे ओढ़ा दिया। फिर वह दौड़कर अस्तबलसे पुआल और रसोई-घरसे एक प्याला दूध लाने चला गया। सावधानीसे ओवरकोटको तह खोलकर और पुआल फैलाकर उसने बिछौनेपर दूधका प्याला रख दिया। उस बच्चेको पैदा हुए अभी तीन सप्ताहसे अधिक नहीं बीता था। उसकी आँखें अभी ही खुली थीं, उसकी एक आँख अभी तक दूसरीसे बड़ी मालूम पड़ती थी। प्यालेसे दूध पीना अभी तक उसने सीखा ही न था। काँपने और आंख मिचमिचानेके सिवा वह और कुछ भी नहीं कर सकता था। जिरेसिमने अपनी दो अँगुलियोंसे उस बच्चेके सिरको धीरेसे पकड़ लिया और उसकी नाकको दूधके कटोरेमें डुबा दिया। बच्चा एकाएक दूध चूसने लगा, छींकने लगा, अपनी देहको हिलाने लगा और खाँसने लगा। जिरेसिम, जो बड़े ध्यानसे इस दृश्यको देख रहा था, ज़ोरसे हँस पड़ा। रात-भर उसने उस पिल्लेकी देखभाल की, उसे कपड़ेसे ढाँके

रखा और उसके बदनको हाथसे रगड़कर सुखा दिया। इसके बाद वह शान्ति और सुख-पूर्वक उस कुत्ते के पासमें ही सो गया।

उस कुत्तेके बच्चेको जितनी देखभाल जिरेसिम किया करता, उतनी शायद कोई मां भी अपने लड़केकी न कर सकती। पहले तो वह कुतिया बहुत कमज़ोर, खिन्न और कुरूपा देख पड़ती थी, किन्तु क्रमशः वह मज़बूत होती गई, और उसकी सूरत-शकलमें भी बहुत-कुछ परिवर्तन हो गया। इस प्रकार आठ महीने तक अपने रक्षककी अचूक सावधानीमें रह कर वह एक सुन्दर कुतियाके रूपमें परिवर्तित हो गई। उसके कान लम्बे, दुम झबरी और आंखें बड़ी-बड़ी थीं। जिरेसिमके प्रति वह विशेषरूपसे अनुरक्त थी, और उसके पाससे कभी नहीं हटती थी। जहां-जहां वह जाता था, उसके पीछे दुम हिलाती हुई जाया करती थी। जिरेसिमने उसका नाम मूसू रखा था। बहरे आदमियोंकी यह धारणा होती है कि उनके स्पष्ट शब्दोंको सुनकर दूसरे लोगोंका ध्यान उस ओर आकर्षित होता है। उस घरमें और जितने नौकर थे, सब उस कुतियाको प्यार करते थे और उसे मूसू कहकर ही पुकारते थे। वह अत्यन्त समझदार थी और सभीके प्रति उसका दोस्ताना बर्ताव था, किन्तु प्रेम वह केवल जिरेसिमसे ही करती थी। जिरेसिम भी उसे हृदयसे प्यार करता था, और दूसरे लोगोंका उसके शरीर पर हाथ फेरना उसे अच्छा नहीं लगता था। इसका कारण भय था या ईर्षा, यह ईश्वर के सिवा और कौन जान सकता था? प्रातः काल वह जिरेसिमका कोट खींचकर उसे जगा देती थी। अपने मुँहसे लगाम पकड़कर वह पानी ढोनेवाले बूढ़े घोड़ेको खींचकर जिरेसिम के पास ले आती थी। उस घोड़ेके साथ वह खूब हिलमिल गई थी। जिरेसिमके साथ वह बराबर नदीको जाया करती थी और उस समय उसका चेहरा

रोबदार मालूम होता था। उसकी झाड़ू और कुदालीकी वह ख़बरगीरी करती थी, और उसकी कोठरीके अन्दर किसी दूसरे आदमी को नहीं जाने देती थी। जिरेसिमने दरवाज़ेमें एक छोटा छेद उसके लिए बना दिया था, जिसके अन्दरसे होकर वह कमरेमें आया जाया करती थी। उस समय उसे ऐसा मालूम होता था, मानो वह उस कमरेकी स्वामिनी बन बैठी हो। कमरेके भीतर प्रवेश करते ही वह फ़ौरन उछलकर बड़े मज़ेमें बिछौनेपर चढ़ जाती थी। रातमें वह बिलकुल नहीं सोती थी; किन्तु बिना कारण वह कभी भूकती भी नहीं थी, जैसी कुछ बेहूदे पालतू कुत्तोंकी आदत होती है। इस प्रकारके कुत्ते अपने पिछले पैरोंके बल बैठकर, आँख मिचमिचाते हुए, अपनी नाकको ऊपर करके अकारण ही आसमानकी ओर देखकर लगातार तीन-तीन बार भूका करते हैं। ऐसा मालूम होता है कि मानो वे बैठ-बैठे तंग आ गये हों, और आलस्यके कारण ही भूक रहे हों, किन्तु मूमू ऐसी बेवक़ूफ़ नहीं थी। बिना किसी आवश्यक कारणके उसका कोमल स्वर कभी भी सुनाई नहीं पड़ता था। उसका भूकना उसी समय होता था, जब कि या तो मकानके पाससे कोई अजनबी आदमी जा रहा हो या कहींसे कोई सन्दिग्ध शब्द अथवा खड़खड़ाहटकी आवाज़ सुनाई पड़ती हो। वास्तवमें वह एक बहुत ही श्रेष्ठ पहरा देनेवाली कुतिया थी। उस आँगनमें एक दूसरा बुड्ढा कुत्ता भी था, जिसके शरीरपर भूरे रंगके धब्बे थे। उसे लोग 'wolf' (भेड़िया) कहा करते थे। वह बराबर जंज़ीरमें बँधा रहता था, यहाँ तक कि रातमें भी उसे छुटकारा न मिलता था। असलमें बात तो यह थी कि बुढ़ापेके कारण वह इतना कमज़ोर हो गया था कि छुटकारा पानेकी उसे इच्छा भी न होती थी। वह अपने रहनेके स्थानमें सिकुड़कर

लेटा रहता और कभी-कभी मुश्किलसे, विना ज़ोरकी आवाज़ किये भूक उठता था। उसका वह भूकना भी फ़ौरन ही वन्द हो जाता था, मानो अपने भूकनेकी निरर्थकता उसे स्वयं ही मालूम हो रही हो। मूमू गृह-स्वामिनीके घरके अन्दर कभी नहीं जाती थी। जिस समय जिरेसिम लकड़ी लेकर कमरे के भीतर जाता, वह पीछे ही सीढ़ीपर खड़ी रहकर अधीरता-पूर्वक उसकी प्रतीक्षा किया करती थी, और दरवाज़ेसे ज़रा भी खड़खड़ाहटकी आवाज़ होनेपर कान खड़े करके सिरको दाएँ-वाएँ घुमाने लगती थी।

इस प्रकार एक वर्ष और बीत गया। जिरेसिम वरावर दरवानका काम किया करता था, और अपने भाग्यसे पूर्ण सन्तुष्ट था। इसी समय अचानक एक घटना ऐसी आ घटी, जिसकी कोई आशंका न थी।

ग्रीष्मऋतुमें एक दिन प्रातःकाल वृद्धा मालिकिन अपने कमरेमें अपने अनुचरोंके साथ टहल रही थी। उस समय उसका मिज़ाज वहुत खुश था। वह हँसती थी और अपने अनुचरोंके साथ ठट्ठा भी करती जाती थी। उसके साथके नौकर भी हँसते थे और मज़ाक़ करते थे, किन्तु इस प्रकार हँसने और मज़ाक़ करनेमें उन्हें विशेष प्रसन्नता नहीं मालूम पड़ती थी। इसका कारण यह था कि गृह-स्वामिनी जिस समय खुशमिज़ाज दीख पड़ती थी, उस समय उसके आसपास जितने लोग रहते थे; उनमेंसे प्रत्येकसे वह यह आशा रखती थी कि वे भी उसके इस आनन्दमें पूर्ण भाग लें। ऐसे अवसरपर यदि किसीके मुखमण्डलसे प्रसन्नताका भाव व्यक्त नहीं होता था, तो वह क्रुद्ध हो जाती थी। इसके सिवा एक और कारण यह भी था कि उसका यह आनन्दोद्गार बहुत समय तक क़ायम नहीं रहता था, और कुछ समयके बाद ही उसका रुख फिर चिड़चिड़ा और मलिन हो जाता था। उस दिन

वह शुभ मुहूर्तमें सोकर उठी थी। प्रतिदिन प्रातःकाल वह ताशके पत्तोंसे अपने भाग्यकी परीक्षा लिया करती थी। उस दिन उसके ताशमें चार ऐसे पत्ते निकले थे, जिनका अर्थ था इच्छाका पूर्ण होना। उस दिन उसे चाय भी विशेष स्वादिष्ट जान पड़ी थी, जिसके लिए उसने नौकरानीकी तारीफ़में दो-चार शब्द कहे और फिर इनामके तौरपर दो पेन्स भी दिये। सिकुड़े हुए ओठोंपर मधुर मुस्कानके साथ वृद्धा बैठकखानेमें इधर-उधर टहल रही थी। इस प्रकार टहलते हुए वह खिड़कीके पास गई, और वहाँसे फुलवारी का दृश्य देखने लगी। उस समय फुलवारीके बीचोबीच एक गुलाबकी झाड़ी के नीचे मूसू बैठी हुई एक हड्डीके टुकड़ेको दाँतसे काट रही थी। वृद्धाकी दृष्टि मूसूपर पड़ी। नज़र पड़ते ही वह एकाएक ज़ोरसे चिल्ला उठी, 'यह कौन कुतिया है?' उस समय उसके साथ जो स्त्री मौजूद थी, उसे सम्बोधन करके उसने यह प्रश्न पूछा था। वह बेचारी घबराकर जवाब देनेमें आगा-पीछा करने लगी। ऐसे अवसरपर इस प्रकारकी घबराहट उन सभी पराधीन मनुष्योंमें देखी जाती है, जो अपनेसे बड़ोंके सम्बोधनको सुनकर उसके तात्पर्यको अच्छी तरह समझनेमें अपनेको असमर्थ पाते हैं।

उस स्त्रीने काँपते हुए स्वरमें जवाब दिया—"मैं न···हीं···जानती। मेरा ख़याल है कि यह बहरे आदमीकी कुतिया है।"

उसके कथनको बीचमें ही काटकर वह वृद्धा स्त्री बोल उठी—"अच्छा! यह तो एक सुन्दर कुतिया मालूम पड़ती है। इसे भीतर ले आओ। क्या यह बहुत दिनोंसे उसके पास है? किन्तु मैंने तो इसे पहले कभी नहीं देखा। इसे भीतर ले आओ।"

साथवाली स्त्री यह आदेश पाते ही फ़ौरन दौड़कर कमरेके बाहर गई

और एक लड़केको ज़ोरसे पुकारकर कहने लगी—"मूमू फुलवारीमें है, उसे फ़ौरन यहाँ ले आओ।"

इसपर गृह-स्वामिनीने कहा—"उस कुतियाका नाम मूमू है क्या? यह तो बड़ा अच्छा नाम है।"

साथवाली स्त्रीने कहा—"हाँ, वास्तवमें बड़ा बढ़िया नाम है। स्टीपन, जाओ जल्दी करो।"

स्टीपन एक गठीले बदनका नौजवान आदमी था और प्यादेका काम करता था। आज्ञा पाते ही फ़ौरन फुलवारीकी ओर दौड़ गया और मूमूको पकड़नेकी चेष्टा करने लगा। किन्तु वह कुतिया फुर्तीसे उसके पंजेसे निकल कर और अपनी दुमको ऊपर उठाकर बड़ी तेज़ी से दौड़ती हुई जिरेसिमके पास भाग गई। उस समय जिरेसिम रसोई घरमें पानीके एक पीपेको साफ़ कर रहा था, और ऐसा दीख पड़ता था, मानो कोई लड़का छोटेसे खिलौनेको ऊपर-नीचे कर रहा हो। स्टीपन भी उस कुतियेका पीछा करता हुआ वहाँ तक पहुँच गया और जिरेसिमके पाँवके नज़दीकसे उसे पकड़ना चाहा, किन्तु उस समझदार कुतियाने एक अजनबी आदमीको अपना शरीर छुने नहीं दिया और छलांग मारकर दूर हट गई। जिरेसिम यह तमाशा देखकर मुसकरा रहा था। आखिर स्टीपन भी घबड़ाकर खड़ा हो गया और जल्दीमें इशारे-से उसने जिरेसिमको बतलाया कि गृह-स्वामिनीने कुतियेको मँगाया है। यह सुनकर जिरेसिम कुछ विस्मित-सा हुआ। फिर भी उसने मूमूको पुकारकर अपने पास बुलाया और उसे उठाकर स्टीपनके हाथ में रख दिया। स्टीपनने उसे बैठक खानेमें ले जाकर फर्शपर रख दिया। बूढ़ी स्त्री कुतियाको फुसला-फुसला कर अपने पास बुलाने लगी। मूमू, जो इस प्रकार के सजे हुए

वास्तवमें वह बहुत उद्विग्न और चिड़चिड़ी हो रही थी। दूसरे दिन सुबह उसने गवरीलाको और दिनोंकी अपेक्षा एक घंटा पहले ही बुला भेजा।

ज्योंही गवरीलाने धड़कते हुए दिलसे कमरेकी देहलीके अन्दर प्रवेश किया, त्यों ही गृह-स्वामिनीने उससे सीधे पूछना शुरू कर दिया—"कृपाकर यह तो बताओ कि वह कौनसा कुत्ता था, जो रात-भर आँगनमें भूकता रहा है? उसने मुझे सोने ही नहीं दिया!"

"कुत्ता? सरकार कौनसा—कुत्ता? सरकार शायद बहरे आदमीकी कुतिया थी।"—किसी क़दर लड़खड़ाते हुए स्वरमें उसने जवाब दिया।

"चाहे बहरे आदमीकी कुतिया हो या किसी दूसरेकी, यह तो मैं नहीं जानती, किन्तु वह मुझे सोने नहीं देती। मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि इतने कुत्ते आखिर हैं किस लिए! यही मैं जानना चाहती हूँ। हमारे चौकमें एक कुत्ता पहलेसे ही मौजूद तो है!"

"जी हाँ! एक कुत्ता है। उसका नाम 'उल्फ' है।"

"तो फिर और अधिक क्यों, हमें और कुत्तोंकी क्या जरूरत है? यह तो सिर्फ गड़बड़ी मचाना है। मालूम पड़ता है कि इस घरमें किसीका नियन्त्रण नहीं है, तभी तो ऐसा होता है। उस बहरेको कुतियाकी क्या ज़रूरत है? उसे इस चौकमें कुतिया रखनेकी इजाज़त किसने दी? कल मैं खिड़कीके पास गई थी। वहाँ फुलवारीमें वह कुतिया पड़ी हुई थी और कहींसे गन्दी चीज़ लाकर दाँतोंसे कुतर रही थी और उसी जगहपर मेरे गुलाब लगे हैं—।"

इतना कहकर वह वृद्धा रुक गई और फिर बोली—"उसे आज ही यहाँ से हटाओ, सुना न?"

"जी। हाँ।"

"आज ही। अच्छा, अभी जाओ, फिर मैं तुम्हें इसकी खबर देनेके लिए बुला भेजूँगी।" गवरीला वहाँसे चला गया।

बैठकखानेके अन्दरसे होकर जाते हुए प्रधान सेवकने चीज़ोंको ठिकानेसे रखनेके खयालसे टेबुलपर रखी हुई एक घंटीको उठाकर दूसरे टेबुलपर रख दिया। उसने अपनी बतक जैसी नाकको चुपकेसे साफ़ किया, और बाहरके बरामदेमें चला गया। वहाँ एक सन्दूकपर स्टीपन इस तरह सो रहा था, जैसे तस्वीरोंमें युद्धमें मारे हुए सिपाही पड़े रहते हैं, उसके नंगे पांव कोटके नीचे पड़े हुए थे, जो उसके कम्बलका काम दे रहा था।

प्रधान सेवकने उसे धक्का देकर जगा दिया और धीरेसे उसके कानमें कुछ आज्ञा दी, जिसका जवाब स्टीपनने कुछ जँभाई लेते हुए और कुछ हँसते हुए दिया। इसके बाद प्रधान सेवक वहाँसे चला गया। स्टीपनने उठकर अपना कोट और जूता पहना और बाहर जाकर सीढ़ीपर खड़ा हो गया। इस प्रकार पाँच मिनट भी मुश्किलसे बीते होंगे कि उसी समय जिरेसिम अपनी पीठपर चीरी हुई लकड़ियोंका एक बड़ा गट्ठर लादे हुए अपनी सतत संगिनी मूमूके साथ वहाँ आ पहुँचा। (गृह-स्वामिनीका हुक्म था कि गरमीके दिनोंमें भी उसके सोनेके कमरे और भीतरी घर कभी-कभी आग जलाकर गरम कर दिये जायँ।) जिरेसिमने दरवाज़ेपर झुककर अपने कंधेसे धक्का देकर द्वार खोल दिया और बोझा लिये हुए घरके भीतर डगमगाते हुए प्रवेश किया। मूमू, जैसा कि उसका सदासे नियम था, उसकी प्रतीक्षामें बाहर ही खड़ी रही। मौक़ा पाकर इसी समय स्टीपन उसपर एकाएक इस तरह झपटा, जैसे कि चील मुर्गीके बच्चे पर झपटती है, और उसे ज़मीन-

पर दबाकर अपनी बाहोंमें ले लिया। फिर वह अपनी टोपी सिरपर रखे बिना ही मूमूको लिये हुए भागा, और मार्गमें जो पहली भाड़ेकी गाड़ी मिली उसपर सवार होकर दौड़ा-दौड़ा बाज़ारमें पहुँचा। वहाँ उसे शीघ्र ही एक खरीदार मिल गया, जिसके हाथ उसने मूमूको दश शिलिंगमें बेंच दिया और उससे यह वादा करा लिया कि कम-से कम एक सप्ताह तक वह उसे बाँधकर रक्खेगा। इसके बाद वह फ़ौरन वापस चला आया। घर पहुँचनेके पहले ही वह गाड़ीसे उतर गया और पीछेकी गलीसे होकर जँगलेको फांदकर चौकमें दाखिल हुआ। जिरेसिमके साथ सामना हो जानेके डरसे उसने फाटककी ओरसे प्रवेश नहीं किया।

किन्तु उसकी यह चिन्ता व्यर्थ थी, क्योंकि जिरेसिम उस समय आँगन में मौजूद नहीं था। ज्यों ही जिरेसिम मालिकिनके कमरेसे बाहर निकला उसे मूमू कहीं नहीं दीख पड़ी। पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ था, क्योंकि मूमूने जिरेसिमकी प्रतीक्षामें ठहरनेमें कभी भूल नहीं की थी। जिरेसिम फ़ौरन इधर-उधर चारों ओर उसकी तलाशमें दौड़ने लगा, और उसे अपने विशेष ढँगसे पुकारने लगा। वह दौड़कर जल्दीसे अपनी कोठरीमें गया, वहाँ से घासके गोदामकी तरफ़ भागा, फिर इधर-उधर खोज करने लगा, किन्तु वह कहीं नहीं मिली। आखिर हैरान होकर उसने दूसरे नौकरोंसे निराशा-सूचक इशारोंमें मूमूकी ऊचाई, उसका डोलडौल आदि बताकर उसके सम्बन्ध में पूछताछ करनी शुरू की। उनमें कुछ तो दरहक़ीक़त मूमूके विषयमें कुछ भी नहीं जानते थे, अतएव उन्होंने उसके प्रश्नके उत्तरमें सिर्फ़ सिर हिला दिया, किन्तु दूसरे लोगोंने जो इस सम्बन्धमें जानते थे, उसकी ओर देखकर मुस्करा दिया। प्रधान सेवक गवरीलाने इस अवसरपर अपना चेहरा खूब रोबदार

बना लिया और कोचवानको डाँटने-डपटने लगा। जिरेसिम वहाँसे भागकर चौकके बाहर चला गया।

जिस समय वह लौटा, अँधेरा हो चुका था। उसकी क्लान्तिपूर्ण मुखाकृति, अस्थिर चाल और धूलभरी पोशाक देखकर यही अनुमान होता था कि उसने मूमूको तलाशमें आधे मास्को नगरकी खाक छान डाली है। गृहस्वामिनीके घरकी खिड़कीकी दूसरी ओर खड़े होकर वह सीढ़ियोंके नज़दीक, जहाँ बहुतसे नौकर इकट्ठे थे, बड़े ग़ौरसे मूमूकी खोज करने लगा। फिर उसने हताश होकर अस्पष्ट शब्दोंमें 'मूमू' नाम लेकर पुकारा, किन्तु 'मूमू' से कोई उत्तर नहीं मिला। इसके बाद वह वहाँसे चला गया। सब लोग उसकी ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। किसीके मुखपर न मुस्कराहट थी और न किसीके मुँहसे एक शब्द ही निकला। दूसरे दिन सुबह घुड़सवार एन्टिपकाने रसोईघरमें लोगोंको यह खबर दी कि बहरा जिरेसिम तमाम रात कराहता रहा है।

दूसरे दिन जिरेसिम बिलकुल ही दिखाई नहीं दिया। मजबूर होकर लोगोंने उस दिन जिरेसिमके बदलेमें गाड़ीवान पोटापको ही पानी लानेके लिए भेजा। यह बात गाड़ीवानको बिलकुल ही न भायी। गृह-स्वामिनीने गवरीलाको बुलाकर पूछा—"तुमने मेरे आदेशानुसार कार्य किया या नहीं?' गवरीलाने "हाँ" कहकर उत्तर दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल जिरेसिम अपनी कोठरीसे बाहर आया और अपने काम पर लग गया। फिर वह दोपहरको भोजन करने आया, और खाकर बिना किसीको सलाम किये ही बाहर चला गया। उसका चेहरा जो हमेशा निर्जीव-सा मालूम पड़ता था, जैसा कि सभी बहरे-गूँगोंका होता है, इस समय बिलकुल पत्थर जैसा दीख पड़ता था।

भोजन के बाद वह आँगनसे बाहर गया, किन्तु कुछ ही देर बाद फिर लौट आया और सीधे घासके मचानपर चला गया।

रात हो गई। चाँदनी छिटकी हुई थी। जिरेसिम ज़ोर-ज़ोरसे साँसें लेते हुए लगातार करवटें बदल रहा था। अचानक उसे मालूम हुआ, मानो कोई उसके कोटका दामन पकड़कर खींच रहा हो। वह भौंचकासा हो गया, किन्तु उसने अपना सिर नहीं उठाया, बल्कि और भी ज़ोरोंसे अपनी आँखें मूँद लीं। मगर फिर एक बार किसीने दामन झटका। इस बारका झटका पहलेकी अपेक्षा ज़ोरका था। वह उछलकर खड़ा हो गया। देखा कि सामने गलेमें टूटी डोरी लटकाये 'मूमू' खड़ी हुई इधर-उधर खींचातानी कर रही थी। उसके वाणी-विहीन हृदयसे एक लम्बी आनन्द-ध्वनि निकल पड़ी। उसने मूमूको पकड़कर ज़ोरसे अपनी छातीसे लगा लिया और मूमू भी उसकी नाक, आँख, दाढ़ी और मूँछ सभीको एकबारगी चाटने लगी। फिर वह खड़ा होकर एक मिनट तक कुछ सोचता रहा। इसके बाद उसने बड़ी सतर्कतासे घासके मचानसे नीचे उतरकर चारों ओर देखा, और जब इस बातका पूरा विश्वास हो गया कि कोई उसे देख नहीं सकता है, तब अपनी कोठरीकी ओर चला गया। जिरेसिमने पहले ही अनुमानसे यह समझ लिया था कि उसकी कुतिया अपने-आप रास्ता नहीं भूली है, बल्कि गृह-स्वामिनीकी आज्ञासे ही वह कहीं बाहर भेज दी गयी होगी। दूसरे नौकरोंने उसे इशारेसे बता दिया था कि मूमूने गृह-स्वामिनीपर चोट की थी, अतएव जिरेसिमने इसके लिए स्वयं कुछ उपाय करनेका निश्चय किया।

पहले तो उसने मूमूको रोटीका एक टुकड़ा खानेको दिया, उसे प्यार किया और फिर उसे बिछौनेपर सुला दिया। इसके बाद वह विचारमें

मग्न हो गया, और सारी रात इस बातके सोचनेमें ही व्यतीत कर दी कि मूमूको किस उपायसे सबसे अच्छी तरह छिपाकर रखा जा सकता है। आखिर उसने यह निश्चय किया कि उसे दिन भर कोठरीमें ही रखा जाय। वह सिर्फ कभी-कभी आकर दिनमें उसे देख लिया करेगा और रातमें उसे बाहर ले जाया करेगा। दरवाज़ेमें जो सूराख था, उसे जिरेसिमने अपने पुराने कोटसे अच्छी तरह बन्द कर दिया और पौ फटनेसे पूर्व ही चौकमें आ उपस्थित हुआ, मानो कुछ हुआ ही न हो, इस समय भी उसके चेहरेपर पहलेके समान ही उदासीके भाव मौजूद थे, किन्तु बेचारे बहरेके दिमाग़में यह बात न आयी कि मूमूकी आवाज़ ही उसके पकड़े जानेका कारण बन जायगी। वास्तवमें घरके हरएक आदमीको यह जाननेमें देर नहीं लगी कि जिरेसिमकी कुतिया वापस आ गयी है और उसकी कोठरीमें बन्द है, किन्तु कुछ तो उसके प्रति और उस कुतियाके प्रति सहानभूतिके कारण, और कुछ जिरेसिमके भयसे उन लोगोंने उसे मालूम नहीं होने दिया कि वे उसके गुप्त भेदोंको जान चुके हैं। प्रधान सेवक गवरीलाने अपना हाथ खुजलाते हुए हताशाभावसे हाथ हिलाकर कहा—"ईश्वर उसपर दया करे! यदि गृह-स्वामिनीके कानोंतक यह खबर न पहुंचे, तो ग़नीमत समझो।"

उस दिन जिरेसिमने अपना काम करनेमें जितनी फुर्ती दिखलाई, उतनी फुर्ती उससे पहले उसमें कभी नहीं पायी गयी थी। उसने समूचे चौकको झाड़कर साफ कर दिया; एक-एक काँटेको अपने हाथसे उखाड़कर फेंका और फुलवारीके घेरेकी हरएक लकड़ीको उखाड़ उखाड़कर देखा कि वे मज़बूतीसे गड़ी हुई हैं या नहीं, और फिर उन लकड़ियोंको बिना किसी दूसरेकी मददके स्वयं ही झाड़ीमें गाड़ दिया। उस दिन उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि

वृद्धा मालिकिनको भी उसके इस उत्साहका ख़बर लग गई। दिन-भरमें दो बार वह चुपकेसे जाकर अपने क़ैदीको देख आया। रात होनेपर वह मूसूको साथ लेकर अपनी कोठरीमें सोया और दो बजे रातमें उसे साथ लेकर हवा खिलानेके लिये बाहर निकला। चौक़में काफ़ी देर तक टहलानेके बाद वह लौट ही रहा था कि पीछेकी गलीकी ओर, जंगलके बाहर अचानक खड़-खड़ाहटकी आवाज़ सुन पड़ी। मूसूके कान खड़े हो गये, वह गुर्राने लगी और दौड़कर जङ्गलके पास चली गयी। वहाँ सूंघकर वह ज़ोरसे तीक्ष्ण स्वरमें भूकने लगी। कोई शराबी जङ्गलके नीचे विश्रामकी इच्छासे आ गया था। उसे देखकर ही मूसूने भूकना शुरू किया था। इसी समय उस वृद्धा स्त्रीको दीर्घकालीन क्लान्तिजनक मूर्छाके बाद नींद आयी थी। रातमें भर पेट भोजन कर लेनेपर उसे बहुधा इस प्रकारकी क्लान्तिजनित मूर्छा आ जाया करती थी। कुतियाके अचानक भूकनेसे उसकी नींद टूट गयी, उसका दिल धड़कने लगा, और बेहोशी मालूम होने लगी। उसने कातर स्वरमें चिल्लाकर दासियोंको पुकारा। वे दासियाँ डरी हुई फ़ौरन उसके कमरेमें आ पहुँची। अपनी बाँहको फेंकते हुए उसने कहा—"अरे, मैं मर रही हूँ, फिर वही कुतिया! अरे राम। अरे डाक्टरको बुलाओ। ये लोग मुझे मार डालना चाहते हैं। फिर वही कुतिया! हाय!" इतना कहकर वह सिरके बल लुढ़क गयी, मानो उसे मुर्छा आ गई हो। नौकर लोग डाक्टरको बुलानेके लिये दौड़ पड़े—डाक्टर यानी गृह-चिकित्सक हेरीटन। इन डाक्टर महाशयकी जो योग्यता थी, वह इतनी ही थी कि वे मुलायम तल्लेके जूता पहना करते थे और बड़ी कोमलतासे नाड़ी देखना जानते थे। आप चौबीस घण्टेमें चौदह घण्टे सोया करते थे और बाकी समयमें आहें भरा

करते थे, और उस वृद्धाको शर्वतको बूँदोंकी खुराकें लगातार पिलाते रहते थे। खबर पाते ही वे फ़ौरन दौड़कर वहाँ पहुँचे और कमरेमें धूप जलाई। इसके बाद वृद्धाकी आँखें खुलनेपर फ़ौरन चांदीकी तश्तरीमें शराबका प्याला रखकर उसे पीनेको दिया। शराब पी चुकनेपर वृद्धाने आँखोंमें आँसू भरकर फिर तुरन्त उस कुतियाको, गवरीलाको और अपने भाग्यको कोसना शुरू कर दिया, वह कहने लगी—"अरे इस बुढ़ियाकी कौन खबर लेता है, कौन मेरी अवस्थापर तरस खाता है? हरएक आदमी यही चाहता है कि किसी प्रकार बुढ़िया जल्दी मरे।" इधर वह ये बातें कह रही थी, और उधर अभागी मूमूका भूकना भी बन्द नहीं हुआ था। जिरेसिम उसे घेरेके पाससे चले आनेके लिए बारबार पुकार रहा था, किन्तु उसकी वह चेष्टा व्यर्थ होती थी। भूकनेकी आवाज़ सुनकर वृद्धा कराहती हुई आवाज़में चिल्ला उठी,—"अरे देखो, वह फिर भूक रही है!" एक बार फिर उसने अपनी आँखोंकी पुतलियाँ ऊपरको चढ़ा लीं। डाक्टरने एक दासीके कानमें चुपकेसे कुछ कहा। वह दौड़कर बाहरके बरामदेमें गई और स्टीफनको जगा दिया। स्टीफनने दौड़कर गवरीलाको जगाया और गवरीलाने गुस्सेमें आकर उस घरमें रहनेवाले सभी आदमियोंको जगा देनेका हुक्म दिया।

जिरेसिमने फिरकर देखा। खिड़कीके पास रोशनी और चलते-फिरते लोगोंकी छाया देखकर उसके दिलमें किसी भावी उपद्रवकी आशंका उत्पन्न होने लगी। इस आशंकासे भयभीत होकर वह मूमूको अपनी बगलमें दबाकर झटसे अपनी कोठरीके अन्दर चला गया और भीतरसे दरवाज़ेको बन्द कर लिया। कुछ मिनटोंके बाद पाँच मनुष्य वहाँ पहुँचकर दरवाज़ेमें धक्का मारने लगे, किन्तु भीतरसे चिटकनी लगी हुई जानकर वे रुक गये। गवरीला

भयग्रस्त चित्तसे वहाँ दौड़कर गया और उन लोगोंसे सुबह तक वहाँ ठहरे रहने और प्रतीक्षा करने के लिए कहा। फिर वह दासियोंके घरकी ओर दौड़कर गया और अपनी एक पुरानी साथिनके द्वारा जिसकी सहायतासे वह चाय, चीनी और किरानेकी दूसरी चीज़ें चुराया करता था और झूठा जमा-खर्च किया करता था, गृह-स्वामिनीको यह संवाद भिजवा दिया कि दुर्भाग्य-वश कुतिया कहींसे वापस चली आई है, किन्तु कल वह मार डाली जायगी। आप कृपाकर नाराज़ न हों और इस बातको तरह दे जायँ। वृद्धा शायद इतनी जल्दी शान्त न हुई होती, यदि डाक्टर उसे बारह बूँदके बदलेमें चालीस बूँद दवाकी ख़ुराक़ न दे देता। उस नींद लानेवाली नशीली दवा की ख़ुराक़ काम कर गई और वृद्धा पौन घंटेमें ही गाढ़ी और निश्चिन्त नींदमें सो गई। इधर जिरेसिम मूमूके मुँहको कसकर बन्द किये हुए उदास-भाव से बिछौनेपर पड़ा था।

दूसरे दिन सवेरे वृद्धा देरसे सोकर उठी। गवरीला जिरेसिमके दुर्गपर अन्तिम आक्रमण करनेकी आज्ञा देनेके लिए गृह-स्वामिनीके जगनेकी प्रतीक्षा कर रहा था और ख़ुद भी उसके क्रोधका सामना करनेके लिए तय्यार हो रहा था। किन्तु उसे यह मौक़ा ही नहीं आया। वृद्धाने बिछौनेपर पड़े-ही-पड़े अपने आश्रित मुख्य अनुचरोंको बुला भेजा। उसके आनेपर उसने दबी हुई कमज़ोर आवाज़में, किसी अनाश्रित एवं पीड़ित व्यक्तिकी तरह, जिसका बहाना करना वह ख़ूब जानती थी और ऐसे अवसरोंपर उसका यह रुख घरके प्रत्येक आदमीको अत्यन्त अप्रीतिकर मालूम पड़ता था, कहना शुरू किया—"ल्यूबो ल्यूबीमोवना, तुम मेरी स्थिति देख ही रही हो। गवरीलाके पास जाओ और ज़रा उससे बातें करो। क्या वह सचमुच उस नीच

कुतियाको अपनी मालिकिनके आरामसे—आराम क्या, ज़िन्दगीसे—बढ़कर समझता है? मैं तो ऐसा खयाल नहीं कर सकती।" उसने गम्भीर-भाव व्यक्त करते हुए कहा—"जाओ प्यारी! कृपाकर मेरे लिए गवरीलाके पास जानेकी कृपा करो।"

ल्यूबी गवरीलाके कमरेमें गई। वहाँ इन दोनोंमें क्या बातें हुईं, यह तो मालूम नहीं, किन्तु उसके थोड़ी देरके बाद ही चौकमें लोगोंका एक झुण्ड जिरेसिमकी कोठरीकी तरफ़ जाता हुआ देख पड़ा। गवरीला इस झुण्डके आगे-आगे हाथमें टोपी लिये हुए जा रहा था। प्यादे और रसोइया लोग उसके पीछे-पीछे जा रहे थे। टेल वाका खिड़कीके अन्दरसे झाँकते हुए हिदायत कर रहे थे, यानी सिर्फ़ हाथ हिला रहे थे। झुण्डके पीछे-पीछे छोटे-छोटे बालकोंका समूह उछलता-कूदता हुआ आ रहा था। कोठरीकी तरफ़ जानेवाली तंग सीढ़ीपर एक पहरेवाला बैठा हुआ था और दरवाज़ेपर दो आदमी लाठी लिये खड़े थे। वे लोग सीढ़ियोंपर चढ़ने लगे, जिससे रास्ता बिलकुल बन्द हो गया। गवरीला दरवाज़ेके पास जाकर घूँसेसे धक्का मारते हुए बोला—"दरवाज़ा खोलो।" केवल कुतियाकी भूकनेकी आवाज़ सुनाई पड़ी, किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला।

फिर उसने दुहराते हुए कहा—"दरवाज़ा खोलो, मेरा हुक्म है।" कीसेरि स्टॉपनने कहा—"गवरीला, अरे भाई वह तो बहरा है, वह क्या सुन सकता है?" इसपर सभी लोग हँस पड़े। फिर गवरीलाने ज़ोरसे पूछा—"तब फिर क्या करें?" "दरवाज़ेमें एक सूराख़ है, उसीमें लाठी डालकर क्यों नहीं घुमाते?" स्टॉपनने जवाब दिया। गवरीलाने वैसा ही किया। "मालूम होता है, उसमें बोल्ट था और किसी चीज़से मज़बूती

बन्द कर दिया है।" "तो फिर कोटको अन्दर क्यों नहीं ठेल देते?" इसी समय दबी हुई आवाज़में फिर भूकना सुन पड़ा।

"देखो, देखो, वह बोल रही है", उस झुण्डमेंसे किसीने कहा, और फिर सब हँसने लगे। गवरीला अपना कान खुजलाने लगा।

आखिर उसने जवाब दिया—"नहीं भाई, अगर तुम चाहो, तो तुम ही उस कोटको भीतर ठेल सकते हो।"

"बहुत अच्छा, मुझे ही कोशिश करने दो।"

स्टीपन उछलकर वहाँ पहुँचा और लाठी लेकर कोटको भीतर ठेल दिया और सूराखमें लाठी डालकर घुमाते हुए कहने लगा—"चले आओ, बाहर चले आओ।" वह छड़ी घुमा ही रहा था कि इतनेमें अचानक कोठारीका दरवाज़ा खुल गया। जितने लोग वहाँ एकत्र हुए थे, सब हड़बड़ाकर सीढ़ी के नीचेकी ओर भाग खड़े हुए। भागनेवालोंमें गवरीला सबसे आगे था। टेल काकाने भी खिड़की बन्द कर ली।

चौकसे चिल्लाकर गवरीला बोला—"चले आओ, चले आओ, तुम्हें खयाल नहीं है कि क्या कर रहे हो!"

जिरेसिम बिना टस-से-मस हुए दरवाज़ेपर ही खड़ा रहा। लोगोंका झुण्ड सीढ़ीके नीचे इकट्ठा हो गया। जिरेसिम अपनी बाँह कूल्हेपर रखे हुए नीचे उन अभागे आदमियोंको देख रहा था। किसानोंकी लाल कमीज़ पहने हुए जिरेसिम उन लोगोंके सामने दानवतुल्य प्रतीत हो रहा था। गवरीला एक क़दम आगे बढ़ा और बोला—"देखो भाई, ढिठाई मत करो। फिर उसने इशारोंसे उसे समझाना शुरू किया कि गृह-स्वामिनी तुम्हारी कुतिया लेनेके लिए ज़ोर दे रही है। इसलिए तुम फ़ौरन उन्हें कुतिया सौंप दो, नहीं तो इसका नतीजा तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा।

जिरेसिमने उसकी ओर देखकर कुतियाकी ओर बतलाते हुए अपनी गर्दनके चारों तरफ हाथका इस तरह इशारा किया, मानो वह फांसी लगा रहा हो। इसके बाद वह गवरीलाकी ओर मुखातिब होकर देखने लगा।

गवरीलाने सिर हिलाते हुए अपनी मंजूरी ज़ाहिर की, और कहा—"हां, हां, ठीक-ठीक ऐसा ही करना है।"

जिरेसिमने अपनी आंखें नीची कर लीं, और फिर एकाएक उठकर मूमू की ओर इशारा किया। मूमू उसके पास खड़ी हुई अपनी दुम हिला रही थी और इस तरह कान खड़े किये हुए थी, मानो वह कुछ जानना चाहती हो। इसके बाद जिरेसिमने अपनी गर्दनकी चारों तरफ़ फांसी लगानेकी तरह फिर इशारा किया, और अपनी छाती ठोंकने लगा। उसकी यह भाव-भंगी मानो इस बातकी घोषणा कर रही थी कि वह मूमूको मार डालनेका काम अपने ऊपर ही लेना चाहता है।

"लेकिन तुम हम लोगोंको धोखा दोगे"—गवरीलाने हाथ हिलाकर इशारेसे जवाब दिया।

जिरेसिम उसकी ओर देखकर घृणाके साथ मुस्करा दिया, और फिर अपनी छाती ठोंककर ज़ोरसे दरवाज़ा बन्द कर लिया।

जितने लोग वहांपर एकत्रित थे, सब सन्नाटेमें आकर एक दूसरेकी ओर देखने लगे।

गवरीला बोला—"आखिर इसने कहा क्या? इसका मतलब क्या है? यह तो भीतर जाकर बन्द हो गया!"

स्टीपनने सलाह देते हुए कहा—"गवरीला, भीतर चले जाने दो; उसने जो वादा किया है, उसे वह पूरा करके ही छोड़ेगा। तुम जानते ही हो

कि वह इसी तरहका आदमी है। अगर कभी वह कोई प्रतिज्ञा कर
तो वह प्रतिज्ञा उसके लिए एक खास बात हो जाती है। अपनी प्र
पूरी करनेमें वह हम लोगों जैसा या दूसरे लोगों जैसा नहीं है। उसके
सत्य ही सत्य है। सचमुच वह ऐसा ही है।"

यह सुनकर सब लोग सिर हिलाते हुए उसी बातको दोहराने ल
"हाँ, ठीक है, वह बिलकुल ऐसा ही है।"

टेल काका भी खिड़की खोलकर बाहर आये और सब लोगोंके साथ
हाँ मिलाने लगे।

"हाँ, हो सकता है, खैर, देखेंगे,"—गवरीलाने उत्तर दिया—"
किसी भी हालतमें हम पहरेवालेको यहाँसे हटायेंगे नहीं।" फिर उसने
गरीब आदमीको, जो अपनेको बाघवान समझता था, सम्बोधन करते
कहा—"इरोशका, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? एक लाठी ले लो
यहाँ बैठ जाओ, यदि कोई घटना हो, तो मेरे पास फ़ौरन दौड़कर आना

इरोशका एक लाठी लेकर सबसे नीचेकी सीढ़ीपर बैठ गया। लोगों
झुण्ड तितर-बितर हो गया। सिर्फ़ कुछ लड़के वहाँ कौतूहलवश रह
थे। उधर गवरीलाने घर पहुँचकर ल्यूबी द्वारा गृह-स्वामिनीको सम्वाद
दिया कि सब-कुछ ठीक हो गया है, और इसके साथ-ही-साथ पुलिसके
आदमीको बुला लानेके लिए घुड़सवार भी भेज दिया है। उस वृद्धा
अपने रूमालमें गाँठ बाँधकर उसपर यू डी कलोन छिड़का, उसे सूँघा,
फिर उससे अपनी पेशानी पोंछी। इसके बाद उसने थोड़ीसी चाय पी।
समय भी उसे दवाका नशा चढ़ा हुआ था, इस कारण वह फिर सो गई।

इस गोलमालके खतम होनेके एक घंटा बाद जिरेसिमको कोठरीका दर

वाज़ा खुला, और वह बाहर आया। उस समय वह अपना बढ़िया कोट पहने और हाथमें मूसूके गलेकी डोरी पकड़े हुए था। वहाँसे किनारे हटकर इरोशकाने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। जिरेसिम फाटकके समीप पहुँचा। वहाँपर जितने लड़के थे, सभी उसकी ओर चुपचाप घूरने लगे। उसने पीछे फिरकर देखा तक नहीं, और सड़कपर पहुँचकर अपनी टोपी पहन ली। गवरीलाने इरोशकाको उसके पीछे-पीछे जानेके लिए और जासूसकी तरह उसपर नज़र रखनेके लिए कहा। इरोशका दूरसे ही जिरेसिमको कुतियाके साथ एक हल्वाईकी दुकानमें जाते हुए देखकर उसकी प्रतीक्षामें वहीं ठहर गया। दूकानवाले जिरेसिमसे पूर्ण परिचित थे, और उसके इशारेको समझते थे। उसने शोरवा और उसके साथ मांस माँगा, और वहीं टेबुलपर बाँह फैलाकर बैठ गया। मूमू उसकी कुरसीको बगलमें खड़ी हुई उसकी ओर धीर-भावसे देख रही थी। उसके शरीरकी उस समयकी चिकनाहट देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो उसपर अभी ब्रश फेरा गया हो। दूकानवालोंने शोरवा लाकर जिरेसिमके सामने रख दिया। उसने शोरवेमें कुछ रोटी भिगो दी, मांसके छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये, और थालीको ज़मीनपर रख दिया। मूमू अपनी आदतके अनुसार अच्छे ढंगसे खाने लगी। जिरेसिम बड़ी देर तक उसकी ओर टकटकी बाँधे हुए देखता रहा। अचानक उसकी आँखोंसे आँसूकी दो बड़ी-बड़ी बूँदें टपक पड़ीं। उनमें से एक तो मूमूकी भौंपर गिरी और दूसरी शोरवेमें। जिरेसिमने अपने हाथोंसे अपना मुँह ढक लिया। मूमू आधी थाली खाकर ओठ चाटती हुई वहाँसे चली आई। जिरेसिम उठा और शोरवेका दाम देकर

और उसके सामनेसे निकल जानेपर फिर उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

जिरेसिम मूमूके गलेकी डोरी पकड़े हुए धीरे-धीरे जा रहा था। गलीकी मोड़पर पहुँचकर वह चुपचाप इस तरह खड़ा हो गया, मानो वह कुछ सोच रहा हो। फिर वहाँसे एकाएक तेज़ीसे क़दम बढ़ाते हुए क्रिमियन घाटकी ओर रवाना हुआ। रास्तेमें वह एक मकानके चौकमें गया, जहाँ एक छोटा-सा कमरा बन रहा था। वहाँसे दो ईंटें उठाकर अपने साथ लेता गया। क्रिमियन घाटके पास पहुँचकर वह नदी-तटकी ओर मुड़ा और एक ऐसे स्थानपर पहुँचा, जहाँ दो छोटी-छोटी डोंगियाँ बँधी हुई थीं। उन डोंगियोंमें से एकपर वह मूमूके साथ उछलकर सवार हो गया। इतनेमें पासकी एक झोंपड़ीसे एक लंगड़ा बुड्ढा आदमी उसे देखकर चिल्ला उठा, किन्तु जिरेसिमने उसके जवाबमें सिर्फ सिर हिला दिया और इतने ज़ोरसे डाँड़ चलाने लगा कि देखते-ही-देखते वह, प्रवाहके विरुद्ध चलनेपर, भी दो सौ गज़ आगे निकल गया। वह बुड्ढा कुछ देर तक खड़ा-खड़ा पहले दाएँ हाथसे और फिर बाएँ हाथसे अपनी पीठ खुजलाता रहा, इसके बाद लँगड़ाता हुआ झोपड़ीमें चला गया। जिरेसिम नाव खेता ही जा रहा था। शीघ्र ही मास्को नगर पीछे छूट गया। नदी-तटके दोनों ओर हरे-हरे मैदान, बाग़, खेत और जंगल फैले हुए थे। इन सबको पार करनेके बाद किसानोंके झोपड़े दिखाई देने लगे। इस समय देहातकी स्वच्छ वायुकी सुगन्ध पवनके साथ आ रही थी। जिरसिमने डाँड़ हाथसे नीचे रख दिये, और मूमूके पास झुककर निश्चल-भावसे खड़ा हो गया। चूँकि नावकी पेंदीमें पानी भर आया था, इसलिये ८ उसके सामने एक सूखी जगहपर बैठी हुई थी। जिरेसिम अपने मजबूत

हाथोंसे मूमूकी पीठको पकड़े हुए था, और डोंगी नदीके प्रवाहके सहारे धीरे-धीरे नगर की ओर चली जा रही थी। इसके बाद वह जल्दीसे उठ बैठा। उसके चेहरेपर उस समय दुःखपूर्ण क्रोधका भाव साफ़-साफ़ झलक रहा था। उसने ईंटोंको, जिन्हें वह अपने साथ लेता आया था, डोरीमें बाँध दिया, और उस डोरीको फाँसीकी तरह बनाकर मूमूके गलेमें डाल दिया। फिर उसने उसे इसी हालतमें नदीके जलके ऊपर उठाकर अन्तिम बार उसकी ओर देखा......मूमू भी बिना किसी आशंकाके विश्वासभरी दृष्टिसे उसे निहार रही थी, और बहुत आहिस्ते-आहिस्ते अपनी दुम हिला रही थी। जिरेसिमने उधरसे अपना मुँह फेर लिया, उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं और वह अपने हाथों-को मलने लगा। मूमूके धारामें गिरनेसे जिरेसिमको न तो उसके चीखनेकी तीक्ष्ण आवाज़ सुनाई पड़ी और न पानीका फचाका शब्द ही मालूम पड़ा, क्योंकि उसके लिए तो अधिक-से-अधिक कोलाहलपूर्ण दिन भी उतना ही शान्त एवं निस्तब्ध था, जितनी निःशब्द हम लोगोंके लिए शान्त रात्रि भी नहीं हो सकती। फिर जब जिरेसिमकी आँखें खुलीं, उस समय छोटी-छोटी जल-तरंगें धाराके ऊपर एक दूसरेके पीछे दौड़ रही थीं, और पहलेके समान ही डोंगीकी बगलसे टकराकर विलीन हो जातीं और फिर गोलाकार चक्करके रूपमें विस्तृत होकर किनारेसे मिल जाती थीं। इरोशकाके दृष्टिपथसे जिरे-सिमके ओझल होते ही वह लौटकर घर वापस आया और उसने जो कुछ देखा था, उसे कह सुनाया। इसपर स्टीपन तुरन्त बोल उठा—"तब तो वह उसे नदीमें डुबा देगा। हमें इस सम्बन्धमें निश्चिन्त हो जाना चाहिये। अगर वह कोई काम करनेकी प्रतिज्ञा एक बार भी कर लेता है, तो......"

दिनभर जिरेसिमको किसीने नहीं देखा। दोपहरका भोजन भी उसने

घरपर नहीं किया। सन्ध्या होनेपर जब सब लोग रात्रिका भोजन करने बैठे उस समय भी जिरेसिमका पता नहीं था।

"जिरेसिम भी देखो कैसा अजीब आदमी है!" वहाँ बैठी हुई एक मोटी धोबिन बोल उठी—"भला सोचो तो सही, एक कुत्तेके लिए ही वह इतना व्यस्त हो रहा है! ऐ मेरी मैय्या!"

"किन्तु जिरेसिम तो अभी-अभी यहाँपर ही था," स्टीपनने चमचेसे लपसी उठाते हुए फ़ौरन चिल्लाकर कहा।

"कब, कहाँ?"

"अभी दो घण्टे पहले तो वह यहींपर ही था। हाँ, सिर्फ दो ही घण्टे पहले! मैं दौड़कर उसके साथ फाटक तक गया था। वह आँगनसे निकलकर बाहर जा रहा था। मैंने कुतियाके विषयमें उससे पूछनेकी कोशिश की, किन्तु ऐसा जान पड़ा कि उस समय उसकी तबीयत अच्छी नहीं थी। उसने मुझे धक्का दिया, जिसका अभिप्राय मेरी समझमें यह था कि वह मुझे अपने मार्गसे अलग करके यह कहना चाहता था कि मुझे जाने दो। किन्तु उसके उस मामूलीसे धक्केसे ही मेरी गर्दनपर इतने ज़ोरकी चोट लगी कि क्या कहूँ?" इतना कहकर स्टीपन अपनी हँसी न रोक सका और अपना कन्धा सिकोड़कर सिरका पिछला हिस्सा खुजलाने लगा। फिर उसने कहा—"इसमें सन्देह नहीं कि उसके घूँसे उसके ही अनुरूप होते हैं।"

स्टीपनके इस कथनपर सब लोग हँस पड़े। भोजन समाप्त होनेपर वहाँसे वे लोग एक दूसरेसे जुदा हुए और सोने चले गये।

इसी समय एक विशालकाय व्यक्ति अपने कन्धेपर एक थैला रखे हुए और हाथमें लाठी लिये हुए राजमार्गसे होकर उत्कण्ठापूर्वक दृढ़ताके साथ

क़दम बढ़ाते हुए चला जा रहा था। यह व्यक्ति जिरेसिमके सिवा और दूसरा कोई न था। वह इधर-उधर न देखकर शीघ्रतापूर्वक अपने घरकी तरफ बढ़ता जा रहा था। बेचारी मूमूको डुबा देनेके बाद वह दौड़ता हुआ अपनी कोठरीमें पहुँचा, और वहाँ जल्दीसे कुछ चीजोंकी गठरी बाँधकर उसे अपने कन्धेपर रख लिया और जानेके लिये तैयार हो गया।

जिस समय वह देहातसे मास्को लाया गया था, उसने ध्यानपूर्वक सड़कको पहचान लिया था। जिस गाँवसे उसकी स्वामिनीने उसे मँगवाया था, वह गाँव राजपथसे सिर्फ बीस मीलकी दूरीपर था। उस सड़कसे होकर वह किसी अटल उद्देश्य तथा भयविहीन और आनन्दपूर्ण संकल्पको लेकर चला जा रहा था। चलते समय उसके कन्धे पीछेकी ओर झुके हुए, छाती आगेको तनी हुई और उसकी आँखें सीधे सामने गड़ी हुई थीं। वह इस प्रकार जल्दीमें जा रहा था, मानो उसकी बूढ़ी माँ घरपर उसकी प्रतीक्षा कर रही हो, और उसके इतने दिनों तक नई-नई जगहोंमें अजनबी आदमियोंके बीच घूमनेके बाद, उसे अपने पास मिलानेके लिए बुला रही हो। ग्रीष्मऋतुकी शान्त तथा उष्ण रात्रि अभी शुरू ही हुई थी। एक ओर पश्चिम दिशामें जिधर सूर्य अस्त हुआ था, आकाश अब भी प्रकाशमान था और अस्तंगत दिवाकरकी अन्तिम चमकके कारण उसमें कुछ-कुछ लाली वर्तमान थी। दूसरी ओर नीले और भूरे रंगकी संध्या प्रकट हो चुकी थी। उधरसे ही रात्रिका आगमन हो रहा था। चारों ओर सैकड़ों बटेर और नाना भाँतिके पक्षी झाड़ियोंमें चहचहा रहे थे। जिरेसिम उन चिड़ियोंकी आवाज़को तथा रातमें वृक्षोंकी कोमल सनसनाहटको, जिनके पाससे होकर वह तेज़ीसे गुज़र रहा था, नहीं सुन सका। किन्तु खेतोंसे आनेवाली पकती हुई सरसोंकी

गन्ध जिससे वह पूर्ण परिचित था, उसे मालूम पड़े बिना न रही। उसके घरकी ओरसे आती हुई हवा उसे ऐसी मालूम पड़ी, मानो उससे मिलनेके लिए उड़ती हुई आ रही हो। वह हवा प्यारके साथ उसके चेहरेपर होती हुई, उसके बालों और उसकी दाढ़ीके साथ अठखेलियाँ खेल रही थी। आकाशमें उगे हुए असंख्य तारागणोंको उसने देखा, मानो वे उसे मार्ग दिखा रहे थे। इसप्रकार सिंह जैसा शक्तिशाली एवं साहसी जिरेसिम उस समय भी आगे बढ़ा जा रहा था, जब कि पूर्वाकाशमें उदित होनेवाला सूर्य अपनी आर्द्र गुलाबी किरणें उस अथक यात्रीपर ढाल रहे थे। अब तक वह मास्कोसे तीस मील आगे पहुँच चुका था।

दो दिनमें ही वह अपनी छोटी कुटियापर पहुँच गया। एक सिपाहीकी स्त्री जो उस झोपड़ीमें रखी गई थी—उसे वहाँ आया देखकर—आश्चर्यमें पड़ गई। देवताओंके पवित्र चित्रके सामने प्रार्थना करनेके बाद, वह फ़ौरन ही ग्रामके प्रधानसे मिलनेके लिए रवाना हुआ। गाँवका प्रधान पहले तो उसे देखकर आश्चर्यचकित हो गया; घासकी कटनी अभी शुरू ही हुई थी, जिरेसिम प्रथम श्रेणीका घास काटनेवाला था। लोगोंने वहीं उसके हाथमें एक हँसुआ थमा दिया और उसने पहले जैसा ही काटना शुरू कर दिया। एक बारमें उसे दूर तक हँसुआ चलाते हुए और घासके अंबारके अंबार लगाते देखकर किसान लोग हैरान हो गये।

मास्कोसे जिरेसिमके भागनेके दूसरे दिनसे लोगोंको उसका पता नहीं चला। वे लोग पहले उसकी कोठरीमें गये और सब जगहों पर उसे छान डाला। इसके बाद गवरीलासे जाकर उसके लापता होनेकी खबर की। गवरीला वहाँ आया और इधर-उधर देखकर कन्धा सिकोड़ते हुए इस परिणामपर

पहुँचा कि या तो वह बहरा कहीं भाग गया है अथवा अपनी बेहूदी कुतियाके साथ डूब मरा है। इस सम्बन्धमें उनलोगोंने पुलिसको खबर दी और गृह-स्वामिनीको भी सूचित किया। वृद्धा इस समाचारको सुनकर बड़ी नाराज़ हुई और फूट-फूटकर रोने लगी। उसने आज्ञा दी कि चाहे जो कुछ हो, जिरेसिमका पता लगाया जाय, और यह भी कहा कि उसने कुतियाको मार डालनेकी आज्ञा कभी नहीं दी थी। इसके लिये उसने गवरीलाको ऐसी झिड़की दी कि उसने उस दिन सिर हिलाने और कुढ़ते रहनेके सिवा और कुछ नहीं किया। आखिरकार जब देहातसे जिरेसिमके गांवमें रहनेकी खबर वृद्धाके कान तक पहुँची, तब वह कुछ शान्त हुई। पहले तो उसने यह हुक्म जारी किया कि जिरेसिमको फ़ौरन मास्को लाया जाय, किन्तु इसके बाद उसने फिर कहा कि उसके जैसा कृतघ्न आदमी मेरे लिए बिलकुल बेकाम है। इसके कुछ ही दिनों बाद वह मर गई, और उसके उत्तराधिकारियोंको जिरेसिमकी क्या फ़िक्र पड़ी थी! उन लोगोंने अपनी मांके दूसरे नौकरोंको भी उनसे वार्षिक कर लेकर स्वतन्त्र कर दिया।

जिरेसिम अब भी अपनी एकान्त झोपड़ीमें एकान्त जीवन व्यतीत कर रहा है। वह पहलेके समान ही मज़बूत और स्वस्थ है। अब भी अकेले चार आदमियोंका काम कर लेता है, और उसका स्वभाव पूर्ववत् गम्भीर एवं शान्त है। उसके पड़ोसियोंका अनुभव है कि जबसे वह मास्कोसे वापस आया है, उसने स्त्रियोंकी संगति बिलकुल छोड़ दी है, वह उनकी ओर देखता तक नहीं। इसके सिवा वह कुत्तोंको भी अपने पास नहीं आने देता था। किसान लोग जब बैठते हैं, तो प्रायः उसके विषयमें बातें करते हुए कहते हैं—"जिरेसिमका यह सौभाग्य है कि वह स्त्रियोंकी संगतिके बिना भी

अपना जीवन चला सकता है, और रही कुत्तेकी बात, सो कुत्ता पालनेकी उसे ज़रूरत ही क्या है ? रुपये देनेपर भी कोई ऐसा चोर नहीं मिलेगा, जो उसके चौकमें उसकी कोई चीज़ चुरानेके लिए जा सके !" उस बहरेकी प्रचण्ड शक्तिकी ऐसी ही ख्याति है ।

शीतऋतुमें एक दिन देशके किसी सुदूर प्रान्तसे लौटते हुए मुझे ज़ुकाम हुआ, और मैं बीमार पड़ गया। खैरियत यह हुई कि ज़िलेके सदर-मुकामके होटलमें मुझे बुखार आया था। डाक्टरको बुला भेजा। आधे घंटेमें वह आ पहुँचा। मामूली क़दका, काले बालोंवाला, दुबला-पतला आदमी था। उसने वही पुरानी पसीना लानेवाली दवा और पलास्टरका नुस्खा लिख दिया, और अपनी आस्तीनमें बड़ी फुर्तीसे पाँच रूबलका नोट खोंस लिया। वह बाहरकी ओर देख-देखकर खाँसता भी जाता था। एक बार वह घर जानेके लिए उठकर खड़ा भी हुआ, पर बातोंमें फँसकर वहीं बैठ गया। बुखारसे मैं चूर-चूर हो रहा था, मालूम होता था कि रातको नींद न आयगी, इसलिए एक विनोदी संगीसे गपशप करनेको जी भी चाहता था। चाय ढाल दी गई। मेरा डाक्टर भी जी खोलकर बातचीत करने लगा। वह समझदार आदमी था, और उसकी बातोंमें परिहास और उत्साहकी भी पुट थी। संसारमें भी बहुतसी अनोखी बातें होती हैं। कुछ आदमियोंके साथ चाहे आप घुल-मिलकर वर्षों बितादें, लेकिन उनके आगे एक बार भी आप दिलकी कुंडी नहीं खोलते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिनसे जान-पहचान होते ही हम एकाएक अपना दिल एक दूसरेके आगे खोलकर रख देते हैं, जैसे किसी पादरीको जीवन-कहानी सुना रहे हों।* कह नहीं सकता कि इस नये मित्रको मुझपर विश्वास कैसे हो गया। मैंने तो ऐसी कोई बात न की थी,

---

* कनफेशन—रोमन कैथलिक ईसाई जीवनके अवसानकालमें किसी पादरीको अपने पाप-पुण्यका सच्चा व्योरा सुना देनेमें मुक्ति समझते हैं।

फिर भी उसने मुझे एक अद्भुत घटना कह सुनाई, जिसे अपने उदार पाठकोंके मनोरंजनके लिए डाक्टरके ही शब्दोंमें ज्योंका त्यों कह सुनाता हूँ।

उसने अपनी कहानी कमज़ोर और काँपती हुई आवाज़में शुरू की। कड़ी नास सूँघते रहने का यही परिणाम होता है। "यहाँके जज मिलोव पेवेल लूकिचको भला तुम क्या जानते होगे? नहीं जानते? खैर जानो चाहे न जानो।" (खाँस-खखारकर उसने आँखें भी मल डालीं) "अच्छा, तो बिना किसी लाग-लपेटके तुम्हें सारी घटना सुना दूँगा। लेन्टपर्वमें बर्फ़ पिघलते समय उसका सूत्रपात हुआ। हमारा जज बड़ा अच्छा आदमी है, प्रिफरेन्स × खेलनेका बड़ा शौक़ीन। हमलोग खेल रहे थे। अकस्मात्—" (यह शब्द डाक्टरका 'तकियाकलाम' था) "अकस्मात् लोगोंने बताया कि मुझे किसीका नौकर तलाश कर रहा है—'वह क्या चाहता है?' 'एक चिट्ठी लाया है, किसी रोगीकी ही होगी?' मैंने कहा—'लाइये तो वह पुर्ज़ा, रोगीका ही है न! तब क्या कहते हैं, अरे यारो, यही तो मेरी जीविकाका सहारा है।' लेकिन बात कुछ और ही निकली; एक विधवा महिलाने लिखा था—'मेरी लड़की मर रही है। ईश्वरके लिए अवश्य आइये। आपके लिए सवारी भेजी जा रही है।' यहाँ तक तो सब ठीक था। लेकिन वह शहर से २० मील दूर रहती है। घरके बाहर आधी रातके वक्त, ऐसी दुर्गम सड़कपर सफ़र, तोबा-तोबा! तिसपर वह ग़रीब भी थी, इसलिए चाँदीके दो रूबलसे अधिककी आशा न थी और इसका भी भरोसा न था। सम्भव है कि फ़ीस रूखे-सूखे भोजन और मोटे-झोटे

× ताशका एक खेल।

कपड़ोंके रूपमें दे दी जाय, तथापि तुम जानते हो कि कर्तव्यका पालन पहले होना चाहिए। रोगी कहीं मर गया तो ! प्रान्तीय कमीशनके मेम्बर केलोपीनको अपने हाथ के पाश देकर मैं घर लौटा, तो क्या देखा कि किसानोंके मोटे-ताजे घोड़े—अजी, बहुत ही मोटे—एक जीर्ण-शीर्ण पिंजरानुमा गाड़ीमें जुते हुए खड़े हैं। घोड़ोंका चारजामा भी फटा-पुराना था। कोचवान सम्मान-प्रदर्शनके लिए टोपी उतार कर बैठा हुआ था। मैंने मन ही-मन कहा—'सुन लो भइया, यह रोगी मालदार तो हर्गिज़ नहीं है।' तुम मुसकुरा रहे हो, लेकिन मुझ-जैसे ग़रीब आदमी को पहलेसे ही सब ऊँच-नीच सोच लेना पड़ता है। अगर कोचवान साहब रईसी ठाटसे बैठे हों, सलाम करना तो दूर रहा, दाढ़ीकी आड़में मुँह चिढ़ाये और चाबुक दिखायें, तब तो शर्तिया छै रुबल फ़ीस मिल सकती है। लेकिन यह मामला तो बिलकुल ही उलटा था। फिर भी मैंने विचारा कि कर्तव्य-पालन पहले होना चाहिए, इसका इलाज ही क्या ? ज़रूरी दवाओं को लेकर चल पड़ा। नरकका मार्ग यही होगा। नदी, नाले, निर्भर सब तो भर ही आये थे, पर कमबख्त बाँध भी एकाएक टूट गया था, यह बड़ी मुसीबत थी। येनकेन प्रकारेण मैं ठिकाने पर पहुँच ही गया। फूसके छप्परका एक छोटासा घर था। खिड़कियोंसे रोशनी छन रही थी, जिससे प्रकट था कि वे लोग मेरी बाट जोह रहे थे। एक बड़ी भलोमानस बूढ़ी औरतने मेरा स्वागत किया। वह टोपी पहने हुई थी। 'वह मर रही है, उसे बचाइये—'वह चीख उठी।

मैंने कहा—'घबराइये नहीं, रोगी किधर है ?'

'इस ओर आइये।'

मैं एक छोटेसे साफ़ सुथरे कमरेमें पहुँचा। कमरेमें एक लैम्प टिमटिमा

रहा था। बिस्तरपर एक बीस वर्षकी एक युवती बेसुध पड़ी हुई थी। उसकी दो बहनें भी वहीं भयसे सहमी हुई आँसू बहा रही थीं। उन्होंने मुझसे कहा—'कल तो यह भली चंगी थी और भोजन भी कसकर किया था। आज सवेरे इसके सिरमें दर्दकी शिकायत हुई, और अब तो आप देख ही रहे हैं।' मैंने उन्हें सान्त्वना दी। यह भी तो डाक्टरका एक कर्तव्य है। रोगिनीके पास जाकर मैंने उसे नश्तर लगाया, और पलस्तर लगानेको कहकर एक नुस्खा लिख दिया। इस बीचमें उसपर मेरी आँख पड़ गई। तुम्हें क्या बताऊँ, सच जानो, आजतक ऐसा चेहरा न देखा था! वह सौन्दर्य-प्रतिमा थी! दयासे मेरा कलेजा हिल गया। कैसे कोमल अंग प्रत्यंग थे, क्या आँखें थीं।...लेकिन ईश्वरकी कृपासे उसकी दशा सुधारने लगी। उसे पसीना आया और धीरे-धीरे होश आने लगा। चारों ओर देखकर वह मुसकुराई और उसने अपने मुँहपर हाथ फेरा। दोनों बहनोंने उसके ऊपर झुककर पूछा—'कहो कैसी हो?'

'अच्छी हूँ'—कहकर उसने करवट बदली, और मेरे देखते-देखते उसे नींद आ गई। मैंने कहा—'अब रोगिणीको चुपचाप सोने दो।' हम सब पंजेके बल बाहर चले गये। उसे किसी चीज़की ज़रूरत हो, तो उसे पूरा करने के लिए एक परिचारिका कमरेमें छोड़ दी गई। बैठकमें मेज़पर 'केतली' (चायका बर्तन) और 'रम' शराब की एक बोतल रखी हुई थी। हमारे पेशेका कोई आदमी इनके बिना रह नहीं सकता। उन्होंने मुझे चाय पिलाई और वहीं रात बिताने के लिए कहा। मैं भी तैयार हो गया; और सच पूछो, तो इतनी रातको मैं जाता भी कहाँ? बुढ़िया बराबर कराहती ही जाती थी। मैंने कहा—'यह क्या? लड़की बच जायगी,

आप घबराती क्यों हैं ? आपको भी थोड़ा आराम करना चाहिए, दो बज चुके हैं।'

'अगर कुछ हुआ, तो आप मुझे बुला भेजेंगे।

'हां-हां ।'

बुढ़ियाके चले जानेके बाद दोनों लड़कियां अपने शयनकक्षको चली गईं । मेरे लिए बैठकमें उन्होंने बिस्तर लगा दिया। मैं लेट तो गया, पर आश्चर्य है कि नींद नहीं आई, हालांकि मैं थकावटसे चूर-चूर हो गया था। रोगिणीका ध्यान चित्तसे ओझल न हो सका। अन्तमें जब चेष्टा करनेपर भी तबियत न मानी, तो मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ। सोचा—चलकर देखूँ कि अब उसकी क्या हालत है। बैठककी बगलमें ही उसका शयनकक्ष था। खैर, मैं गया और हौलेसे दरवाज़ा खोला। मेरा दिल कैसा धक-धक कर रहा था! अन्दर झांका, तो देखा कि नौकरानी बत्तीसोकी छटा दिखलाती हुई सो रही थी; कम्बख्त खर्राटे भी भर रही थी। रोगिणीका मुँह मेरी ओर था, और युगल बाहु खुले हुए थे। मैं धीरे-धीरे उसके समीप पहुँचा ही था कि वह चौंक पड़ी और एकटक मुझे देखने लगी—'कौन' कौन ?' मैं पहले तो सिटपिटा गया, फिर कहा—'मैडम, डरिये नहीं, मैं डाक्टर हूँ, देखने आया हूँ कि आप कैसी हैं ?'

'तुम डाक्टर हो ?'

'हां, मैं डाक्टर हूँ। आपकी माने मुझे शहरसे बुला भेजा है। हमने आपको नश्तर लगाया है। अच्छा, तो अब सो जाइये। ईश्वरने चाहा, तो दो-एक दिनमें आप अपने पैरों खड़ी हो सकेंगी।'

'हां, हां, डाक्टर, मुझे मरनेसे बचा लो।'

'आपकी बड़ी उम्र हो, आप यह क्यों कहती हैं?' मैं मन-ही-मन सोचने लगा कि उसे ज़हर बुखार है। नाड़ी देखी तो सचमुच बुखार था। उसने मुझपर नज़र डाली, और हाथ थामकर कहा—'मैं क्यों मरना नहीं चाहती, यह तुम्हें बताये देती हूँ। तुम्हें बताती हूँ...अब हम अकेले हैं, लेकिन कहना ...किसीसे भी...तो सुनो।' मैं झुक गया। उसने अपने ओठ मेरे कानोंसे भिड़ा दिये, मेरे गाल उसके बालोंको छूने लगे ... कहता हूँ कि मेरे होशके तोते उड़ गये। उसने ओठोंही ओठोंमें कुछ कहा... मेरी समझमें खाक-पत्थर न आया....ओह, यह प्रलापके सिवा कुछ न था। वह इतनी तेज़ीसे कानाफूसी करती गई, जैसे रूसीमें नहीं, किसी दूसरी भाषामें बोल रही हो। अन्तमें बातचीत खतम करके कांपते हुए, उसने ... बहनोंने तकियेमें छिपा लिया और अँगुली दिखाकर कहा—'डाक्टर, ... किसीसे नहीं।' मैंने किसी प्रकार उसे शान्त किया, एक ... ...ते-देखते उसे नौकरानीको जगाकर चला आया।" ...ो।' हम सब

इतना कहकर डाक्टरने इतने ज़ोरसे नास खींची कि पलंग... उसकी तेज़ीने उसे चक्करमें डाल दिया।

"फिर भी दूसरे दिन मेरी आशाके अनुकूल रोगिणीकी दशा सुधरी नहीं। बहुत सोच-विचारकर अकस्मात मैंने निश्चय किया कि दूसरे रोगी प्रतीक्षा करें, तो करने दो, पर मैं तो यहीं ठहरूँगा।....तुम जानते हो कि कोई डाक्टर इस बारेमें लापरवाही नहीं कर सकता, वरना उसकी प्रैक्टिस मारी जायगी। एक बात तो यह थी कि रोगिणीकी हालत खतरनाक थी, दूसरे, सच्ची बात यह थी कि रोगिणीकी ओर मेरा मन बहुत खिंचा हुआ था, ...सके सिवा पूरे कुटुम्बसे मुझे प्रेम हो गया था। इसमें सन्देह नहीं कि वे

एँड्रीयवना—यही उसका नाम था—मुझसे प्रेम तो नहीं करती थी, फिर भी उस भावको मित्रतापूर्ण आदर या ऐसा ही कुछ कहा जा सकता है। हालाँ कि इस भावको वह भी कदाचित्, ठीक-ठीक न समझ सकी थी, पर बर्ताव उसका कुछ ऐसा ही था। अब चाहे जो समझो।" इन सब बेतुके वाक्योंको डाक्टर स्पष्ट अनिच्छापूर्वक एक ही साँसमें कह गया। "लेकिन मैं कुछ बहक-सा रहा हूँ—तुम इन बातोंको न समझ सकोगे? अच्छा, तुम अनुमति दो तो अब पूरी कहानी सिलसिलेवार सुना दूँ।"

एक प्याला चाय पीकर उसने शान्त स्वरसे कहना शुरू किया—खैर रोगिणीकी दशा दिन-प्रतिदिन बिगड़ने लगी। सुनो भाई, तुम डाक्टर नहीं हो, इसलिए तुम इसका अनुमान नहीं लगा सकते [illegible] उस समय कैसी बीतती है, जब उसे सन्देह होने लगता [illegible] से पछाड़ रहा है। उसके आत्म-विश्वासकी क्या हालत है [illegible] एकाएक जी ऐसा मुरझा जाता है कि बयान नहीं हो सकता। [illegible] वह सोचता है कि जो कुछ याद था, सब भूल गया और रोगीको उसपर भरोसा नहीं रहता। वह समझता है कि दूसरे लोग उसकी बेचैनीको समझकर बिलकुल बेदिलीसे अपनी शिकायत सुनाते हैं। उसे संदिग्धदृष्टिसे देखकर एक दूसरेके कानमें जाने क्या फूँक रहे हैं...उफ! रोंगटे खड़े हो जाते हैं। डाक्टर सोचता है कि इस रोगका भी कोई-न-कोई उपचार होगा; [illegible] उसे ढूँढ निकालने ही की बात है। एक औषधि निकाली, फिर सोचा, क्या यही तो नहीं है। उसे प्रयोग किया—नहीं यह नहीं है। असर करनेके लिए औषधिको जितना समय चाहिए, तब तक उसे धैर्य कहाँ? कभी एक चीज उठाई, कभी दूसरी। कभी चिकित्साशास्त्रसे कोई नुसखा निकालकर वह

अलेक्जेंड्रा ऐंड्रीयवना भी मुझे चाहने लगी थी। कभी-कभी तो वह मेरे सिवा किसी दूसरेको अपने कमरेमें आने भी न देती थी। वह मुझसे बातचित करने लगी, पूछताछ करने लगी—'तुमने कहाँ पढ़ा था? तुम कैसे रहते हो? तुम्हारे नातेदार कौन हैं? तुम किनसे मिलजुलते हो!' मैं समझता था कि उसे बोलना न चाहिए, लेकिन उसे मना करना—कड़ाई से—मेरे लिए असम्भव था। कभी-कभी अपने सिरको हाथोंमें लेकर मैं सोचता था, 'अरे दुष्ट, तू क्या कर रहा है?'···और वह मेरे हाथको अपने करकमलमें लेकर टकटकी बाँधकर मुझे देखती, मुँह फेराकर ठंढी साँस भरती, और कहती थी—'तुम कितने भले मालूम होते हो!' उसके हाथ कितने गर्म होते थे, आँखें कैसी फैली-फैली और झुकी-झुकी सी मालूम होती थीं····फिर वह कहती—'तुम बड़े भलेमानस हो, हमारे पड़ोसियों जैसे नहीं, हरगिज नहीं! अब तक तुमसे जान पहचान क्यों न हुई थी!'

"मैं कहता था—'अलेक्जेंड्रा ऐंड्रीयवना अपने को सम्भालो।' सच जानो, यह सौभाग्य मुझे कैसे प्राप्त हुआ, यह मैं नहीं जानता हूँ···पर अपने को तुम सम्भालो······ परमात्मा भला करेगा, तुम स्वस्थ हो जाओगी।'

डाक्टरने भृकुटि तानकर आगे झुकते हुए कहा-हाँ, मैं तुमसे यह भी कह दूँ कि वे अपने पड़ोसियोंसे बहुत कम मिल-जुलते थे, क्योंकि निम्न-श्रेणीके आदमी तो उनसे काफ़ी नीचे दर्जेके थे और स्वाभिमान उन्हें धनिकोंसे मिलने न देता था। सच कहता हूँ वह परिवार असाधारण रूपसे सुसंस्कृत था, इसीलिये मैं उसे इतना पसन्द करता था। वह केवल मेरे ही हाथोंसे दवा पीती थी···बेचारी मेरा [illegible] बैठती थी। वह

दवा पीती और मुझे देखती जाती थी। मेरा दिल जैसे टूक-टूक हुआ जाता था! इधर उसकी दशा पल-पलपर बिगड़ती जाती थी। मैं सोचता था 'यह मर ही जायगी, हरगिज़ न बचेगी।' सच जानो, मैं उसके पहले ही क़ब्रमें जानेके लिये तैयार था। उधर उसकी माँ और बहनोंकी आँखें मुझपर थीं....और मुझपर उनका विश्वास कम होता जा रहा था। 'कहिये? उसकी हालत कैसी है?" 'बिलकुल ठीक।" मेरा दिमाग़ चकरा रहा था।

एक रातको मैं रोगिणीके पास बैठा हुआ था। परिचारिका भी वहीं बैठी हुई खर्राटे भर रही थी। उस बेचारीका क्या दोष, वह भी बिलकुल थक गयी थी। सन्ध्या समय अलेक्ज़ेंड्रा ऐण्ड्रीयवनाकी हालत बड़ी खराब हो रही थी। ज़ोरका बुखार था। आधी रात तक वह करवट बदलती रही। अन्तमें उसे नींद आ गई, या कम-से-कम वह निश्चल पड़ गयी। कोनेमें मरियमकी पवित्र मूर्तिके आगे लैम्प जल रहा था। मैं सर झुकाये वहीं बैठा रहा। थोड़ी देर ऊँघ भी लिया। एकाएक जान पड़ा, जैसे किसीने मेरी बग़ल छुई। मैं चौंक पड़ा....अरे यह क्या?""अलेक्ज़ेंड्रा एण्ड्रीयवना एकटक मुझे देख रही थी....ओठ अधखुले थे और गाल आग हो गये थे।

'क्यों, क्या हुआ?'

क्यों डाक्टर, क्या मैं मर ही जाऊँगी?'

'ईश्वर दया करे!'

'नहीं, नहीं डाक्टर, यह बातें रहने दो कि मैं अब भी जी उठूँगी,"" नहीं, नहीं......अगर तुम जानते, सुनो! ईश्वरके लिए सब सच-सच कह दो।' वह तेज़ीसे साँस लेने लगी—'यदि मुझे विश्वास हो जाय कि मैं मर रही हूँ, तो तुम्हें सब कुछ सुना दूँगी!"

"अलेक्जेंड्रा, मेरी प्रार्थना......।"

'सुनो, आज मैं पलभर भी नहीं सोई......मैं देरसे तुम्हें ताक रही थी......ईश्वरके लिए सुन लो।...मुझे तुमपर भरोसा है; तुम सज्जन हो और ईमानदार भी। संसारके सब पावन पदार्थोंकी सौगन्ध, तुम सच-सच बतला दो! तुम क्या जानो कि मेरे लिये यह कितनी महत्वपूर्ण बात है... डाक्टर, ईश्वरके लिए बता दो कि क्या मेरी हालत नाज़ुक है?"

"अलेक्जेंड्रा, मैं तुमसे क्या बताऊँ?"

"मैं पैर पड़ती हूँ, ईश्वर के लिये बता दो!"

"तब अलेक्जेंड्रा, मैं तुमसे कुछ न छिपाऊँगा। तुम्हारी दशा वास्तवमें खतरनाक है, पर ईश्वर दयावान है।"

"मैं मर जाऊँगी; मैं मर जाऊँगी।" ऐसा जान पड़ा कि वह बड़ी प्रसन्न है। उसका मुँह दमक उठा। मैं घबड़ा गया। वह एकाएक उठ बैठी और कुहनी टेककर बोली—"डरो मत, डरो मत। मुझे मृत्युका लेशमात्र भय नहीं है। अब......हाँ, अब मैं तुम्हें बताऊँगी कि मेरा रोम-रोम तुम्हारा आभारी है......तुम दयालु और कृपाशील हो......और मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।, मैं भौंचकासा होकर उसे ताकता रहगया; सच जानों, यह मुझपर वज्रपात था।

'सुना, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।'

'अलेक्ज़ेंड्रा एँड्रीयवना, मैं तुम्हारे इस प्रेमका अधिकारी कैसे बना?'

'नहीं नहीं, तुम्हारी समझमें नहीं आया—' और एकाएक अपने युगल बाहु खोलकर उसने मेरा सिर अपने हाथोंमें लेकर चूम लिया। सच जानना, चौंकसा उठा।......घुटनेके बल बैठकर मैंने अपना सिर तकियेमें छिपा

लिया। वह चुपचाप रही, उसकी अँगुलियाँ मेरे बालोंके भीतर काँप रही थीं। मैंने उसके रोनेकी आवाज़ सुनी। मैं उसे समझाने-बुझाने लगा।........याद नहीं कि उससे मैंने क्या-क्या कहा—'तुम्हारे रोनेसे नौकरानी जग जायगी। अलेक्ज़ेंड्रा, मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ........ सच जानो...अपनेको सँभालो।

उसने ज़ोरसे कहा—'बस-बस! उन सबकी कुछ पर्वाह नहीं; चाहे जागें, चाहे अन्दर घुस आवें—इससे क्या होगा! तुम देखते हो कि मैं तो मर रही हूँ।........और सिर उठाओ।...या शायद तुम मुझसे प्रेम नहीं करते, शायद मुझसे ग़लती हुई.......ऐसा हो तो माफ़ करना।'

'अलेक्ज़ेंड्रा एँड्रीयव्ना, तुम क्या कहती हो, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।'

मेरी आँखोंमें आँखें डालकर उसने हाथ फैला दिये, और कहा—'मुझे अपने सीनेसे लगा लो।' कह नहीं सकता कि उस रातको मैं पागल क्यों न हो गया। मैं समझ रहा था कि रोगिणी आप अपने प्राण ले रही है। वह सुधबुध बिसार बैठी है। मैं यह भी जानता था कि यदि वह अपनेको मरणासन्न न समझ लेती, तो कभी मेरा खयाल भी न करती। तुम जो भी कहो, प्रेमका पाठ पढ़े बिना, बीस वर्षकी अवस्थामें मर जाना बड़ा दुर्भाग्य है, यही विचार उसके कलेजेको छेद रहा था, इसीलिए निराश होकर उसने मेरी बाँह पकड़ी थी। अब समझे तुम? वह मुझे आलिंगन-पाशसे मुक्त न होने देती थी।

'अलेक्ज़ेंड्रा एँड्रीयव्ना, मुझपर और अपने आपपर रहम करो।'

उसने जवाब दिया—'क्यों? अब किसका विचार किया जाय? तुम जानते हो कि मैं मर रही हूँ'—यह रट उसकी ज़बान पर बराबर थी—'अगर

मुझे मालूम होता कि मैं बच जाऊँगी और पहले जैसी अच्छी-भली युवती हूँगी, तो लज्जित होती···सचमुच शर्म करती····पर अब क्यों?'

'लेकिन कौन कहता है कि तुम मर जाओगी?'

'अरे चुप भी रहो! तुम मुझे क्या धोखा दोगे? तुम्हें झूठ बोलना नहीं आता, ज़रा अपना मुँह तो देखो?'

'अलेक्ज़ेंड्रा एंड्रीयवना, तुम जाओगी, मैं तुम्हें भलाचंगा कर दूँगा। मैं तुम्हारी मातासे विवाहकी अनुमति लूँगा....हमरा ब्याह होगा और हम आनन्दपूर्वक जीवन बितावेंगे।'

नहीं, नहीं तुमने वादा किया है···मैं अवश्य मरूँगी....तुमने वचन दिया ....तुमने प्रतिज्ञा की है।' यह मेरे लिए अत्यन्त व्यथाजनक था; कई कारणवश इससे मुझे बड़ी यातना हुई।

देखो तो सही, कभी-कभी छोटीसी बात क्या कर दिखाती है, वैसे तो कुछ मालूम नहीं होता, फिर भी वह बड़ी कष्टप्रद होती है। कहीं उसे मेरा नाम पूछनेकी सूझी। अभाग्यवश मेरा नाम था ट्राइफ़न!* वास्तवमें 'ट्राइफ़न इवेनिच, मेरा नाम था। घरमें प्रत्येक आदमी मुझे डाक्टर कहता था। क्या कहूँ इस लाचारीका कोई इलाज न था। मैंने जवाब दिया—'मैडम, मेरा नाम ट्राइफ़न है। उसने भौंहें टेढ़ी कीं, सिर हिलाया और फ्रेंचमें कुछ बुदबुदाया—' वास्तवमें कोई अप्रीतिकर बात!—और हँस पड़ी! इस हास्यमें कैसा ताना छिपा हुआ था।

ख़ैर, इसी प्रकार मैंने उसके साथ रात काट दी। प्रातःकाल जब मैं

---

* रूसमें "ट्राइफ़न" वैसा ही परिहासजनक नाम है, जैसे भारतमें पीपलरायः या शेख झंडा!

बाहर निकला, तो ऐसा मालूम होता था जैसा मैं पागल हूँ। इसके बाद सवेरेको चाय पीकर जब मैं फिर उसके कमरेमें गया तो सूरज निकल चुका था। यह क्या! मैं बड़ी कठिनाईसे उसे पहचान सका। उससे कहीं अच्छी दशामें लोग क़ब्रमें रखे जाते हैं, समझमें नहीं आता—बिलकुल समझमें नहीं आता—कि यह देखने-सुननेके बाद भी मैं जीता कैसे बच गया। रोगिणी तीन दिन और तीन रात तक साँस लेती रही। वे कैसी रातें थीं! उसने कैसी-कैसी बातें कहीं! आख़िरी रातको—सोचो तो सही—मैं उसके पास बैठा-बैठा ईश्वरसे केवल यही माँग रहा था कि उसे जल्दी उठा ले, और मुझे भी उसके साथ अपने दामनमें लपेट ले।

एकाएक बूढ़ी मा कमरेमें घुस आई, पिछली शामको उससे मैंने कह दिया था कि आशा-किरण ओझल हुआ चाहती है और किसी पादरीको बुलानेका समय आ गया है। बीमार लड़कीने अपनी मासे कहा—'अच्छा हुआ कि तुम आ गईं। हम दोनोंको देखो, हम दोनों एक दूसरेसे प्रेम करते हैं—एक दूसरेको वचन दे चुके हैं। क्यों डाक्टर, मा क्या कहती हैं? बताओ, क्या कहती हैं?' मेरे मुँहपर पीलापन छा गया। मैंने कहा—'बहक रही है, बुख़ार है।' लेकिन वह कहने लगी 'छिः तुमने तो अभी कुछ और ही कहा था, और मेरी अंगूठी पहन ली थी। छिपाते क्यों हो? मेरी मा बड़ी सीधीसादी है—वह माफ़ कर देगी—वह सब कुछ समझ जायगी। अब मेरी जान निकल रही है। झूठ बोलनेकी मुझे क्या ज़रूरत है? ज़रा अपना हाथ तो दो।' मैं कूदकर कमरेसे बाहर निकल भागा। फिर भी बुढ़िया समझ गई कि बात क्या है। अब मैं तुम्हें अधिक कष्ट न दूँगा, और इस रामकहानीको दोहरानेमें मुझे भी बड़ी

व्यथा होती है। दूसरे दिन मेरी रोगिणी चल बसी। ईश्वर उसकी आत्माको शान्ति प्रदान करें।" डाक्टरने ठंडी साँस भरकर कहा—मृत्युके पहले भी उसने मा-बहनोंको बाहर चले जाने और मुझे उसके साथ अकेला छोड़ देनेके लिए कहा। उसने कहा—'क्षमा कीजिए, शायद क़ुसूर मेरा ही है···मेरी बीमारी—पर सच जानना कि तुमसे अधिक किसीको मैंने प्यार नहीं किया····मुझे····भूलना मत···मेरी अँगूठी पहने रहना।"

डाक्टरने मुँह फेर लिया, मैंने उसका हाथ थाम लिया।

वह कहने लगा—"आह! आइये हमलोग किसी दूसरे विषयपर बात करें, या थोड़ी बहुत बाज़ी लगाकर प्रिफ़रेंस खेलें? मुझ जैसे आदमी भावुक होनेका भान नहीं कर सकते! अब एक ही चिन्तामें मुझे मग्न रहना पड़ता है, बच्चोंका रोना-धोना और पत्नीकी डांट-फटकार किस प्रकार बन्द रहे। उसके बाद, जैसा लोग कहते हैं, शास्त्रानुसार विवाह करनेका अवसर मिल गया।····अजी···· मैंने एक व्यापारीकी पुत्रीसे विवाह किया—उसके दहेज़में सात हज़ार मिले। उसका नाम है अकूलिना। 'ट्राइफ़न' और 'अकूलिना' की जोड़ी बड़ी मज़ेदार है। बड़े चिड़चिड़े स्वभावकी औरत है, पर ख़ैरियत यही है वह दिन-भर सोआ करती है!····अच्छा, प्रिफ़रेंस ही खेला जाय।"

दो-दो पैसेके दावँ लगाकर हम प्रिफ़रेंस खेलने बैठ गये। ट्राइफ़न इवेनिचने मुझसे ढाई रुबल जीत लिये, और अपनी जीतपर मगन होता हुआ, रात बीते घर लौट गया।

फियोडोर डोस्टोवस्की

(१८२१-१८८१)

डोस्टोवस्की मास्कोके एक फ़ौजी डाक्टरका पुत्र था, और उसने स्वयं भी फ़ौजी-इञ्जिनीयरिङ्गकी शिक्षा प्राप्त की थी। कुछ दिन तक सब-लेफ्टिनेन्ट रहकर उसने फ़ौजी नौकरीसे इस्तीफ़ा दे दिया और साहित्य-सेवामें निरत हुआ। पुश्किन, गोगल, बालज़क और जार्ज सैंडसे उसने साहित्यिक आदर्श ग्रहण किये थे। थोड़े ही दिनोंमें उसकी ख्याति फैल गयी, मगर उस समय तक आर्थिक दृष्टिसे रूसी-साहित्य इतना उन्नत नहीं हो सका था कि साहित्यकार केवल अपनी लेखनीकी कमाईपर ही जीवन व्यतीत कर सकें। इसलिये फियोडोरको भी अनेक आर्थिक कष्ट भोगने पड़े। सन् १८४७ में यह क्रान्तिकारियोंके एक दलमें भाग लेने लगा। नतीजा यह हुआ कि तीस साथियोंके साथ डोस्टोवस्की और उसका भाई गिरफ़्तार कर लिया गया। सन् १८४९ में इनसब कैदियोंको फाँसीकी सजा हुई। जिस समय इन अभागोंको ले जाकर फाँसीके तख़्तेके पास खड़ा किया गया, और उन्हें लटकानेकी तैयारी हो रही थी, इसी समय खबर आई कि बादशाहने मौतकी सज़ाको आजीवन काले पानीकी सज़ामें बदल दिया है। डोस्टोवस्कीको सज़ामें चार वर्ष साइबेरियाका निर्वासन और बाकी जिन्दगी फ़ौजमें मामूली सिपाहीकी भाँति ज़बर्दस्ती नौकरी नसीब हुई। जेल-जीवन और साइबेरियाके निर्वासनने डोस्टोवस्कीके जीवनपर बड़ा गहरा प्रभाव डाला, जो

व्यथा होती है। दूसरे दिन मेरी रोगिणी चल बसी। ईश्वर उसकी आत्माको शान्ति प्रदान करें।" डाक्टरने ठंडी साँस भरकर कहा—मृत्युके पहले भी उसने मा-बहनोंको बाहर चले जाने और मुझे उसके साथ अकेला छोड़ देनेके लिए कहा। उसने कहा—'क्षमा कीजिए, शायद क़ुसूर मेरा ही है···मेरी बीमारी—पर सच जानना कि तुमसे अधिक किसीको मैंने प्यार नहीं किया····मुझे····भूलना मत···मेरी अँगूठी पहने रहना।"

डाक्टरने मुँह फेर लिया, मैंने उसका हाथ थाम लिया।

वह कहने लगा—"आह! आइये हमलोग किसी दूसरे विषयपर बात करें, या थोड़ी बहुत बाज़ी लगाकर प्रिफ़रेंस खेलें? मुझ जैसे आदमी भावुक होनेका भान नहीं कर सकते! अब एक ही चिन्तामें मुझे मग्न रहना पड़ता है, बच्चोंका रोना-धोना और पत्नीकी डाँट-फटकार किस प्रकार बन्द रहे। उसके बाद, जैसा लोग कहते हैं, शास्त्रानुसार विवाह करनेका अवसर मिल गया।····अजी···मैंने एक व्यापारीकी पुत्रीसे विवाह किया—उसके दहेज़में सात हज़ार मिले। उसका नाम है अकूलिना। 'ट्राइफ़न' और 'अकूलिना' की जोड़ी बड़ी मज़ेदार है। बड़े चिड़चिड़े स्वभावकी औरत है, पर ख़ैरियत यही है वह दिन-भर सोआ करती है!····अच्छा, प्रिफ़रेंस ही खेला जाय।"

दो-दो पैसेके दाँव लगाकर हम प्रिफ़रेंस खेलने बैठ गये। ट्राइफ़न इवानिचने मुझसे ढाई रूबल जीत लिये, और अपनी जीतपर मगन होता हुआ, रात बीते घर लौट गया।

फियोडोर डोस्टोवस्की

(१८२१-१८८१)

डोस्टोवस्की मास्कोके एक फ़ौजी डाक्टरका पुत्र था, और उसने स्वयं भी फ़ौजी-इञ्जिनीयरिङ्गकी शिक्षा प्राप्त की थी। कुछ दिन तक सब-लेफ्टिनेन्ट रहकर उसने फ़ौजी नौकरीसे इस्तीफ़ा दे दिया और साहित्य-सेवामें निरत हुआ। पुश्किन, गोगल, बालज़क और जार्ज सैंडसे उसने साहित्यिक आदर्श ग्रहण किये थे। थोड़े ही दिनोंमें उसकी ख्याति फैल गयी, मगर उस समय तक आर्थिक दृष्टिसे रूसी-साहित्य इतना उन्नत नहीं हो सका था कि साहित्यकार केवल अपनी लेखनीकी कमाईपर ही जीवन व्यतीत कर सकें। इसलिये फियोडोरको भी अनेक आर्थिक कष्ट भोगने पड़े। सन् १८४७ में वह क्रान्तिकारियोंके एक दलमें भाग लेने लगा। नतीजा यह हुआ कि तीस साथियोंके साथ डोस्टोवस्की और उसका भाई गिरफ़्तार कर लिया गया। सन् १८४९ में इनसब क़ैदियोंको फाँसीकी सजा हुई। जिस समय इन अभागोंको ले जाकर फ़ाँसीके तख़्तेके पास खड़ा किया गया, और उन्हें लटकानेकी तैयारी हो रही थी, उसी समय खबर आई कि बादशाहने मौतकी सज़ाको आजीवन काले पानीकी सज़ामें बदल दिया है। डोस्टोवस्कीको सज़ामें चार वर्ष साइबीरियाका निर्वासन और बाक़ी जिन्दगी फ़ौजमें मामूली सिपाहीकी भाँति ज़बर्दस्ती नौकरी नसीब हुई। जेल-जीवन और साइबीरियाके निर्वासनने डोस्टोवस्कीके जीवनपर बड़ा गहरा प्रभाव डाला, जो

उसकी रचनाओंमें प्रत्यक्ष प्रकट होता है । उसने जेल-जीवनपर एक मार्मिक ग्रन्थ लिखा है, जिसमें मनुष्यकी आत्मा, उसकी फिलासफ़ी और उसका रहस्य बड़ी उत्तमतासे दिखाया गया है ।

अपने एक सहपाठीकी कृपासे उसे फ़ौजी नौकरीसे छुटकारा मिला, मगर आर्थिक कठिनाइयोंके उसे कुछ दिनके लिये देश छोड़कर विदेश भी भागना पड़ा । अन्तमें वह लौट आया और सेंट पीटर्सबर्गमें रहने लगा । सन् १८५९ में उसने एक विधवासे विवाह किया, जो १९६७ में मर गयी । उसका यह वैवाहिक-जीवन सुखी नहीं था । फिर उसने दूसरा विवाह किया, जिसमें उसका वैवाहिक-जीवन सुख और प्रेमसे कटा । अपने लम्बे-लम्बे उपन्यासोंमें उसने अपने देशवासियोंके दुःख-दर्दकी तस्वीरें खूब खींची हैं । उसका कहना है कि चाहे कैसा हो नीच और पतित व्यक्ति क्यों न हो, उसके जीवनमें भी कुछ क्षण वास्तविक आनन्द और आत्मोत्सर्गके होते हैं । केवल कष्टोंकी आगमें तपकर ही मनुष्य विशुद्ध होता है ।

उसकी कहानियाँ लम्बी हैं । यहाँ 'बड़ा दिन और विवाह' कहानी दी जाती है । डोस्टोवस्कीका गहरा तीक्ष्ण व्यंग इसमें बड़ी सुन्दरतासे दिखाया गया है ।

उस दिन मैंने एक शादी देखी...मगर नहीं। पहले मैं आपको एक क्रसमस-उत्सवकी बात बताऊँ। शादी बड़ी धूमकी थी। मुझे वह बहुत भली मालूम हुई। मगर क्रसमस-डेकी घटना उससे भी सुन्दर थी। नहीं मालूम, क्यों उस शादीको देखकर मुझे उस क्रसमसकी घटना याद आ गई। यह घटना इस प्रकार घटी थी :—

पूरे पाँच वर्ष हुए, जब नये सालके एक दिन पहले व्यापारी-समाजके एक बड़े आदमीने मुझे अपने घर बच्चोंके एक नाचमें निमन्त्रित किया था। इन व्यापारी महाशयका सम्बन्ध अनेक लोगोंसे था। उनके जान-पहचान-वालोंकी एक पृथक् मण्डली थी, और उसमें उनके अपने दाँव-पेंच चला करते थे। इसलिए यह जान पड़ता था कि बच्चोंका नाच तो सिर्फ़ एक बहाना था, जिसका उद्देश्य यह था कि बच्चोंके माता-पिता एकत्रित होकर भोलेपनसे अपने मतलबकी बातचीत कर सकें।

मैं एक बाहरी आदमी था। वहाँ मुझे अपने मतलबकी कोई बात हल नहीं करनी थी, इसलिए मैंने अपना वक़्त औरोंसे अलग, स्वतन्त्र रूपसे बिताया। उपस्थित लोगोंमें मेरी ही भाँति एक और आदमी भी था। वह बेचारा भी इस घरेलू उत्सवमें अनायास ही आ फँसा था। सबसे पहले मेरा ध्यान उसीकी तरफ़ आकर्षित हुआ। शक्ल-सूरतसे वह कोई बड़ा खांदानी या उच्च कुलका नहीं जान पड़ता था। लम्बा क़द, छरहरा बदन, बहुत गँभीर चेहरा और बढ़िया कपड़े। चेहरेसे ही यह ज़ाहिर होता था कि इस तरहके पारिवारिक आनन्दोत्सवके लिए उसके मनमें उत्साह नहीं है। जैसे ही वह अन्य लोगोंके बीचसे हटकर एक कोनेमें अकेला हुआ, वैसे ही उसके चेहरेकी

मुस्कराहट काफ़ूर हो गयी, और उसकी काली मोटी भौंहोंमें बल पड़ गये। वह मेज़बानको छोड़कर और किसीको जानता भी न था, और उसके चेहरे पर इस बातका प्रत्येक चिह्न दिखाई पड़ रहा था कि वह अत्यधिक ऊब रहा है।

बादमें मुझे मालूम हुआ, वह देहातका रहनेवाला था और किसी ज़रूरी परन्तु मुश्किल कामके लिये राजधानीमें आया था। वह हमारे मेज़बानके नाम किसीकी सिफ़ारिशी चिट्ठी लाया था, इसलिये मेज़बान महाशयने उसे अपने संरक्षणमें ले लिया था, मगर उत्साहके साथ नहीं। केवल शिष्टाचारकी पूर्तिके लिये उसे भी इस नाचमें निमन्त्रित किया गया था।

न तो कोई उसके साथ ताश खेलता था, न कोई उसे सिगार पेश करता था, और न कोई उससे बातचीत ही करता था। शायद वे सब दूर ही से पर देखकर चिड़ियाको पहचान गये थे। वह बेचारा देहाती भला-मानस यह निश्चय न कर सका कि आखिर अपने बेकार हाथोंका क्या करे। मजबूर होकर उसने अपनी मूँछोंपर ताव देना शुरू किया। उसकी मूँछें दरअस्ल बहुत बढ़िया थीं, मगर वह उनपर ऐसी मेहनत और लगनसे ताव दे रहा था, जिसे देखकर मनमें यह खयाल उठने लगता था कि शायद दुनियामें पहले ये मूँछें पैदा हुई हैं, और बादमें उनपर ताव देनेके लिये यह आदमी उपजा है।

मेहमानोंमें एक और आदमी भी मुझे मनोरञ्जक मालूम हुआ, मगर वह बिलकुल दूसरे ढँगका था। वह कोई बड़ा आदमी था। वे सब उसे जूलियन मैस्टकोविचके नामसे पुकारते थे। पहली ही नज़रमें यह मालूम हो जाता था, वह सबसे आदरणीय मेहमान है। उसमें हमारे मेज़बानमें वही

सम्बन्ध दिखाई देता था, जो मेज़बान और उस मूँछवाले सज्जनमें था। मेज़बान और उसकी स्त्री उससे कितनी मीठी-मीठी बातें कर रही थीं, इसका ठिकाना नहीं। उसका सारा ध्यान उसकी ओर था, वे उसे प्रसन्न कर रहे थे, उसीके गिर्द मँडरा रहे थे। अन्यान्य मेहमानोंको ला-लाकर वे उससे परिचित कराते, परन्तु उसे किसीके पास नहीं ले जाते थे।

जब जूलियनने यह कहा कि उसने बहुत कम ऐसी सुन्दर सन्ध्या बिताई है, तो मैंने देखा कि हमारे मेज़बानकी आँखें आँसुओंसे पसीज उठीं। न मालूम क्यों मुझे इस बड़े आदमीकी उपस्थिति नागवार मालूम होने लगी। इस लिये कुछ देरतक बच्चोंमें मन बहलाकर—जिनमेंसे पाँच ज़रूरतसे ज़्यादा मोटे-ताज़े हमारे मेज़बान ही के थे—मैं एक छोटी-सी बैठकमें चला गया, जो एकदम खाली थी। उस कमरेमें बहुतसे गमले रखे हुए थे, जिन्होंने आधा कमरा घेर रखा था। मैं इन्हीं गमलोंके एक सिरेपर जाकर बैठ गया।

बच्चे बड़े सुन्दर थे। माताओं और धायोंके लाख कोशिश करनेपर भी वे अपने बड़ोंसे बिलकुल ही मिलते-जुलते हुए नहीं थे। उन्होंने आनन-फाननमें क्रसमस वृक्षको * सारी मिठाइयाँ लूटकर उसे नङ्गा कर दिया, और इसके पहले कि वे यह अच्छी तरह जान सकें कि उन्हें क्या खिलौना मिला है, उन्होंने आधे खिलौनेको तोड़-ताड़कर सही कर दिया।

* बड़े दिन (क्रसमस-डे) के त्योहारके उपलक्षमें यूरोपियन लोग अपने घरोंमें एक छोटासा हरा पेड़ स्थापित करते हैं, जिनमें लालटेनें, मिठाइयाँ, फल और खिलौने वग़ैरह लटकाकर सजाते हैं और बादमें बच्चे उन उन मिठाइयों और खिलौनोंको लूटते हैं। यह पेड़ 'क्रसमस वृक्ष' (Christmas-Tree) कहलता है।

बच्चोंमें एक और लड़का-सा बड़ा सुन्दर खूबसूरत था। उसकी आँखें काली और बाल घुँघराले थे। वह ज़िद करके बार-बार और [illegible] अपनी लड़कियोंको बन्दूक तान रहा था। अगर जिन बच्चोंकी तरफ सबसे ज्यादा ध्यान जाता था, वह उसकी बहन थी। ग्यारह वर्षके लगभग उम्र और [illegible] अत्यन्त सुन्दर चेहरा। वह बहुत शान्त और विचारशील थी। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी, भरी हुई सपनीली थीं। बच्चोंने उसे किसी तरह खफा कर दिया था; इसलिये वह उन्हें छोड़कर उसी कमरेमें चली आई, जिसमें मैं आकर बैठा था। यहाँ वह एक कोनेमें अपनी गुड़िया लेकर बैठ गयी।

"इसका बाप बड़ा अमीर है"—मेहमानोंने एक दूसरेको आतंक-मिश्रित स्वरमें बताया—"इसके विवाहके दहेजके लिये अभीसे तीन लाख रुपया अलग निकालकर जमा कर दिया गया है।"

जैसे ही मैं उस झुण्डकी तरफ़ घूमा, जहाँ यह बातें हो रही थीं, वैसे ही मेरी निगाह जूलियन मास्टकोविचपर पड़ी। वह अपना सारा ध्यान लगा कर इस नीरस बकवादको सुन रहा था। उसके हाथ पीठकी तरफ़ थे, और सिर एक ओरको झुका हुआ था।

इस बीचमें हमारे मेज़बान महाशय उपहार बाँटनेमें जो होशियारी दिखला रहे थे, मैं मन-ही-मन उसकी प्रशंसा कर रहा था। इस लम्बे दहेज वाली लड़कीको उन्होंने बढ़िया खिलौना दिया था। बाक़ी सब खिलौने अन्यान्य बच्चोंको उनके माँ-बापकी हैसियतके मुताबिक़ बाँटे गये। सबसे अन्तमें एक छोटासा दस वर्षका लड़का आया, जिसके बाल लाल, शरीर दुबला और चमड़ेपर झाँईके दाग थे। उसे कहानियोंकी एक छोटीसी मिली, जिसमें न तो तस्वीरें ही थीं और न आदि अन्तमें कहीं एक

फूल-पत्ती ही थी। वह धायका लड़का था। धाय एक ग़रीब विधवा थी। यह लड़का भद्दे परसटेकी एक छोटी-सी जाकेट पहने हुआ था, और बहुत पज़मुर्दा और डरा हुआ दिखाई पड़ता था। उसने कहानीकी किताब ले ली, और धीरे-धीरे अन्य बच्चोंके खिलौनेके चारों तरफ़ घूमने लगा। वह उन खिलौनोंसे खेलनेके लिये तरस रहा था। मगर बेचारेमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि उन्हें छू सके। उसे देखनेसे ही जान पड़ता था कि वह अपनी हैसियतसे वाक़िफ़ है।

मुझे बच्चोंको देखनेका शौक़ है। उन्हें अपने व्यक्तित्वकी धाक जमानेकी कोशिश करते हुए देखना बड़ा मनोहारी है। मैं देख रहा था कि लाल बालोंवाले लड़केपर और बच्चोंके खिलौने बड़ा आकर्षण डाल रहे थे। खास तौरपर एक थियेटरके खिलौनेमें भाग लेनेके लिए वह इतना उत्कंठित हो उठा कि उसने और बच्चोंको खुशामद करना निश्चय किया। वह मुस्कराया और उनके साथ खेलने लगा। उसे सिर्फ़ एक ही सेब मिला था, जिसे उसने एक शरीर, गलफुल्ले लड़केको दे दिया, जिसकी जेबें उस वक़्त भी मिठाइयोंसे भरी थीं। एक दूसरे लड़केको उसने घुड़इयाँ चढ़ाया। यह सब उसने सिर्फ़ इसीलिए किया था कि वे लोग उसे उस थियेटरवाले खिलौनेसे थोड़ा खेल लेने दें।

मगर कुछ ही मिनटोंमें एक ढीठ लड़का उसपर टूट पड़ा, और घूँसे बरसाने लगा। वह बेचारा डरके मारे रो भी न सका। धायने आकर उसे हटा दिया, और कहा कि दूसरोंके खिलौनेमें दस्तन्दाजी मत करो। वह आहिस्तासे वहाँसे हटकर उसी कमरेमें चला आया, मैं और वह लड़की

थी। लड़कीने उसे अपने पास बैठने दिया, और दोनों मिलकर लड़कीकी क़ीमती गुड़ियाको कपड़े पहनाने लगे।

लगभग आध घंटा बीत गया। मैं गमलोंके बीचोंमें बैठा-बैठा प्रायः ऊँघ रहा था, और लाल बालोंवाले लड़के तथा लम्बे दहेजवाली लड़कीकी बातचीत सुन रहा था। इतने ही में एकाएक जूलियन वहाँ आ गया। वह बच्चोंके गुल-गपाड़ेमें, मौक़ा देखकर, धीरेसे ड्राइंगरूमसे खिसक आया। अपने सुरक्षित कोनेमें बैठे-बैठे मैंने देख लिया था कि कुछ ही क्षण पहले वह उस धनी लड़कीके बापसे बड़ी उत्सुकतासे बातें कर रहा था। लड़कीके बाप से उसी वक़्त उसका परिचय कराया गया था।

कुछ देर तक वह खड़ा-खड़ा कुछ सोचता और गुनगुनाता रहा। मालूम होता था कि अपनी उँगलियोंपर कुछ हिसाब जोड़ रहा है।

"तीन लाख—तीन लाख—ग्यारह-बारह-तेरह-सोलह। पांच वर्षमें! —मान लो छै फी-सूद है—तो छै पंजे तीस-तीस तिया नब्बे—चार लाख समझो। हूँ! हूँ! लेकिन बुड्ढा बड़ा ख़ुर्राट है, वह छै फ़ी-सदीपर राज़ी नहीं होगा। वह दस-बारह फ़ी-सदीसे कम न वसूल करेगा। इसके मानी हुए पांच लाख, कम-से-कम पांच लाखमें तो शक नहीं। उससे ऊपर जो कुछ मिले, उसे जेब-ख़र्च—हूँ—।"

उसने नाक साफ़ की, और उस कमरेसे जाने लगा। इतने ही में उसकी निगाह उस लड़की पर गई। वह ठिठक गया। गमलोंके पौधोंके होनेके कारण उसकी निगाह मुझपर नहीं पड़ सकी। मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो वह उत्तेजनासे कांप रहा है। शायद उस लम्बेचौड़े हिसाबने उसे खला दिया था। उसने अपने हाथ मले, और उत्तेजित होकर इधर-उधर

नाचने लगा। उसकी उत्तेजना बढ़ती ही जाती थी। अन्तमें उसने अपने भावोंको दबाया, और एक ठिकाने खड़ा हुआ। उसने उस भावी बधूपर एक निश्चित दृष्टि डाली। वह उसकी तरफ़ बढ़ना चाहता था, मगर पहले उसने एक वार चारों ओर देखा। फिर मुस्कराते हुए, पंजोंके बल इस तरह उसकी ओर बढ़ा, मानो उसकी दोषी आत्मा उसे धिक्कार रही हो। उसने झुककर लड़कीका माथा चूम लिया।

वह ऐसे अचानक आया था कि लड़की डरकर चीख उठी।

"लड़की, तुम यहाँ क्या कर रही हो?" उसने लड़कीके गालपर चुटकी काटकर, धीमे स्वरमें चारों ओर देखते हुए कहा।

"हम लोग खेल रहे हैं।"

"क्या! इसके साथ?" जूलियनने यह कहकर धायके लड़केपर एक तिरछी निगाह डाली, और उससे कहा—"लड़के, ड्राइंगरूममें जाओ।"

लड़का खामोश रहा। उसने आँखें फाड़कर जूलियनकी तरफ़ देखा। जूलियनने एक बार फिर सतर्कतासे चारों ओर देखा, और लड़कीके ऊपर झुककर बोला—"तुम्हें क्या मिला है, गुड़िया?"

"जी हाँ"—लड़कीने काँपती आवाज़में जवाब दिया, उसकी भौंहोंमें गाँठें पड़ रही थीं।

"गुड़िया? और तुम जानती हो कि गुड़िया काहेकी बनी है?"

"जी नहीं।"—उसने दबी हुई आवाज़में कहा, और सिर नीचा कर लिया।

"चिथड़ोंकी बनी है। लड़के, तुमसे कहा कि तुम ड्राइंगरूममें और लड़कोंके पास जाओ।"—जूलियनने लड़केकी तरफ़ कठोरतासे देखा।

दोनों बच्चोंके माथोंपर बल पड़ गये। उन्होंने एक दूसरेका हाथ ज़ोरसे पकड़ लिया, जिससे वे जुदा न हो सकें।

"और यह जानती हो कि यह गुड़िया तुम्हें क्यों दी गई है?"—जूलियनने अपनी आवाज़ और भी धीमी करके पूछा।

"नहीं।"

"क्योंकि हफ़्ते-भर तुम अच्छी—बहुत अच्छी लड़की—रही हो।"

इतना कहनेके बाद ही जूलियनपर उत्तेजनाका फिर दौरा हुआ। उसने चारों ओर देखा, और बहुत धीमे स्वरमें, जो उत्तेजना और अधीरतासे अस्पष्ट हो रहा था, बोला—"अच्छा, अगर हम तुम्हारे बापके घर आवें, तो क्या तुम मुझे प्यार करोगी?"

उसने फिर उस सुन्दर लड़कीका चुम्बन लेनेकी कोशिश की, मगर लाल बालोंवाले लड़केने देखा कि लड़कीके आँसू निकलने ही वाले हैं, इसलिए उसके मनमें लड़कीके प्रति सहानुभूति उमड़ आई, और वह ज़ोरसे रो पड़ा। इससे जूलियन जल उठा।

"जा यहाँसे! हट यहाँसे! दूसरे कमरेमें अपने और साथियोंके पास जा।"

"मैं उसे नहीं जाने देना चाहती। मैं उसे नहीं जाने चाहती। तुम्हीं चले जाओ।" लड़कीने चिल्लाकर कहा—"उसे रहने दो! उसे रहने दो।" वह प्रायः रोने-सी लगी।

इतनेमें दरवाज़ेपर पैरोंकी चाप सुनाई दी। जूलियन स्तम्भित हो उठा। उसने अपना शरीर सीधा किया। लाल बालोंवाला लड़का तो और भी ज़्यादा भयभीत हो गया। उसने लड़कीका हाथ छोड़ दिया, और

दीवारके सहारे सरकता हुआ ड्राइंगरूममें गया, और वहाँसे भागकर भोजनवाले कमरेमें पहुँचा।

लोगोंका ध्यान बचानेके लिए जूलियन भी भोजनके कमरेमें चला गया। वह ईंगुरकी तरह लाल हो रहा था। शीशेमें अपनी शक्ल देखकर वह और भी घबरा गया। शायद वह अपनी अधीरता और उद्विग्नतापर स्वयं ही बिगड़ रहा था। लाखोंके हिसाब-किताबसे वह अपने बड़प्पनकी मर्यादाको भूल गया था, और लोभने उसकी दशा उस लालची लड़केकी तरह कर दी थी, जो अपनी मनचाही चीज़की तरफ़ सीधा लपकता है—यद्यपि अभी तक वह चीज़ 'चीज़' नहीं थी, पाँच वर्ष बाद वह 'चीज़' होगी। मैं भी इस भलेमानसके पीछे-पीछे भोजनके कमरे गया। वहाँ मैंने एक अजीब तमाशा देखा।

जूलियन मैस्टकोविच परेशानीसे लाल होकर, ज़हरीली आँखोंसे लाल बालोंवाले लड़केको धमका रहा था। लड़का बराबर पीछे हटता जाता था, यहाँ तक की अब और अधिक पीछे हटनेको जगह ही नहीं रही। डरके मारे बेचारा लड़का यह न जान सका कि अब मुड़े तो किधरको मुड़े।

"निकल यहाँसे! तू यहाँ कर क्या रहा है? मैं कहता हूँ, निकल यहाँसे बेहूदे। फल चुरा रहा है क्या? ओह, तो तू यहाँ फल चुराने आया है। निकल यहाँसे बदशक्ल बदमाश, अपने ही जैसोंके पास जा।"

भयभीत लड़का और कोई उपाय न देखकर फुर्तीसे मेज़के नीचे घुस गया। जूलियन एक दमसे आग-बबूला हो रहा था, उसने जेबसे एक लम्बा सूती रूमाल निकाला, और लड़केको मेज़के नीचेसे भगानेके लिए उस रूमाल-से चाबुक मारने लगा।

यहाँ यह बता देना चाहिए कि जूलियन किसी क़दर स्थूल काय, भारी शरीर और फूले गालका आदमी था। उसका पेट ढोलकी तरह गोल था। उस वक्त, उसके पसीना बह रहा था, और वह हाँफ रहा था। उस समय उस लड़केके प्रति उसकी घृणा (या ईर्ष्या ?) इतनी अधिक बढ़ गई थी कि वह बिलकुल पागल हो रहा था।

मैं खूब दिल खोलकर हँसा। जूलियनने घूमकर देखा। एक क्षणके लिए वह एकदम बौखला गया। यह स्पष्ट दिखाई देता था कि उसे उस समय अपनी मर्यादाके महत्त्वका ज़रा भी ध्यान नहीं। उसी क्षण हमारे मेज़बान महाशय समानेके दरवाज़ेपर दिखाई दिये। लड़का मेज़के नीचेसे निकल आया, और अपने घुटने और टिहुनीको झाड़ने लगा। जूलियनके हाथमें रूमाल लटक रहा था। वह जल्दीसे रूमालसे अपनी नाक पोछने लगा। मेज़बान-महाशयने हम तीनोंको सन्दिग्ध-दृष्टिसे देखा। मगर वह दुनिया देखे हुए था और मौक़ेकी बात बनाना खूब जानता था। उसने फ़ौरन ही इस अवसरपर भी अपने सम्माननीय मेहमानको पकड़कर मतलबकी बात छेड़ दी।

"यही वह लड़का है, जिसके लिए मैंने आपसे कहा था।"

उसने लाल बालोंवाले लड़केको ओर इशारा करके कहा—"इसीके लिए मैं आपकी उदारताकी आशा करता हूँ।"

"ओह"—जूलियनने जवाब दिया, वह अब तक अपनेको संभाल नहीं सका था।

"यह मेरी धायका लड़का है।"—मेज़बान महाशयने प्रार्थनाके स्वरमें

हा—"इसकी मा बड़ी भली है, वह एक ईमानदार अफ़सरकी विधवा है। सीलिए आप यदि सम्भव हो तो—"

"असम्भव, एकदम असम्भव!" जूलियनने तेज़ीसे चिल्लाकर कहा। फिलिप एलेक्सियेविच, आप मुझे माफ़ करें। मैं इसके लिए कुछ नहीं ह सकता। मैंने दरियाफ़्त किया है, एक भी जगह खाली नहीं है। इसके लावा दस उम्मेदवारोंकी सूची अभी भी मौजूद है। उनका हक़ इससे कहीं ़यादा है। मुझे इसके लिए अफ़सोस है।"

"यह तो बड़ा खराब है,"—मेज़बान बोले—"यह लड़का बड़ा सीधा गैर शान्त है।"

"मैं तो यह कहूँगा कि यह बदमाश बड़ा शरारती है।"—ज़ूलियनने मुँह बनाकर कहा—"लड़के, तुम यहाँसे, जाओ। तुम अब तक यहाँ क्यों खड़े हो? चलो यहाँसे, और लड़कोंके पास जाओ।"

अपनेको नियन्त्रित करनेमें असमर्थ होकर उसने मेरी ओर एक टेढ़ी निगाह डाली। मैं भी अपनेको न रोक सका, और उसके मुँहपर ही हँस पड़ा। जूल्यिनने मुँह फेर लिया, और मेज़बानसे—ऐसी आवाज़में जो मुझे भी सुनाई दी—पूछा—"यह बेतुका आदमी कौन है?" उन दोनोंने आपसमें कुछ कानाफूसी की, और मेरा ख़्याल किये बिना ही कमरेसे चले गये।

हँसीके मारे मेरा पेट फूल रहा था। मैं भी ड्राइंगरूममें गया। वहाँ अनेक माता-पिता और मेहमान चारों ओरसे इस बड़े आदमीको घेरे हुए थे। उसी वक़्त एक लेडीके साथ उसका परिचय कराया गया था, और वह बड़ी उत्सुकतासे उससे बातें कर रहा था। यह लेडी उसी धनी लड़कीकी माता थी। वह अपनी बेटीका हाथ पकड़े खड़ी थी। जूलियन उस लड़कीकी

तारीफ़में तूमार बांध रहा था। उसने उसकी सुन्दरता, उसके गुण, उसकी सौम्यता और उसके उत्कृष्ट लालन-पालनकी प्रशंसाके पुल बांध दिये, और इस प्रकार उसकी माकी ख़ूब चापलूसी की। यह तारीफ़ें सुनकर बेचारी माता मुश्किलसे अपने आनन्दाश्रु रोक सकी। दूसरी ओर लड़कीका पिता भी मुस्कराकर अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहा था।

इस ख़ुशीकी छूत चारों ओर फैल गई। हर एक ने उसमें हिस्सा लिया। बातचीतमें व्याघात न हो, इसलिए बच्चोंको भी मजबूर होकर अपना खेल बन्द कर देना पड़ा। कमरेमें एक आतंक-सा छाया था। जूलियनकी चापलूसीपर लड़कीकी मा एकदम गद्गद हो रही थी। उसने चुने हुए सम्मानपूर्ण शब्दोंमें जूलियनसे पूछा—"क्या आप किसी दिन मेरे घर पधारकर हमें सम्मानित करेंगे?" जूलियनने हार्दिक उत्साहसे निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अब मेहमान लोग अदबके साथ कमरेमें इधर-उधर फैल गये। मैंने सुना, वे सब लोग सम्मान-भरे स्वरोंमें मेज़बानकी उसकी स्त्रीकी, उनकी लड़कीकी और ख़ास तौरपर जूलियन मैस्टकोविचकी, तारीफ़ कर रहे थे।

मेरा एक परिचित व्यक्ति जूलियनकी बगलमें खड़ा था, मैंने उससे पुकारकर पूछा—"क्या यह विवाहित है?"

जूलियनने मेरी ओर ज़हरीली निगाहसे देखा।

"नहीं" मेरे परिचितने उत्तर दिया। वह मेरी इस जान-बूझकर की हुई बदतमीज़ीपर भौंचका रह गया।

* * *

बहुत दिन नहीं हुए, जब मैं एक गिर्जेके नीचेसे होकर गुज़र रहा था। गिर्जेमें किसीकी शादी देखने के लिए लोगोंकी इतनी भीड़ लगी हुई थी, जिसे देखकर मुझे ताज़ुब हुआ। वह दिन बड़ा नीरस-सा था। रिमझिम-रिमझिम करके मेंह बरसना शुरू हो गया था। भीड़में होकर मैं गिर्जेकी ओर बढ़ा। वर एक मोटा-ताज़ा, गोल,ढोल-सी तोंदवाला, ठिगना आदमी था। उसने ज़रूरतसे ज्यादा कपड़े पहन रखे थे। वह इधर-से-उधर दौड़-कर कभी किसीको किसी बातके लिए हुक्म देता, और कभी मामूली-सी बात-पर हल्ला-गुल्ला मचा रहा था। अन्तमें यह सुनाई पड़ा कि वधू आ रही है। मैं भीड़को चीरकर आगे आया, तो एक आश्चर्यजनक सुन्दरी दिखाई दी। उसने मुश्किलसे यौवनमें पदार्पण किया होगा, परन्तु वह पीली और रंजीदा-सी थी, और कुछ व्याकुल-सी मालूम होती थी। मुझे तो यह भी जान पड़ा कि शायद कुछ देर पहले रोनेसे उसकी आँखें लाल हो रही थीं। उसके चेहरेकी हरएक रेखाका खिंचाव उसके सौन्दर्यको एक विशेष गम्भीरता प्रदान कर रहा था। परन्तु इस तमाम खिंचाव, गम्भीरता और रंजीदगीके भीतर-से उसका निष्कलंक बचपन झलक रहा था। उसकी शक्ल-सूरतमें कुछ ऐसी सरलता, कुछ ऐसा अनिश्चित भोलापन था, जो बिना कहे अपने-आप हृदयमें दया उत्पन्न कर देता था।

लोग कह रहे थे कि वधू पूरे सोलह वर्षकी है। मैंने वरकी ओर गौरसे देखा। एकाएक उसे पहचाना। वह तो जूलियन मास्टकोविच था, जिसे मैंने पिछले पांच वर्षों से नहीं देखा था। तब मैंने घूमकर वधूको एक बार फिर देखा—हे ईश्वर!

जितनी जल्दी हो सका, मैं गिर्जेके बाहर निकला। भीड़वाले कह रहे

ये कि वधू बड़ी मालदार है। पांच लाख रूपया तो दहेज ही में मिला है। उसपर से इतना जेब-खर्चके लिए है।

सड़कपर निकलकर मैंने मनमें सोचा—"तो जूलियनका उस दिनका हिसाब ठीक ही निकला।"

लियो टाल्सटाय

(१८२८—१९१०)

रूसी साहित्य-सेवियोंमें काउन्ट लियो टाल्सटायका नाम संसारमें जितना प्रसिद्ध हुआ, उतना किसी औरका नहीं हुआ। टाल्सटाय साहित्य-सेवी, उपन्यासकार, समाज-सुधारक, सन्त और ऋषि थे।

एक रईस रूसीके घरमें जन्म लेनेसे टाल्सटायका लालन-पालन बड़े ऐश-आरामसे हुआ था। बचपनमें उनका समय खेल-तमाशे, शिकार और राग रंगमें व्यय हुआ करता था। फ़ौजी तालीम पाकर वे फ़ौजमें अफ़सर हो गये, और उन्होंने क्रीमियाकी लड़ाईमें भाग लिया। लड़ाईमें मार-काट ख़ून-ख़राबी देखकर उनका मन उससे ऊब गया। क्रीमियामें उन्होंने जो देखा था, उसका वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तकोंमें इस सुन्दरतासे किया कि रूसके ज़ार तक उसे पढ़कर चकित रह गये। सेंट-पीटर्सबर्ग लौटनेपर उनका बड़ा स्वागत हुआ। रोज़ ही दावतों, जल्सों और नाच-तमाशोंमें हर जगह उन्हें निमन्त्रित किया जाता था। मगर थोड़े ही दिनों बाद इससे उनका मन ऊब गया, और उनके मनमें लोक-सेवा और समाज-सुधारके विचार उत्पन्न हुए। धीरे-धीरे उनके धार्मिक विचारोंमें भी गहरा परिवर्तन हो गया, और उन्होंने सर्वसाधारणमें सदाचारका प्रचार करना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने छोटी-छोटी कहानियोंको अपना साधन बनाया। यह कहानियां बहुत सरल ढंग और सरल भाषामें मामूली किसानोंके

लिए लिखी गई थीं, मगर उन्हें सारा सभ्य संसार बड़े आदर और चावसे पढ़ता है। बहुत खोज-विनोदके बाद टाल्सटाय अहिंसात्मक सत्याग्रहके सिद्धान्तपर जाकर पहुँचे थे, जिसे संसारमें व्यावहारिक रूप देनेका श्रेय महात्मा गान्धीको है। दक्षिण-अफ्रिकाके सत्याग्रहके पहले महात्माजी और टाल्सटायमें कुछ लिखा-पढ़ी भी हुई थी।

टाल्सटायने अपनी कहानियोंमें अपनी सम्पूर्ण कला और प्रतिभा लगाई है। उनकी छोटी-छोटी कहानियोंमें भी एक गहरा उद्देश्य छिपा रहता है। जो पाठकके हृदयमें अज्ञातरूपसे प्रभाव डालता है।

टाल्सटायकी अनेकों पुस्तकों और कहानियोंका हिन्दीमें अनुवाद हो चुका है। यहाँ दो छोटी-छोटी कहानियाँ दी जाती हैं। 'इलियास' के पढ़नेसे पाठकके मनमें स्वतः यह भाव उठते हैं कि धन और सम्पत्ति सुख-शान्तिके नहीं, वरन् चिन्ता और भयके उत्पादक हैं। 'बच्चोंकी बुद्धिमानी' में यह दिखाया गया है कि मूर्ख लोग छोटी-छोटी बातोंपर तकरार करके पूरा युद्ध ठान लेते हैं, जब कि बुद्धिमान बच्चे दो-चार मिनट लड़कर फिर मेल कर लेते हैं और मज़ेमें खेलने लगते हैं।

ग, लड़की मर चुकी थी। इस प्रकार इन बूढ़े-बुढ़ियाकी

किसी ज़म. ग भी कोई न था।

रहता था। उस दशाह नामी एक पड़ोसीको इन बूढ़े-बुढ़ियाकी दशापर

था। हाँ, उसने इलि दशाह न तो अमीर था और न तो गरीब। वह

बाद ही उसकी मृत्यु हुई थ और दिलका अच्छा था। वह इस बात को भूला

गायें और बीस भेड़ें थीं। सके यहाँ दावतें खाई हैं। उसे इलियास पर दया

की बढ़ती होने लगी। कहा:—

लगे रहते थे। अन्य आ नी स्त्रीके साथ हमारे यहाँ रहा करो। गर्मीमें,

और इसीलिए प्रति वर्ष अं तुम खरबूजेके खेतमें काम किया करना।

परिश्रमसे जीवन ि पानी देख लिया करना। तुम्हारी स्त्री,

पास दो सौ घोड़े र करेगी। मैं तुम्हें खाना-कपड़ा या

अनेकों चर हों, स करूँगा।"

तैयार करती

इलियासे वाद दिया, और अपनी स्त्रीके

थे—"यह आदमी पहले तो उन्हें यह नवीन

दिन बाद वे उसके आदी हो

प्रचुरता है—भरी पड़ी है। ते, और जो कुछ उनसे बन पड़ता, किया

अच्छे-अच्छे आदमी उस

मेहमान आते। इलियास उन म्मदशाहको बड़ा लाभ था, क्योंकि वे स्वयं

पिलाता। मेहमानोंके लिए भे और सब चीज़ोंका इन्तज़ाम करना जानते थे,

कमी नहीं थी। जब कभी क बैठते न थे। फिर भी, मुहम्मदशाहको

किया जाता था, यदि कई आद र अफ़सोस होता था।

इलियासके दो लड़के और , उसके कुछ रिश्तेदार आये। उनके

* घोड़ेके दूधका बना हुआ ने इलियाससे एक दुम्बा मारकर पकाने

के लिए कहा। मेहमानोंने मांस खाया, चाय पी, और फिर कूमिस पीने लगे। वे लोग मुहम्मदशाहके साथ फ़र्शपर गद्दियाँ लगाये बैठे बातचीत कर रहे थे। इलियास अपने काममें लगा था। एक बार वह दरवाज़ के सामनेसे होकर गुज़रा, उसे देखकर मुहम्मदशाहने अपने मेहमानोंसे कहा—

"आपने इस बूढ़े आदमीको देखा, जो अभी इधरसे होकर गया है?"

एकने कहा—"हाँ, उसमें कौनसी बात है?"

मुहम्मदशाह बोला—"कुछ नहीं, बात सिर्फ़ यही है कि किसी ज़मानेमें इलियास हम लोगोंमें सबसे ज़्यादा अमीर था। आप लोगोंने इलियासका नाम तो ज़रूर सुना होगा?"

"हम लोगोंने नाम तो ज़रूर सुना है"—मेहमानने उत्तर दिया—"उसका नाम तो देशमें दूर-दूर तक मशहूर है।"

"हाँ, लेकिन अब इसके पास कुछ नहीं है। यह मेरे यहाँ नौकरकी तरह रहता है, इसकी स्त्री गायोंकी देख-भाल करती है।"

मेहमानको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने ठंढी साँस ली, सिर हिलाया और कहा—"भाग्य भी पहियेकी भाँति घूमता है। किसीको ऊपर उठाता है, और किसीको नीचे गिराता है। अच्छा, यह बताइये कि बूढ़ा अपने पिछले दिनोंकी याद करके पछताता तो नहीं है?"

मुहम्मदशाह बोला—"कौन कह सकता है? यह बहुत शान्त और सीधा है। देखनेमें काफ़ी प्रसन्न भी दिखाई देता है।"

"क्या मैं इससे दो-चार बातें कर सकता हूँ?" मेहमानने पूछा—"मैं दो-चार प्रश्न करना चाहता हूँ।"

"हाँ, हाँ, आप पूछ सकते हैं।" यह कहकर मुहम्मदशाहने इलियासको बुलाया।

दोनों बूढ़े-बुढ़िया दरवाज़ेपर आये। इलियासने मालिकको और मेहमानको सलाम करके कुछ प्रार्थना की, और घुटनोंके बल दरवाज़ेके पास बैठ गया। उसकी स्त्री अपनी मालिकिनके पास परदेके पीछे चली गई। इलियासके आगे कूमिसका एक प्याला बढ़ाया गया। उसने अतिथियोंका स्वास्थ्य पान किया, और प्याला रख दिया।

उस मेहमानने, जो प्रश्न करना चाहता था, पूछा—"बाबा, यह बताओ कि जब तुम हम लोगोंमें आते हो, तब तुम्हें अपने पुराने सुख-चैनके जीवन और आजकलकी गिरी हुई अवस्थाको याद करके, दुःख तो नहीं होता?"

इलियास मुस्कराया और बोला—"अगर मैं आपसे यह कहूँ कि सुख क्या है और दुख क्या है, तो आप मेरा विश्वास न करेंगे। बेहतर है कि आप यह बात मेरी स्त्रीसे पूछें। वह स्त्री है, इससे जो कुछ उसके मनमें होगा, सब कह देगी। वह आपके सवालका पूरा-पूरा जवाब देगी।"

मेहमानने परदेकी तरफ़ घूमकर कहा—"अच्छा, दादी, तुम्हीं बताओ कि अपने पहलेके सुख और वर्तमान मुसीबतोंके विषयमें तुम्हारा क्या ख्याल है?"

परदेके पीछेसे एक बूढ़ी आवाज़ सुनाई दी—"मैं जो कुछ समझती हूँ, सुन लो। पचास वर्ष तक मैं अपने पतिके साथ रही, और सुखकी खोज करती रही, लेकिन हमें सुख न मिला। हाँ, इन पिछले दो वर्षोंसे हमें पूरा सुख मिला है। हम मज़दूरोंकी भाँति रहते हैं, और वास्तवमें सुखी हैं, अब हमें कोई अभिलाषा नहीं है।"

यह सुनकर मेहमानोंको ही नहीं, बल्कि मुहम्मदशाहको भी बड़ा आश्चर्य हुआ। वह खड़ा हो गया, और उसने बुढ़ियाको देखनेके लिए परदा एक ओरको खिसका दिया। वह परदेके पीछे हाथ बाँधे खड़ी थी। वह अपने वृद्ध पतिकी ओर देखकर मुस्कराई। उत्तरमें वृद्ध भी मुस्कराया।

"बुढ़िया बोली—"मैं सच कहती हूँ, हँसी नहीं करती। आधी शताब्दी तक हम लोग सुखकी खोज करते रहे। जब तक हम लोग अमीर थे, हमें सुख मुयस्सर न हुआ। लेकिन अब, जब हमारे पास कुछ न रह गया, और हम लोग किसानोंमें रहकर मज़दूरी करने लगे, तब हम ऐसे चैनमें हैं कि कह नहीं सकते।"

"तुम्हें यह सुख किस बातमें मिला?"

"सुनिये, यह सुख काहेमें मिला। जब तक हम अमीर थे, तब तक मुझे कभी अपने पतिके साथ एक घंटा भी शान्ति-पूर्वक बैठना न नसीब हुआ। हमें आपसमें बातचीत करने, अपनी आत्माकी चिन्ता करने या भगवानका भजन करनेके लिए व़क्त ही न मिलता था। दिन-रात न जाने कितनी चिन्ताएँ लगी रहती थीं। अक्सर मेहमान आया करते थे, तब यह फ़िक्र लगी रहती थी कि उन्हें क्या खिलावें-पिलावें, उन्हें उपहारमें क्या दें, जिसमें उनकी दृष्टिमें हमारी हेठी न हो। हर वक्त़ यह चिन्ता लगी रहती थी कि कहीं भेड़ों या मेमनोंको भेड़िया न खा जाय, लुटेरे घोड़े न हाँक ले जायं। रातमें सोते वक्त़ भी इस चिन्तासे नींद न आती थी कि कहीं भेड़ें मेमनोंको दबा न दें, जिससे उसका दम घुट जाय। हम रातोंमें उठ-उठकर देखते थे। इधर एक चिन्तासे मुश्किलसे छुट्टी मिलती थी, तब तक दूसरी नई उठ खड़ी होती थी। जाड़ोंके लिए घास कैसे इकट्ठा

खो जाय, चरागाहका बन्दोबस्त कैसे हो ? बस, ऐसा ही लगा रहता था। मगर इससे भी खराब बात जो थी, वह मेरा और मेरे पतिका झगड़ा था। वे कहते 'ऐसा होना चाहिए।' मैं कहती 'नहीं, ऐसा न होना चाहिए।' बस, हम लोगोंमें कहा-सुनी होने लगती, और इस प्रकार हम लोग पापके भागी होते। इसी तरह एक चिन्तासे दूसरी चिन्तामें, और एक पापसे दूसरे पापमें जीवन बीतता था, और कभी चैन न मिलता था।"

"अच्छा, आजकल ?"

"अब मैं, और मेरा बूढ़ा सवेरे साथ-साथ उठते हैं। अब सभी बातोंमें हमारा उनका एक ही मत है। हम लोग प्रेमसे बातें किया करते हैं, किसी तरहकी कोई झगड़ेकी बात ही नहीं है। जो कुछ चिन्ता है, वह अपने मालिकको प्रसन्न रखनेकी। मालिककी भलाईके लिए काम करनेमें हमें प्रसन्नता होती है। जब कामपर से लौटते हैं, तब खाना या कूमिस तैयार मिलती है। जाड़ेमें बढ़िया आग जलती रहती है, उसपर से सम्भूर की भी कमी नहीं है। अब हमें बराबर आपसमें बातचीत करनेके लिए, आत्म-चिन्तनके लिए और भगवानका भजन करनेके लिए समय मिला करता है। पचास वर्ष तक सुखकी खोज की, मगर सुख, अब जाके मिला।"

मेहमान लोग हँसने लगे। मगर इलियासने कहा—"भाइयो, हँसो मत। यह हँसीकी बात नहीं है, यह मानव-जीवनका असली सार है। पहले कुछ दिनों तक हम मूर्ख थे, और धनके खो बैठनेपर रोया करते थे। लेकिन परमेश्वरने हमें वास्तविक सत्य दिखा दिया। अब हम सुखी हैं। हम यह हँसीको समझानेके लिए नहीं कहते, बल्कि इसलिए कहते हैं कि इससे आप लोगोंको भी लाभ हो।"

तब मुल्लाने कहा—"यह कथन बिलकुल सच और बुद्धिमत्तापूर्ण है। इलियासने बड़ी सच्ची बात कही है। इसका हरएक शब्द हमारे कुरान-शरीफ़में लिखा है।"

मेहमानोंकी हँसी बन्द हो गई। वे अपने मनमें गम्भीरतासे सोचने लगे।

उस साल ईस्टरका त्यौहार कुछ जल्दी हो गया था, लोग अब तक 'स्ले' पर आते-जाते थे। छप्परोंपर बर्फ़ जमी हुई थी, और देहातोंमें इधर-उधर नाले-नालियाँ बह रही थीं, गढ़ोंमें पानी भरा था। सड़कके पार, दो झोपड़ोंके बीचमें भी एक कुछ बड़ासा गढ़ा था। इन झोपड़ोंकी दो लड़कियोंका ध्यान उसकी ओर गया। एक लड़की तो बहुत छोटी थी, दूसरी उससे कुछ बड़ी। दोनोंको उनकी माताओंने नये फ्राक पहनाये थे। छोटी लड़कीका फ्राक नीले रंगका था और बड़ीका पीले रंगका, जिसपर ख़ूबसूरत बेल-बूटे थे। दोनोंके सिरोंपर एक-एक सुन्दर रूमाल बँधा था। खाना खानेके बाद ही दोनों भागकर उसी गढ़ेपर खेलनेके लिए पहुँचीं।

वे गन्दा पानी मझाकर खेल करना चाहती थीं। छोटी लड़की अपने नये जूते पहने हुए, चुपके-चुपके पानीके किनारेपर पहुँची, इतनेमें उसकी साथिनने चिल्लाकर कहा—"मलाश्का रुको। पानीमें मत जाओ, मा चिल्लायेंगी। पहले जूते उतार दो, मैं भी अपने उतारे देती हूँ।" उन्होंने जूते उतार दिये, अपने फ्राक ऊपरको खींच लिये, और पानीमें उतर गईं।

थोड़ी ही मलाश्का पिंडुली तक डूब गई। उसने चिल्लाकर कहा—"यह बड़ा गहरा है, मुझे डर लगता है।"

"ओह, नहीं, कोई डर नहीं है। बीचमें बिल्कुल गहरा नहीं है; बस, सीधी चली आओ।"—अकुल्काने जवाब दिया।

वे दोनों पास-पास आ पहुँचीं। बड़ी लड़कीने कहा—"मलाश्का, होशियारीसे। तुम बहुत छींटें उड़ाती हो। आहिस्तासे चलो।"

बड़ीने मुश्किलसे यह बात कही थी कि धपाक मलाश्काने अपने नन्हें

पैरसे एक ऐसा फचाका किया, जिससे बड़ीका सारा फ़्राक गीला हो गया। यहाँ तक कि उसके मुँह और आँखोंमें भी छीटें पड़ीं। जब अकूल्युश्काने यह देखा कि उसका सारा फ़्राक ख़राब गया, तब तो वह बिगड़ पड़ी, और घूँसा बांधकर मलाश्कापर लगी गुस्सा उतारने। मलाश्का एकदम भयभीत हो गई, और बचनेके लिए गढ़ेसे निकलकर घरकी तरफ़ भागी।

इसी समय अकूल्युश्काकी मा उधरसे आ निकली। उसने अपनी लड़की का फ़्राक घुटनेसे गर्दन तक रँगा हुआ देखकर, बिगड़कर कहा—"तू यहाँ क्या करती है? गन्दी चुड़ैल।"

"मलाश्काने किया है। उसने जान-बूझकर मेरे ऊपर पानी उछाला है।"

माने क्रुध होकर मलाश्काका पीछा किया, और उसके सिरपर एक चपत जमाई। मलाश्काको रुलाई से गली-भर गूँज उठी। उसकी मा दौड़कर झोपड़ेसे निकल आई, और अकूल्युश्काकी मासे कहा-सुनी करने लगी—"तुम मेरी लड़कीको मारनेवाली कौन होती हो?"

शीघ्र ही दोनोंमें ख़ूब मन लगाकर गाली-गलौज होने लगी। गली-भरके अड़ोसी-पड़ोसी भी आ गये, और ख़ासी भीड़ जमा हो गई। आदमी बड़बड़ाने लगे, औरतें चीख़ने लगीं। सब अपनी-अपनी हाँकते थे, कोई किसीकी बातपर ध्यान न देता था। गाली और कोसा-मंसीके बाद मार-पीटकी नौबत आई, और ख़ासी लड़ाई होने लगी। इतनेमें एक बूढ़ी—अकूल्युश्काकी दादी—निकल आई।

"हाँ, हाँ, बच्चो, यह बड़ा ख़राब है। ईस्टरके दिन कहीं यह किया जाता है। आज तो परमेश्वरको धन्यवाद देनेका दिन है। इस तरह गाली-गलौज करके पाप न करो।" मगर बेचारी बूढ़ीकी बात किसीने न

सुनी। उन्होंने धक्का देकर उसे एक तरफ़ कर दिया। बेचारी बूढ़ी उन्हें कभी शान्त न कर पाती, यदि लड़कियोंने एक नई बात न की होती। इधर तो यह गाली-गलौज और मार-पीट हो रही थी, और उधर बड़ी लड़की अपने कपड़े निचोड़कर फिर गढ़ेपर पहुँच गई। उसने एक पत्थर लेकर गढ़ेके किनारे खुरचना शुरू किया, जिससे पानी बहकर सड़कपर आने लगा। मलाश्का भी आकर नाली खोदनेमें उसकी मदद करने लगी, जिससे पानी ठीक ढंगसे बहे। किसान लोग अब तक ग़ुस्सेसे आपसमें बहसा-बहसी और कहा-सुनी कर रहे थे। यहाँ तक की लड़कियोंकी बनाई हुई नालीसे पानी बह-बहकर उनके पैरोंके नीचे आने लगा। दोनों लड़कियाँ बड़ी प्रसन्नतासे नालीके इधर-उधर दौड़ने लगीं।

"मलाश्का, इसे रोको, रोको"—अकूल्युश्काने बड़ी मुश्किलसे हँसी रोकते हुए चिल्लाकर कहा। छोटी लड़की भला उसे क्या रोकती? वह उत्तरमें खिलखिलाने लगी।

वे प्रसन्नतासे अपनी नदीके किनारे नाचने लगीं। एक ज़रासी लकड़ी उनकी नदीकी धारमें बह रही थी। वे उसे देखकर ताली बजा-बजाकर प्रसन्न होने लगीं, और उसके साथ नाचती हुई भीड़के बीचोबीच तक आ पहुँचीं।

बूढ़ीने फिर अपनी आवाज़ उठाई और कहा—"तुम लोगोंको ईश्वरका डर भी नहीं है, जो तुम इसी बुरी तरह लड़ रहे हो! तुम लोग लड़कियोंके लिए लड़ रहे हो, और उन्हें तो देखो, वे अपना झगड़ा कभीका भूल गईं और अब देखो, कैसी प्रसन्नतासे मिलकर खेल रही हैं। क्या ये तुमसे ज़्यादा बुद्धिमान नहीं हैं?"

पैरसे एक ऐसा फचाका किया, जिससे बड़ीका सारा फ्राक गीला हो गया। यहाँ तक कि उसके मुँह और आँखोंमें भी छीटें पड़ीं। जब अकूल्युश्काने यह देखा कि उसका सारा फ्राक ख़राब गया, तब तो वह बिगड़ पड़ी, और घूँसा बाँधकर मलाश्कापर लगी ग़ुस्सा उतारने। मलाश्का एकदम भयभीत हो गई, और बचनेके लिए गढ़ेसे निकलकर घरकी तरफ़ भागी।

इसी समय अकूल्युश्काकी मा उधरसे आ निकली। उसने अपनी लड़की का फ्राक घुटनेसे गर्दन तक रँगा हुआ देखकर, बिगड़कर कहा—"तू यहाँ क्या करती है? गन्दी चुड़ैल।"

"मलाश्काने किया है। उसने जान-बूझकर मेरे ऊपर पानी उछाला है।"

माने क्रुध होकर मलाश्काका पीछा किया, और उसके सिरपर एक चपत जमाई। मलाश्काकी रुलाई से गली-भर गूँज उठी। उसकी मा दौड़कर झोपड़ेसे निकल आई, और अकूल्युश्काकी मासे कहा-सुनी करने लगी—"तुम मेरी लड़कीको मारनेवाली कौन होती हो?"

शीघ्र ही दोनोंमें ख़ूब मन लगाकर गाली-गलौज होने लगी। गली-भरके अड़ोसी-पड़ोसी भी आ गये, और ख़ासी भीड़ जमा हो गई। आदमी बड़बड़ाने लगे, औरतें चीख़ने लगीं। सब अपनी-अपनी हाँकते थे, कोई किसीकी बातपर ध्यान न देता था। गाली और कोसा-मंसीके बाद मार-पीटकी नौबत आई, और ख़ासी लड़ाई होने लगी। इतनेमें एक बूढ़ी—अकूल्युश्काकी दादी—निकल आई।

"हाँ, हाँ, बच्चो, यह बड़ा ख़राब है। ईस्टरके दिन कहीं यह किया जाता है। आज तो परमेश्वरको धन्यवाद देनेका दिन है। इस तरह गाली-गलौज करके पाप न करो।" मगर बेचारी बूढ़ीकी बात किसीने न

सुनी। उल्टे धक्का देकर उसे एक तरफ़ कर दिया। बेचारी बूढ़ी उन्हें कभी शान्त न कर पाती, यदि लड़कियोंने एक नई बात न की होती। इधर तो यह गाली-गलौज और मार-पीट हो रही थी, और उधर बड़ी लड़की अपने कपड़े निचोड़कर फिर गढ़ेपर पहुँच गई। उसने एक पत्थर लेकर गढ़ेके किनारे खुरचना शुरू किया, जिससे पानी बहकर सड़कपर आने लगा। मलाश्का भी आकर नाली खोदनेमें उसकी मदद करने लगी, जिससे पानी ठीक ढंगसे बहे। किसान लोग अब तक ग़ुस्सेसे आपसमें बहसा-बहसी और कहा-सुनी कर रहे थे। यहाँ तक की लड़कियोंकी बनाई हुई नालीसे पानी बह-बहकर उनके पैरोंके नीचे आने लगा। दोनों लड़कियाँ बड़ी प्रसन्नतासे नालीके इधर-उधर दौड़ने लगीं।

"मलाश्का, इसे रोको, रोको"—अकूल्युश्काने बड़ी मुश्किलसे हँसी रोकते हुए चिल्लाकर कहा। छोटी लड़की भला उसे क्या रोकती? वह उत्तरमें खिलखिलाने लगी।

वे प्रसन्नतासे अपनी नदीके किनारे नाचने लगीं। एक ज़रासी लकड़ी उनकी नदीकी धारमें बह रही थी। वे उसे देखकर ताली बजा-बजाकर प्रसन्न होने लगीं, और उसके साथ नाचती हुई भीड़के बीचोबीच तक जा पहुँची।

बूढ़ीने फिर अपनी आवाज़ उठाई और कहा—"तुम लोगोंको ईश्वरका कुछभी डर नहीं है, जो तुम ऐसी बुरी तरह लड़ रहे हो! तुम लोग लड़कियोंके लिए लड़ रहे हो, और उन्हें तो देखो, वे अपना झगड़ा कभीका भूल गई और अब देखो, कैसी प्रसन्नतासे मिलकर खेल रही हैं। क्या वे तुमसे ज्यादा बुद्धिमान नहीं है?"

किसान ख़ामोश हो गये। वे लड़कियोंकी तरफ़ देखने लगे, और अपनी लड़ाईपर लज्जित होने लगे। फिर वे अपनी मूर्खतापर हँसते हुए अपने-अपने घर चले गये।

"जब तक हमलोग छोटे बच्चोंकी तरह बुद्धिमान न होंगे, तब तक हम परमेश्वरको नहीं पा सकेंगे।"

वसेवोलाड गारशिन

(१८५५—१८८८)

गारशिनने अपने जीवनमें मुश्किलसे दस कहानियाँ लिखी होंगी; क्योंकि वह सिर्फ तैंतीस वर्षकी छोटी अवस्थामें मर गया था, फिर भी उसकी गणना रूसी गद्य-लेखकोंके महारथियोंमें है। चार्ल्स लैम्बकी भांति गारशिनको भी रह-रहकर पागलपनके दौरे हुआ करते थे। इसी बीमारीमें उसके प्राण गये थे। उसने अपनी 'लाल फूल' शीर्षक कहानीमें एक पागलकी मानसिक अवस्थाका जो सुन्दर चित्र खींचा है, वह एक प्रकारसे स्वयं उसका आत्म चरित्र है। उसका स्वभाव बहुत पज़मुर्दासा था। उसे ईश्वरकी शक्तिमें विश्वास न था, और न इस बातका ही विश्वास था कि उसे कभी सुख और शान्ति नसीब होगी, चाहे उसके सारे मंसूबे पूरे ही क्यों न हो जायँ।

गारशिनका प्रत्येक शब्द उसके आन्तरिक अनुभवसे निकला हुआ है। उसकी प्रत्येक लाइन सत्य और वास्तविकताके रंगमें शराबोर है, इसीलिए उसकी कहानियाँ इतनी सुन्दर होती हैं।

पिछले तीस वर्षमें संसारमें अनेकों युद्ध हो चुके हैं, जिनमें करोड़ो आदमी जानसे मारे गये, और उनसे कई गुना ज़्यादा घायल हुए हैं। हम रोज़ ही अख़बारमें पढ़ा करते हैं कि फलाँ जगह युद्धमें इतने आदमी मरे, इतने घायल हुए, मगर इस मरने और घायल होनेकी भीषणताको हम अनु-

मात्र भी कल्पना नहीं कर सकते। 'चार दिन' शीर्षक कहानी से हम युद्धकी भीषणताका कुछ अनुमान लगा सकेंगे। घायल सिपाहियोंपर कैसी बीतती है, इसका ऐसा वास्तविकता-पूर्ण और चमत्कारिक वर्णन मुश्किलसे मिलेगा।

मुझे याद है कि हम लोग किस तरह जंगलमें दौड़ते थे, किस तरह गोलियाँ सनसना रही थीं, टूटी डालियां गिर रही थीं और हमलोग कैसे कँटीली झाड़ियोंको चीरते-फाड़ते आगे बढ़ रहे थे। जंगलके सिरेपर कोई लाल-लाल चीज़ दिखाई दी, जो इधर-उधर बड़ी तेज़ीसे दौड़ रही थी।

पहली कम्पनीका सिडरोव एकाएक ज़मीनपर बैठ गया। पहले मेरे मनमें एकबार यह बात दौड़ गई कि वह हमारे दस्तेमें आ कैसे गया? मैंने उसकी ओर दृष्टि डाली, तो देखा कि वह अपनी भयभीत आँखें फाड़-फाड़कर मेरी ओर निहार रहा है। उसके मुँहसे खूनका पनाला बहने लगा। मुझे यह भी याद है कि जङ्गलके सिरेपर झाड़ियोंमें मैंने उसे भी देखा था। वह एक लम्बा-चौड़ा मोटा तुर्क था। यद्यपि मैं दुबला और कमज़ोर था, फिर भी मैं सीधा उसके ऊपर दौड़ पड़ा। एक बड़े ज़ोरका धमाका हुआ। मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि कोई बड़ी और भारी चीज़ मेरे पाससे, शायँसे निकल गई। मेरे कान झनझना उठे। मैंने समझा, वह मुझपर गोली चला रहा है, परन्तु एक भयभीत चिंघारके साथ उसने झाड़ियोंमें घुसनेकी कोशिश की। यदि वह चाहता, तो घूमकर झाड़ियोंकी दूसरी ओर भाग जा सकता था, परन्तु वह इतना ज़्यादा डर गया था कि उसके होश-हवास गुम हो गये, और वह उन्हीं कँटीली झाड़ियोंमें घुस पड़ा। एक ही बारमें मैंने उसके हाथसे बन्दूक़ गिरा दी, और फिर अपनी पूरी संगीन उसकी छातीमें भोंक दी। एक भयंकर गरज या चिंघारकी भाँति आवाज़ सुनाई दी। मैं फिर आगेकी ओर लपका।

हमारे साथी 'हुर्रा, हुर्रा' चिल्ला रहे थे। वे गोलियाँ चलाते जा

कम्पनी-कप्तानने हमें पहले ही बता दिया था। उसने अपनी गूँजती हुई आवाज़में, इशारा करके कहा था—"बहादुरो, हम लोगोंको वहाँ पहुँचना है। हम लोग वहाँ पहुंच गये, अतः हम लोग हारे नहीं हैं, मगर फिर भी किसीने मुझे उठाया क्यों नहीं? यह एक खुली जगह है। यहाँ सभी चीजें दिखाई देती हैं। मैं अकेला ही गिरनेवाला नहीं हो सकता, क्योंकि गोलियाँ बड़े ज़ोरोंसे चल रही थीं। ज़रा सिर घुमाकर चारों ओर देखना चाहिए। अब यह आसान है, क्योंकि जब मुझे घासकी पत्तीपरसे चींटी उतरती दिखाई पड़ती थी, मैंने उठनेकी कोशिश की थी, और उठकर गिर पड़ा था, तब मैं पहलेकी भाँति औंधे मुँह नहीं गिरा था, बल्कि पीठके बल गिरा था। इसीलिए तो मुझे तारे दिखाई देते हैं।

मैं अपने शरीरको उठाकर बैठनेकी कोशीश करता हूँ। जब दोनों टाँगे घायल हों, तो यह बहुत मुश्किल है। निराशा पहलेकी अपेक्षा मुझे और भी व्याकुल कर देती है, परन्तु अन्तमें मैं बैठ ही जाता हूँ। पीड़ाके मारे मेरी आँखसे आंसू निकलने लगते हैं। मेरे ऊपर नील-श्याम आकाश का एक टुकड़ा हैं, जिसमें एक चमकदार और कई छोटे-छोटे तारे चमक रहे हैं। मेरे चारों ओर लम्बी-लम्बी काली-काली कोई चीज़ है। ऐं यह तो झाड़ियाँ हैं। अच्छा मैं झाड़ियोंमें हूँ, इसीलिए उन लोगोंने मुझे नहीं देखा।

मेरे रोएँ खड़े हो गये।

मगर मैं झाड़ियोंमें आ कैसे गया? उन्होंने तो मुझे खुलेमें मारा था। शायद घायल होनेके बाद, दर्दसे बेसुध होकर, मैं यहाँ रेंगकर आ गया हूँगा। लेकिन कैसी विचित्र बात है कि उससमय तो मैं रेंगकर यहाँ तक

आ गया, मगर अब हिल भी नहीं सकता। शायद तब मेरे एक ही ज़ख़्म होगा। दूसरा झाड़ियोंमें आनेके बाद लगा हो।

पीलिमा मिश्रित लालिमा प्रकट हो रही है। चमकदार तारे मद्धिम हो रहे हैं। छोटे-छोटे तारोंमेंसे कुछ ग़ायब हो रहे हैं—चन्द्रमा निकल रहा है। रूसमें—घरपर इस वक्त कैसा सुन्दर होगा!

मुझे एक अजीब आवाज़-सी सुनाई देती है। ऐसा मालूम होता है कि कोई कराहता हो। क्या यहाँ मेरे पास कोई है? क्या मेरी तरह किसीकी टाँगें टूट गई हैं? या पेटमें गोली लगी है? क्या उसे लोग मेरी तरह भूल गये हैं? नहीं, यह कराहना तो बिल्कुल ही पास सुनाई देता है, लेकिन यहाँ कोई और तो है नहीं। हे ईश्वर! वह तो मेरी ही आवाज़ है। यह मेरा ही दर्दनाक कराहना है। क्या सचमुचमें यह पीड़ा इतनी भयानक है कि कराहनेकी आवाज़ निकले? मैं समझता हूँ कि कुछ ऐसी ही है, लेकिन मैं इसे अच्छी तरह समझ नहीं सकता; क्योंकि मेरा दिमाग़ एकदम गड़बड़ है, और मेरा सिर इतना भारी है, जैसे सीसा।

बेहतर है कि मैं लेट रहूँ और सो जाऊँ। निद्रा, निद्रा, निद्रा····क्या मैं कभी इस निद्रासे जग भी सकूँगा? अगर न भी जग सकूँ, तो क्या हर्ज है?

ठीक उसी क्षण, जब मैं लेटनेके लिए तैय्यार होता हूँ, चाँदकी एक पीली किरण मेरे चारों ओर उजाला कर देती है। मैं देखता हूँ कि मुझसे कुछ गज़के फासलेपर कोई बड़ी काली चीज़ पड़ी है। चाँदकी रोशनीमें उस काली चीज़पर कुछ छोटी-छोटी चमकदार चीज़ें झलमला उठती हैं। वे शायद बटन या कारतूस होंगे। वह या तो कोई लाश है या कोई घायल

आदमी। होगा कुछ मुझे परवाह नहीं। मैं लेटूँगा……नहीं, यह असम्भव है। हमारे आदमी चले नहीं गये होंगे। वे यहीं हैं। उन्होंने तुर्कोंको हरा दिया है और इस स्थानपर कब्जा कर लिया है, मगर मुझे उनकी आवाज़ क्यों नहीं सुन पड़ी? उनके कैम्पकी आगकी लकड़ियोंकी चटचटाहट भी नहीं सुनाई देती। निश्चय ही मैं इतना कमज़ोर हो गया हूँ कि उसे नहीं सुन सकता। वे लोग ज़रूर यहीं होंगे।

"बचाओ बचाओ!"

मेरे हृदयमें पागलोंकी तरह यह रूखा चीत्कार ज़बर्दस्ती निकल पड़ता है, लेकिन उसका कोई जवाब नहीं मिलता। रातके सन्नाटेमें वह ज़ोरसे गूँज कर रह जाता है। फिर पूर्ण निस्तब्धता छा जाती है, केवल झींगुर पहलेकी भाँति अविराम गतिसे अपना शोर मचा रहे हैं। गोल मुखवाला चन्द्रमा करुण दृष्टिसे मेरी ओर देखता है।

अगर यह पासवाला आदमी घायल होता, तो इस चीत्कारसे अवश्य ही जग पड़ता। वह मुर्दा ही है। हमारा है या तुर्कोंका? रामका नाम लो, किसीका हो, इससे मतलब? निद्रा एक बार फिर जलती हुई आँखोंको बन्द कर देती है।

यद्यपि मैं कुछ देरसे जग रहा हूँ, मगर आँखें बन्द किये हुए पड़ा हूँ। मैं आँख खोलना नहीं चाहता, क्योंकि बन्द पलकों ही से मुझे धूपकी गर्मी मालूम पड़ रही है, और यदि मैं आँखें खोलूँगा, तो उनमें धूप लगेगी। इसके अलावा हिलना-डुलना अच्छा नहीं है……। कल (उसे मैं कल ही समझता हूँ) मैं घायल हुआ था। एक दिन बीत गया। और भी। और मैं मर जाऊँगा। क्या ही अच्छा हो कि दिमाग़ भी अपना

काम बन्द कर दे, मगर उसे तो कोई चीज़ बन्द नहीं कर सकती। मेरे मस्तिष्कमें विचार और स्मृतियाँ भरी हुई हैं। खैर, यह बहुत देर तक नहीं रहेगा। शीघ्र ही सब खतम हो जायगा। कुछ भी बाक़ी न रहेगा। केवल अखबारोंमें एक-दो लाइनोंका एक समाचार निकल जायगा कि लड़ाईमें हमारी हानि कम हुई, इतने सैनिक घायल हुए और एक सिपाही इवानोव मारा गया। नहीं, वे नाम भी नहीं देंगे। केवल यही लिख देंगे—'एक मरा'। केवल एक सिपाही—ठीक इसी तरह जैसे कोई कहे कि एक कुत्ता मर गया। मेरी आँखोंके सामने एक पुरानी घटनाकी तसवीर-सी आ खड़ी हुई। यह दृश्य मेरे जीवनकी एक बहुत पुरानी घटना है। मैं सड़कपर जा रहा था, मगर सामने भीड़ देखकर रुक गया। देखा कि कुछ लोगोंकी भीड़ चुपचाप खड़ी हुई सफ़ेद चीज़की ओर ताक रही थी। वह सफ़ेद चीज़ खूनसे लथपथ थी और बड़ी बुरी तरह भूँक रही थी। वह एक छोटासा खूबसूरत कुत्ता था, जो ट्रामसे कुचल गया था। वह मर रहा था—जैसे इस वक्त मैं मर रहा हूँ। सामनेकी कोठीका दरबान भीड़में घुस पड़ा और कुत्तेका कालर पकड़कर उठा ले गया। भीड़ छँट गई।

क्या मुझे भी कोई उठा ले जायगा? नहीं, यहीं पड़े-पड़े मृत्यु होगी। अच्छा, जीवन भी कितना सुन्दर है! उस दिन, जिस दिन कुत्तेकी दुर्घटना हुई थी, मैं कैसा सुखी था। चलता था, तो ऐसा मालूम होता था कि जैसे नशेमें मतवाला हूँ। मेरे प्रसन्न होनेका कारण भी था। ओह, स्मृतियो मुझे छोड़ दो, मुझे मत सताओ। ओः! अतीतका वह सुख औ[illegible] और वर्तमानकी यह भयंकर पीड़ा!......बेहतर है कि [illegible] इस वक्त [illegible] हुए पड़े रहो। पुरानी बातोंकी याद ही क्यों करते [illegible] करो! अरे [illegible] वेदना ज़ख़्मोंके दर्दसे कहीं ज़्यादा भयंकर है! [illegible] उसके पास तक पहुँ-

सूर्य तप रहा है, गर्मी बढ़ रही है। मैं अपनी आँखें खोलकर देखता हूँ। वही झाड़ियाँ हैं, वही आकाश है, मगर अब धूपका उजाला है। हाँ, मेरी पड़ोसो भी तो मौजूद है। अरे, यह तो किसी तुर्ककी लाश है। वह कितनी भारी है। मैं पहचान गया, यह तो वही है—

मेरे सामने एक आदमी पड़ा है, जिसे मैंने मारा है। मैंने उसे क्यों मारा? वह यहाँ खूनसे सना हुआ—मुर्दा पड़ा है। क़िस्मत उसे यहाँ क्यों लाई? वह कौन है? क्या मेरी भाँति उसके भी वृद्धा मा है? बहुत दिनों तक उसकी वृद्धा मा अपने कच्चे झोपड़ेके द्वारपर बैठकर, उत्तरकी ओर ताकती हुई, उसका रास्ता देखा करेगी। वह मनमें सोचेगी कि उसका लाल, उसके बुढ़ापेकी लकड़ी, उसका अन्नदाता आता होगा। और मैं? मैं भी तो—मैं इस तुर्कका स्थान लेनेको तैयार हूँ। यह तुर्क कितना सुखी है। उसे न कुछ सुनाई देता है और न ज़ख़्मोंका दर्द ही मालूम होता है। उसे न तो मर्म-वेदना ही सताती है और न प्यास। मेरी संगीनने उसे बेध दिया है। उसकी छातीपर एक बड़ा-सा काला छेद है, जिसके चारों ओर खून जमा है। यह मेरी करतूत है।

मैं यह नहीं [illegible]। जब मैं लड़नेके लिए चला था, मेरी कदापि [illegible] कष्ट पहुँचाऊँ। मुझे लोगोंको मारना पड़ेगा, [illegible] मैं नहीं आई थी। अपनी कल्पनामें मैंने [illegible] मैं लड़ाईमें जाकर गोलियोंके सामने अपनी [illegible] ने किया भी वही।

[illegible]। लेकिन यह अभागा 'फलाहीन'— [illegible] निककी वर्दी पहने था) तो मुझसे भी

चना क्या आसान है? जो कुछ हो, मैं उसके पास तक ज़रूर जाऊँगा।

मैं रेंगता हूँ। मेरे पैर घिसटते हैं। मेरी भुजाओंमें मुश्किलसे इतनी शक्ति है कि मैं हिल-डुल सकूँ। समस्त शरीर निर्जीव हो रहा है। लाश कोई बारह गज़की दूरीपर होगी, मगर मेरे लिए वह दूर है—बारह मीलसे अधिक दूर है। फिर भी मुझे रेंगना ही चाहिए। मेरा गला जल रहा है, मालूम होता है कि आगकी लपटसे झुलसा जा रहा हो। बिना पानीके लोग जल्द मरा करते हैं। फिर भी, शायद—मैं रेंगता हूँ। मेरे पैर ज़मीनपर अटकते हैं। ज़रासा भी हिलने-डुलनेमें मर्मान्तक पीड़ा होती है। मैं कराहता हू। अन्तमें मैं उसके पास तक पहुँच जाता हूँ। वह उसकी बोतल है। उसमें पानी है—बहुत-सा पानी है! वह आधीसे ज़्यादा भरी है। यह पानी कई दिन तक—मेरी मृत्यु तक—काम देगा!

मेरे शिकार, तुमने मेरे प्राण बचा लिये! एक कोहनीपर भार देकर मैंने बोतलके तस्मेको खोलना शुरू किया। एकाएक मेरा बैलेन्स बिगड़ गया, मैं मुँहके बल, अपने निर्जीव प्राणरक्षककी छातीपर गिर पड़ा। उसके शरीरसे सड़ायँदकी कड़ी बू पहले ही आ रही थी।

मैं पानी पीता हूँ। पानी गरम है, पर साफ़ है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बहुत-सा है। अब तो मैं कई दिन तक जीवित रहूँगा। मुझे याद है कि मैंने 'घरका वैद्य' नामी पुस्तकमें पढ़ा था कि यदि आदमीको केवल पानी मिलता रहे, तो वह हफ़्ते-भरसे अधिक जीवित रह सकता है। उसी किताबमें एक आदमीका क़िस्सा है, जिसने भूखे रहकर आत्म-हत्या करनी चाही थी, मगर वह बहुत दिन तक जीवित रहा, क्योंकि वह पानी पीता था।

लेकिन इससे क्या ? यदि मैं पाँच-छै दिन और भी जीवित रहा, तो उससे फ़ायदा ? हमारे आदमी सब चले गये। तुर्क भाग गये। यहाँ पास-पड़ोसमें कोई सड़क भी नहीं है। मैं वैसे भी मर जाऊँगा। केवल बात इतनी है कि तीन दिनकी तकलीफ़की जगह मैं उसे हफ़्ते-भरकी बना रहा हूँ। क्या यह अच्छा नहीं है कि शीघ्र ही इसका खात्मा कर दूँ ? मेरे पड़ोसीकी बन्दूक़ उसकी बगलमें पड़ी है। बड़ी उमदा अंग्रेज़ी बन्दूक़ है। मुझे केवल हाथ बढ़ाकर उठा लेना है, फिर एक बार धाँय—सब झंझट पार। मुट्ठी-भर कारतूस ज़मीनपर बिखरे पड़े हैं, जिन्हें व्यवहार करनेका उसे मौक़ा ही नहीं मिला। तो क्या मैं इस सबका खात्मा कर दूँ ? या अभी इन्तज़ार करूँ ? इन्तज़ार काहेका ? बचनेका ? या मौतका ? क्या तबतक इन्तज़ार करूँ, जब तक तुर्क लोग आकर मेरी चटनी न बनाने लगें ? बेहतर है कि मैं ही क्यों न अपने हाथोंसे यह करूँ ? नहीं, मुझे हिम्मत न हारनी चाहिए। मैं अन्त तक—अपनी अन्तिम साँस तक—सामना करूँगा। एक बार वे मुझे देख भर लें, तो बस, मैं बच गया।

शायद मेरी हड्डियाँ न टूटी हों, मैं फिर अच्छा हो जाऊँ। मैं फिर अपना देश देखूँगा। मेरी माताको और माशाको—हे ईश्वर! उन्हें मेरी सब सच्ची बातें न ज्ञात होने पावें। उन्हें यही समझने दो कि मैं सीधा-सीधा मारा गया। यदि उन्हें यह मालूम हो कि मैं दो, तीन, चार दिन तक ऐसा कष्ट भोगता रहा, तो उनकी क्या दशा होगी ?

मेरा दिमाग़ चक्कर खाता है। अपने पड़ोसीके पास तककी यात्राने मुझे एकदम बेदम कर डाला। और अब यह भयंकर बदबू! तुर्क एकदम काला पड़ गया है। कल-परसों इसकी क्या दशा होगी ? मैं यहाँ केवल

इसी कारणसे पड़ा हूँ कि मुझमें इतनी शक्ति नहीं है कि घसिटकर यहाँसे दूर हट सकूँ। थोड़ी देर सुस्ता लूँ, फिर रेंगकर अपने पुराने स्थानपर चला जाऊँगा। सौभाग्यसे हवा उल्टी तरफ़से आ रही है और बदबू मेरी ओरसे उसकी ओर जायगी। मैं यहाँ एकदम बेदम पड़ा हूँ। धूपके मारे मुँह और हाथ जले जाते हैं। किसी तरह रात हो। मैं समझता हूँ कि यह मेरी दूसरी रात होगी।

मेरे विचार धुँधले हो जाते हैं, मुझे नींद आ रही है।

मैं बहुत देर तक सोता रहा हूँगा, क्योंकि जब जागा तो देखा कि रात है। हरएक चीज़ वैसी ही है, जैसी थी। मेरे घावोंमें बड़ा दर्द हो रहा है। मेरा पड़ोसी वह पड़ा है—लम्बा-चौड़ा, पर एकदम निश्चल। मैं अपनेको रोकता हूँ, फिर भी मुझे रह-रहकर, बरबस उसीका ख़याल आता है। मैंने अपने प्रिय बन्धु-बान्धवोंको त्यागा, अपने देशको छोड़ा, हज़ारों मीलकी यात्रा करके इस लड़ाईमें शामिल हुआ, भूख सही, प्यास सही, सर्दीमें ठिठुरा, गर्मीसे जला, और अन्तमें इस समय यहाँ पड़ा हुआ इस असह्य वेदनाको सह रहा हूँ। क्या यह सब केवल इसीलिए था कि यह बेचारा तुर्क अपने जीवनसे हाथ धो बैठे? लेकिन केवल इस ख़ून—हत्या—को छोड़कर मैंने अपने सैनिक उद्देश्योंको पूरा करनेके लिए क्या किया?

ख़ून? ख़ूनी? कौन? मैं!

जब मैंने लड़ाईमें भर्ती होनेका निश्चय किया था, उस समय मेरी माता ने या माशाने मुझे कितना रोका था। वे मेरे लिए कितना रोई थीं। उस समय मैं अपने विचारोंमें इतना अन्धा हो रहा था कि मैंने उनके आँसू देखे ही नहीं। मैंने यह समझा ही नहीं था (मगर अब समझ रहा हूँ) कि मैं

अपने प्रियजनोंके लिए क्या कर रहा हूँ, लेकिन इन सब बातोंको अब याद करना व्यर्थ है। जो बीत गया, वह वापस नहीं आता। मेरे जान-पहचान वालोंने मेरी भर्तीकी खबर सुनकर कैसा ताज़ुब किया था। उन्होंने कहा था—"कैसा ख़ब्ती है, ऐसा काम ले रहा है, जिसे ख़ाक-धूल भी नहीं जानता।" मगर उन्होंने ऐसा क्यों कहा? वे लोग अपनी देश-भक्ति और वीरत्वके विचारोंके सामने ऐसे शब्द मुँहसे कैसे निकाल सके? उनकी नज़रोंमें तो मुझमें वीरता, देश-भक्ति आदि गुण मौजूद थे, फिर भी मैं 'ख़ब्ती' था!

मैं घरसे किशोनेव छावनी गया था। उस समय मेरे कंधेपर फ़ौजी झोला पड़ा था और अन्य सैनिक हथियारोंसे मैं लदा हुआ था। वहाँ और भी हज़ारों आदमियोंके साथ मुझे कुछ दिन तक ठहरना पड़ा था। उन हज़ारोंमें केवल—मेरे जैसे—दो चार ही आदमी स्वयं अपनी इच्छासे भर्ती हुए थे। बाक़ी लोगोंका यदि वस चलता तो वे अपने घरपर ही बने रहते! ख़ैर, वे भी हम लोगों ही की भाँति आये, उन्होंने भी हज़ारों मीलकी यात्रा की और हमारी ही तरह या हमसे भी अच्छी तरह लड़े। यद्यपि वे अपनी-अपनी ड्यूटी करते हैं, फिर भी यदि उन्हें इजाज़त मिल जाय, तो वे उसे छोड़-छाड़कर अपने घर चले जायँ।

सवेरेकी तेज़ हवा चलने लगी। झाड़ियाँ हिलती हैं। एक उनींदी चिड़िया उड़ जाती है। तारे मद्धिम पड़ रहे हैं। काले आकाशमें पीलिमा आ रही है। आसमान रूईके मुलायम गालोंके समान बादलोंसे भर रहा है। पृथ्वीसे भूरे रंगका कोहरा-सा उठ रहा है। यह मेरे तीसरे दिनका आरम्भ है। तीसरा दिन—काहेका? जीवनका? वेदनाका?

यह तीसरा दिन है—अभी और कितने दिन होंगे? जो कुछ हो, मगर अधिक नहीं होंगे। मैं बहुत कमज़ोर हूँ और इस योग्य नहीं हूँ कि लाशसे दूर हट सकूँ। ख़ैर, जल्द ही हम दोनों एक-से हो जायँगे। फिर एक दूसरेको बुरे न मालूम होंगे।

प्यास लगी है, पानी पीना चाहिए। मैं दिनमें तीन बार—सुबह, दोपहर और शामको पानी पीऊँगा।

सूरज उग आया। काली-कँटीली झाड़ियोंकी डालियोंके बीचसे उसकी बड़ी थाली ख़ूनके समान लाल दिखाई देती है। मालूम होता है कि दिन ख़ूब गरम होगा। पड़ोसीजी! तुम्हारी क्या हालत होगी? अभीसे दुर्गन्ध महाभयानक है।

बेशक, इसकी दशा तो भीषण है। इसके बाल गिर रहे हैं। इसकी खाल पीली पड़ गई है। उसका चेहरा पीला पड़ गया है। चेहरेके ऊपरकी खाल इतनी तन गई है कि वह कानोंके नीचे फट गई है। उसके घुटनोंपर फ़ौजी पट्टी बँधी है, मगर फिर भी वे फूलकर कुप्पा हो रहे हैं। उसके शरीरपर कीड़े-मकोड़े रेंग रहे हैं। उसके कोटके बटनोंके दरम्यान बड़े-बड़े फफोले-से पड़ गये हैं। वह इतना ज़्यादा फूल गया है कि पहाड़-सा दिखाई देता है। आज सूर्य उसकी क्या दशा करेगा?

अब उसके पास लेटना असह्य है। जैसे बने, मुझे यहाँसे दूर रेंगना ही पड़ेगा, लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ? अभी तक मेरे हाथमें इतनी शक्ति है कि मैं उसके उठाकर बोतल खोल सकता हूँ और पानी पी सकता हूँ, मगर भला मैं अपने निर्जीव शरीरको हिला-डुला सकता हूँ? फिर भी मैं यहाँसे खिसकूँगा, चाहे एक बारमें बहुत थोड़ा—घंटेमें आधा गज़ ही—रेंग सकूँ, मगर हटूँगा जरूर।

सवेरेका सम्पूर्ण समय इस स्थान-परिवर्तन ही में बीत गया। दर्द बड़ा ख़राब है, मगर अब उससे क्या होता है? अब तो याद भी नहीं है—वास्तवमें अब मैं कल्पना भी नहीं कर सकता—कि अच्छेमें कैसा मालूम होता था। अब मैं वेदनाका आदी हो रहा हूँ। लाशसे मैं सचमुचमें कोई बारह गज दूर हट गया हूं। अब मैं फिर अपनी पुरानी जगहपर आ गया, मगर हाय, ताजी हवाका सुख अधिक देर तक न मिल सका। सड़ती हुई लाशसे दस-बारह गज़की दूरीकी हवा ताज़ी नहीं कही जा सकती, उसपर भी हवाका रुख़ बदल गया। अब वह लाशकी ओरसे मेरी ओर सड़ी बदबू ला रही है। बदबू इतनी तेज़ है कि मेरा जी मचलाने लगा। मेरा ख़ाली पेट ज़ोरसे सिकुड़ता है, जिससे बड़ा दर्द मालूम होता है। ऐसा जान पड़ता है कि पेटके भीतर जो कुछ भी है सब निकल पड़ेगा। बदबूदार ज़हरीली हवा ठीक मेरे चेहरेपर आकर लगती है। ओफ़, अब तो धीरज नहीं रहता। मैं रोता हूँ।

मैं एकदम शक्तिहीन बेहोश पड़ा हूँ। एँ, एकाएक यह क्या? क्या यह मेरे विकृत मस्तिष्ककी ख़राबी है? मुझे मालूम पड़ता है, जैसे कुछ आवाज़ सुनाई देती हो। नहीं—हाँ, हाँ, मुझे आदमियोंकी बोली और घोड़ोंकी टापोंकी आवाज़ सुनाई देती है। मैं प्रायः चिल्ला उठता हूँ, मगर फिर मैं अपनेको रोकता हूं। अगर वे तुर्क हुए, तो? हाँ, अगर वे तुर्क हुए तो कैसी बीतेगी? अभी तक जितना कष्ट है, उससे और न मालूम कितनी भयंकर पीड़ा वे लोग देंगे। इसके विचार-मात्रसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वे मेरी ज़ख्मी टाँगकी खाल उधेड़कर भूनेंगे, मगर यदि इतना ही हो तब भी ग़नीमत है, लेकिन वे सब बड़े बेढब हैं, न मालूम क्या-क्या

करेंगे। क्या यहाँ पड़े-पड़े मरनेकी अपेक्षा उनके हाथों मरना अच्छा न होगा?

मगर, यदि वे अपने हों? आह, यह कम्बख्त झाड़ियाँ मुझे चारों ओरसे क्यों घेरे हैं? मैं इनके मारे कुछ देख भी नहीं सकता। केवल एक जगहसे, जहाँ डालियोंमें थोड़ीसी साँस है, मुझे दूरकी एक छोटी घाटी दिखाई देती है। इसमें एक चश्मा है, जहाँ हम लोगोंने लड़ाईके पहले पानी पिया था। हाँ, वहीं चश्मेपर पुलका काम देनेके लिए एक बड़े भारी पत्थरकी पटिया आरपार रखी है। उनके घोड़े उस पटियापर होकर ज़रूर ही निकलेंगे। अब तो आवाज़ भी धीमी पड़ गई। मैं पहचान नहीं सकता कि वे कौन भाषा बोल रहे हैं। हे ईश्वर, क्या मेरे कान भी ख़ता करने लगे। यदि वे हमारे ही लोग हैं—मैं चिल्लाऊँगा। चश्मेके पाससे भी वे मेरी पुकार सुन लेंगे। 'बाशीबज़ौक' लुटेरोंके हाथमें पड़नेकी बनिस्बत इन तुर्क सिपाहियोंके हाथमें पड़ना अच्छा है।

उन्हें आनेमें देर क्यों हो रही है? मैं तो इन्तज़ारके मारे परेशान हूँ। मुझे अब बदबू भी नहीं मालूम होती, यद्यपि वह जैसी-की-तैसी बनी है।

एकाएक चश्मेके पुलपर कोसैक सवार दिखाई देते हैं। नीली वर्दियाँ लाल फीते और भाले—सब दिखाई देते हैं। वे लगभग आधा दस्ता हैं। आगे-आगे एक काली दाढ़ीवाला अफ़सर अपने शानदार घोड़ेपर सवार आ रहा है। जैसे ही उसने झरनेको पार किया, वैसे ही उसने अपनी ज़ीनपर पीछेकी ओर घूमकर फ़ौजी हुक्म दिया—

"ट्राट मार्च।" (दुलकी चलो)

"रुको, रुको, ईश्वरके लिये मुझे बचाओ! भाई, मुझे बचाओ!"—मैं चिल्लाया।

पर घोड़ोंकी टापोंकी आवाज़, तलवारोंकी खड़खड़ाहट, और कोसैकोंकी गुल-गपाड़ेकी बातचीतके हल्ले-गुल्लेमें मेरी रुखी आवाज़ डूब गई। वे मेरी पुकार नहीं सुनते। हायरे बदक़िस्मती! मेरी तमाम ताक़त खतम हो गई मैं ज़मीनमें मुँह छिपाकर रोता हूँ। बोतल उलट गई उससे पानी बहने लगा। पानी—जो इस समय मेरा जीवन है, मेरी मुक्तिका एकमात्र साधन है, और मौतसे बचनेका एकमात्र सहारा है—बहा जा रहा है, और मैं उसे देखता ही नहीं हूं। मैंने तब देखा, जब केवल आधा गिलास बचा होगा, बाक़ी सब सूखी—प्यासी—मिट्टीने सोख लिया।

इस भयावनी घटनाके बाद मेरे ऊपर जो बेसुधी छाई, उसका वर्णन मैं कैसे कर सकता हूँ? मैं एकदम निश्चेष्ट अर्धनिमीलित आँखोंसे पड़ा हूँ। हवा बराबर रुख़ बदल रही है। कभी एकदम साफ़ ताज़ी हवाका झोंका आ जाता है और कभी सड़ी बदबूकी लपट। मेरे पड़ोसीकी दशा आज ऐसी भयानक हो गई है कि बयानसे बाहर है। अब उसका चेहरा बाक़ी नहीं है! हड्डीपर से मांस सब गायब हो गया, जिससे उसकी खीसें निकल आई हैं और चेहरेपर एक भयंकर स्थायी हँसी मालूम होती है। यद्यपि मैंने पहले भी कई नर-मुंडोंको अपने हाथमें लिया है; उन्हें अच्छी तरह देखा है, मगर इसकी इस भयंकर हँसीसे मैं भयभीत हो रहा हूँ। मैंने कंकाल भी देखे हैं, मगर चमकदार बटनोंवाली फ़ौजी वर्दी पहने हुए कंकालको देखकर शरीर कांप उठता है। मैंने मनमें विचार किया—"युद्ध इसीका नाम है! और यह सारा उसका चिह्न है!"

सूर्य बड़ी तेज़ीसे तप रहा है। मेरे हाथ और चेहरा बहुत पहले ही झुलस चुके हैं। मैंने जितना पानी बाक़ी था, एक-एक बूँद पी डाला। प्याससे मैं बेइन्तहा परेशान था। मैंने सोचा कि ज़रासा एक घूँट पानी पी लूँ, किन्तु मुँहसे बोतल लगाते ही जितना पानी बाक़ी था, सब एक ही घूँट-में हो गया। हाय, जब कोसैक मेरे समीप थे, तब मैं क्यों नहीं चिल्लाया? अगर वे तुर्क भी होते, तो इससे तो अच्छा ही होता। तुर्क लोग घंटा-दो-घंटा मुझे तकलीफ़ दे लेते, मगर इस दशामें नहीं मालूम कितनी देर तक यहाँ पड़ा-पड़ा भोगा करूँगा।

मा, मेरी प्यारी मा! मेरी दशा सुनकर तुम अपने सफ़ेद बालोंको नोचोगी, छाती कूटोगी, दीवारसे अपना सिर पटकोगी। तुम उस घड़ीको कोसोगी, जिसमें तुमने मुझे जन्म दिया था। तुम इस कम्बख़्त संसारको कोसोगी, जिसने मनुष्य-जातिको पीड़ा पहुँचानेके लिए युद्धका आविष्कार किया है।

मगर तुम और माशा शायद कभी मेरे कष्टोंकी कथा न सुनोगी। मा, तुम्हें अन्तिम प्रणाम है, प्राणप्यारी पत्नी, तुम्हें अन्तिम प्यार। हाय, यह सब कैसा कठोर, कैसा भयंकर है। मेरा कलेजा निकल पड़ता है—

फिर उसी सफ़ेद छोटे कुत्तेका ध्यान आता है। दरबानमें रत्ती-भर भी दया नहीं थी। उसने उसका सिर बड़े ज़ोरसे दीवारमें खींच मारा और उसे नालीमें—जहाँ कूड़ा-करकट फेंका जाता था—फेंक दिया, मगर उस समय भी वह ज़िन्दा था! वह दिन-भर वहीं पड़ा भोगता रहा, मगर मैं कैसा कम्बख़्त हूँ कि तीन दिनसे पड़ा भोग रहा हूँ! कल चौथा दिन होगा, फिर पाँचवाँ, फिर छठा—। मौत तू कहाँ है? आ मुझे ले जा।

मगर न मौत आती है और न मुझे ले जाती है। मैं यहाँ भयंकर धूपमें पड़ा हूँ। जलते हुए गलेको तर करनेके लिए एक घूंट पानी भी नहीं है। सड़ी हुई लाश भी अपनी छूत मुझ तक फैला रही है। अब तो वह सड़ायँदका एक ढेर-मात्र है। कीड़ोंके झुण्ड-के-झुण्ड उससे चिपट रहे हैं। जब वे उसे समूचा खाकर खतम कर देंगे और हड्डी तथा वर्दीके सिवा और कुछ बाक़ी न रह जायगा, तब मेरा नम्बर आयेगा। फिर मैं भी ऐसा ही हो जाऊँगा।

इसी तरह दिन बीतता है, रात बीतती है। हर चीज़ वैसी ही है, जैसी थी। सुबह होता है, मगर कोई अन्तर नहीं है। धीरे-धीरे दिन चढ़ता है, झाड़ियाँ हिलती हैं और एक दूसरेसे रगड़ती हैं। उनमें से ऐसी खरखराहटकी आवाज़ निकलती है, मानो वे कह रही हैं—"तुम मरोगे, तुम मरोगे, तुम मरोगे!"

सामनेकी झाड़ियाँ मानो उनका जवाब देती हैं—"तुम न देखोगी, तुम न देखोगी, तुम न देखोगी।"

"तुम उन्हें यहाँ न पाओगे।"—किसीने मेरे पास ज़ोरसे कहा।

मैं चौंककर होशमें आ गया।

हमारी फौजका कार्पोरल टकोपलेव झाड़ियोंके बीचसे मुझे देख रहा है।

उसने पुकारकर कहा—"फावड़ेवालो, देखो यहाँपर भी दो मुर्दे हैं; एक हमारा, दुश्मनका।"

मैं चिल्लाकर कहना चाहता हूँ—"फावड़ेवालोंको मत बुलाओ, मुझे न दफनाओ, मैं अभी जिन्दा हूँ।" मगर मेरे सूखे होठोंसे एक कराहनेकी आवाज़के सिवा कुछ नहीं निकलता।

"हे भगवान, क्या यह मुमकिन है कि यह अब तक ज़िन्दा है ? यह तो इवानोव है। यारो, जल्दी करो। ये हज़रत अभी ज़िन्दा हैं। डाक्टरको जल्द लाओ।"

एक क्षण बाद पानी, शराब और कुछ अन्य चीज़ें मेरे मुँहमें डाली जाती हैं, और फिर मुझे सब अँधेरा मालूम होता है।

स्ट्रेचर (डोली) के हिलने-डुलनेमें बड़ी सुरीली आवाज़ निकल रही है। इस आवाज़से मुझे आराम मालूम होता है। मैं एक क्षणमें जग उठता हूँ और दूसरे क्षण फिर बेहोश हो जाता हूँ। मेरे ज़ख़्मोंपर पट्टी बँधी है, इसलिए अब उनमें दर्द नहीं होता। मेरे शरीर-भरमें ऐसी प्रसन्नता छाई है, जिसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता।

"रुको! उ-ता-रो! डोली-बरदारो, चलो! डोली उठाओ, और जाओ!" यह सब हुक्म हमारा रेडक्रास अफ़सर पीटर इवानोविच दे रहा है। इवानोविच दुबला, लम्बा और दयालु आदमी है। वह इतना लम्बा है कि यद्यपि मैं स्ट्रेचरमें, लोगोंके कंधोंपर रखा हुआ चल रहा हूँ, फिर भी यदि मैं उसकी ओर दृष्टि फेरता हूं, तो उसका सिर और कंधा दिखाई देता है।

"पीटर इवानोविच!"—मैंने धीरेसे कहा।

"क्या है दोस्त ?"—पीटरने मेरी ओर झुककर कहा।

"इवानोविच, डाक्टरने तुमसे क्या कहा है ? क्या मैं जल्द मर जाऊँगा ?"

"बेवकूफ़ीकी बात है, इवानोव। तुम मरोगे नहीं। तुम्हारी सब हड्डियाँ साबित हैं। तुम क़िस्मतवर हो, न तो तुम्हारी हड्डी ही टूटी है औन न कोई

खास रग ही कटी है, मगर ये साढ़े तीन दिन तुम जिन्दा कैसे रहे ? ” उधा-धया खाया ?”

“कुछ नहीं ।”

“और पानी ?”

“मैंने तुर्ककी पानीकी बोतल ले ली थी। इवानोविच, मैं इस वक्त बात नहीं कर सकता। बादमें—”

“बहुत अच्छा। ईश्वर तुम्हें आराम करे। अब तुम फिर सो जाओ।”

फिर नींद और बेहोशी।

डिवीजनल अस्पतालमें मेरी नींद खुली। डाक्टर और नर्स मुझे घेरे हुए हैं। डाक्टरोंमें मैं सेन्ट-पीटर्सबर्गके एक प्रसिद्ध सर्जनको पहचान सकता हूँ। वह मेरी टाँगोंके ऊपर झुका हुआ है। उसके हाथोंमें खून लगा है। थोड़ी देर तक मेरी टाँगोंकी दुरुस्ती करके उसने मेरी ओर देखा और कहा—“तुम अपने सौभाग्यपर ईश्वरको धन्यवाद दो। हमें तुम्हारा एक पैर अलग कर देना पड़ा है, मगर यह कोई बात नहीं। क्या तुम अब बात-चीत कर सकते हो ?”

“हाँ।”

मैंने उन्हें सब पूरा क़िस्सा बताया, जिसे मैंने यहाँ लिखा है ।

एन्टेन चेखोव

(१८६०-१९०४)

चेखोवकी गणना संसारके बड़े प्रसिद्ध कहानी-लेखकोंमें है। उसका पिता एक साधारण व्यापारी था और स्वयं चेखोवने डाक्टरीकी शिक्षा प्राप्त की थी, मगर उसने प्रैक्टिस विशेषरूपसे नहीं की। वह अपने विद्यार्थी-जीवनमें ही साहित्य-क्षेत्रमें प्रविष्ट हुआ, और शीघ्र ही उसकी गणना प्रसिद्ध लेखकोंमें होने लगी।

सन् १८८७ में उसने अपना पहला नाटक 'इवानोव' प्रकाशित किया था। सन् १८९० में उसने संघालियन टापूकी यात्रा की, जो उस समय रूसी अपराधियोंके लिए कालेपानीका काम देता था। इस यात्राके फल-स्वरूप उसने 'संघालियन द्वीप' नामक पुस्तककी रचना की, जिसने इस कालेपानीको तोड़नेमें बड़ी सहायता की थी।

सन् १८९६ में उसका दूसरा नाटक 'सी गल' प्रकाशित हुआ। यह नाटक पहली बार सेंट-पीटर्सबर्गमें खेला गया, परन्तु असफल हुआ; मगर बादमें वह पुनः मास्कोके 'आर्ट थियेटर' में खेला गया और पूर्णरूपसे सफल हुआ। इसके बादसे उसका इस थियेटरसे घनिष्ट सम्बन्ध हो गया। सन् १९०१ में उसने एक अभिनेत्रीसेविवाह किया, और सन् १९०४ में उसकी मृत्यु हुई।

चेखोवकी लोक-प्रियता खास तौरपर उसकी हास्य-रसकी कहानियोंके

लिए हैं। 'कलाकी एक वस्तु' उसकी हास्यात्मक रचनाका सुन्दर उदाहरण है।

चेखावकी कला मनोवृत्ति-आत्मक है। उसने मनुष्यको मनुष्यके रूपमें ही चित्रित किया है। 'डार्लिंग' उसकी रचनाओंमें एक अत्यन्त सुन्दर है। इस कहानीके विषयमें टाल्सटायने जो राय दी है, वह यहाँ उद्धृत की जाती है। उससे पाठकोंको इस कहानीका सौन्दर्य पूर्णरूपसे प्रकट हो सकेगा।

पेनशनयाफ़्ता सरकारी अफ़सर प्लेनीनिकोवकी लड़की ओल्गिका बाहर बरामदेमें बैठी हुई कुछ सोच रही थी। तीसरे पहरका वक़्त था, बड़ी गर्मी पड़ रही थी, मक्खियोंके मारे नाकमें दम था। पर हाँ, यह सोचकर सान्त्वना मिलती थी कि शीघ्र ही शाम हो जायगी। मेंहसे भरे हुए काले-काले बादल पूरबसे आ रहे थे और रह-रह कर हवाके झोंकोंसे बहुत दूरीपर मेंह बरसनेका आभास भी मालूम पड़ता था।

आँगनके बीचोबीच 'टिवोली थियेटर' का मालिक और नाटककार कूकिन जो उसी मकानके एक बाजूमें रहता था, खड़ा था। वह आस्मानकी ओर देख रहा था।

"आज़ फ़िर!" उसने निराशा-भरे स्वरमें कहा—"आज फ़िर पानी बरसनेके आसार हैं! रोज़-रोज़ पानी! पानी! मालूम होता है, जैसे सिर्फ़ शरारतके लिये ही पानी बरसता हो। इससे मेरा तो मटिया-मेट हुआ जा रहा है! हर रोज़ कितना अधिक नुक़सान होता है!"

उसने अपने हाथ मले और ओल्गिकाकी ओर मुड़कर बोला—"आपने हम लोगोंका जीवन देखा? यह किसी भी आदमीको रुलानेके लिए काफ़ी है! चाहे जितनी मेहनत करो, चाहे जितनी फ़िक्र करो, रात-रातभर जाग-कर सोचा करो कि कैसे उन्नति की जाय, कैसे सुधार किया जाय; मगर नतीजा क्या होता है? कुछ नहीं। पहली बात तो यह है कि पब्लिक बड़ी मूर्ख और अज्ञान है। आप उसे अच्छे-से-अच्छे नाटक, प्रहसन, गीति नाट्य, चाहे जो कुछ दिखायें; मगर क्या आप समझते हैं कि पब्लिकको यह सब भाता है? रत्ती-भर भी नहीं। वह क्या चाहती है, नीचे दर्जेके मज़ाक, भोंडी-

नहीं चीजें। उसके बाद, जरा मौसिमको देखिये! प्रत्येक शामको पानी बरसता है। १० मईसे लगातार पानी बरस रहा और पूरा जूनका महीना बीत गया! यह महा अनर्थकारी बात है। तमाशेमें पब्लिक तो आती नहीं; मगर आर्टिस्ट (ऐक्टर) तो अपनी तनख्वाह छोड़ न देंगे, और न मालिक मकान-किराया ही छोड़ देगा।

दूसरे दिन शामको जब फिर आस्मानमें बादल इकट्ठे होने शुरू हुए, तब कुलिनसे न रहा गया। उसने पगलोंकी तरह हँसकर कहा—"बरसने दो! ईश्वर करे, थियेटरमें पानीकी बाढ़ आ जाय और मैं उसमें डूब जाऊँ, जिससे मुझे इस लोककी तरह परलोकमें भी सुख नसीब न हो। ऐक्टर मुझपर नालिश करेंगे, करने दो। मैं परवाह नहीं करता! बहुत होगा साइबेरियाकी कालापानी हो जायगा! फाँसी की सजा हो जायगी। होने दो! हा! हा! हा!"

वही बात फिर तीसरे दिन दोहराई गई।

ओलिम्पा बिना एक शब्द कहे गम्भीरता-पूर्वक कुलिनकी बातें सुनती थी और कभी-कभी उसकी आँखोंमें आँसू भर आते थे। अन्तमें कुलिनकी मुसीबतोंसे उसका दिल भर आया और वह उसके प्रेममें पड़ गई। कुलिनका कद नाटा, शरीर दुबला और आवाज़ लड़कियोंकी भाँति कोमल हुई थी। उसकी मूँछें भी नहीं हुई थीं तथा चेहरा [illegible], जिससे सदा [illegible] [illegible] थी। फिर भी उसने ओलिम्पाके हृदयमें [illegible] और [illegible] प्रेम [illegible]। वह बिना मिले रह ही नहीं सकती थी, और सदा [illegible] [illegible] [illegible] करती थी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करते थे, [illegible] [illegible] [illegible] मीठी बातोंसे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सन चाहती है। कल हम लोगोंने जर्मन कवि गेटेका सुप्रसिद्ध नाटक 'फाउस्ट' खेला था। आप विश्वास न करेंगे कि थियेटरकी प्रायः सभी बेंचें खाली थीं। अगर मैंने और कूकिनने कोई भद्दा अश्लील-सा खेल किया होता, तो थियेटरमें तिल धरनेकी जगह न होती। कल मैं और कूकिन 'नर्कमें तानसेन' नामक खेल दिखायेंगे। आप उसे ज़रूर आकर देखियेगा।"

कूकिन जो कुछ कहता ओलिंका उसे दोहराया करती। अपने पतिकी तरह वह भी कलाके प्रति जनताकी उदासीनता और अशिष्टता देखकर उससे घृणा करती थी। वह 'रिहर्सल' में हस्तक्षेप करती, ऐक्टरोंको उनकी भूलें बताती, बाजेवालोंकी देखभाल करती, और जब किसी समाचारपत्रमें उसके पतिके थियेटरके बिरुद्ध आलोचना छपती, तो वह फूट-फूटकर रोती, जाकर सम्पादकको समझाती और प्रतिवाद करती।

सभी ऐक्टर उसे चाहते थे। वे उसे 'कूकिन और मैं' या 'डार्लिंग' कहा करते थे। वह उनसे बड़ा अच्छा बर्त्ताव करती थी। ज़रूरत होने-पर उन्हें थोड़ा-बहुत रुपया-पैसा भी उधार दे देती थी, और यदि उनमेंसे कभी कोई उसका रुपया मार भी लेता, तो वह चुपचाप अकेलेमें बैठकर खूब रोती, लेकिन कभी अपने पतिसे शिकायत न करती।

जाड़ेमें भी वे बड़े आनन्दपूर्वक रहे। उन्होंने फ़स्ल-भरके लिए शहरका थियेटर-हाल भाड़े ले लिया, और उसे घूमने-फिरनेवाली नाटक-मंडलियों, बाजीगरों और अन्य खेल-तमाशेवालोंको थोड़े-थोड़े दिनोंके लिए किरायेपर देते रहे। ओलिंका अब कुछ तैयार-सी दीखने लगी, और सन्तोष तथा तृप्तिसे सचमुच ही उसका चेहरा चमकने लगा; मगर कूकिन दिन-दिन

दुबला और पीला होता जाता था। वह सब कहीं अपने घाटेका रोना रोता फिरता था, यद्यपि जाड़े-भर उसका रोज़गार खूब चलता रहा। रातमें उसे खाँसी आती, तब उसकी स्त्री उसे रस्बेरीज़ खिलाती, बनफ़्शेका काढ़ा पिलाती, सिरपर यू-डी-कलोनमें तर करके रूमाल रखती, और अपना मुलायम शाल उसे अच्छी तरह उढ़ा देती।

ओलिंका उसके बालोंपर हाथ फेरती, और भोलेपनसे कहती—"प्यारे, तुम कितने सुन्दर हो!"

ईस्टर-सप्ताहमें कूकिन एक नई मंडली इकट्ठी करनेके लिए मास्को गया। ओलिंका अकेली रह गई। उसे रातको नींद न आती, वह खिड़कीके सामने बैठकर तारोंकी ओर देखा करती। उस समय वह अपनी तुलना उस मुर्गीसे किया करती थी, जो मुर्गेके बिना बसेरा नहीं लेती।

कूकिनको मास्कोमें कुछ दिनके लिए रुक जाना पड़ा। उसने लिखा कि वह कई हफ़्ते बाद आवेगा, और तब थियेटरका पूरा बन्दोबस्त करेगा; मगर पीछे दो दिन बाद बहुत रात बीते, ओलिंकाके दरवाज़ेपर एक अशकुन भरी खटखटाहट सुनाई दी। खट-खट, खट-खट, खट-खट, किसीने बड़े ज़ोरसे दरवाज़ा खटखटाया। बावर्चिन नींदसे उठकर काँपती हुई दरवाज़ा खोलने गई।

"दरवाज़ा खोलो!"—किसीने दरवाज़ेकी उस ओरसे गम्भीर आवाज़में कहा—"तुम्हारे नाम टेलिग्राम है।"

यह पहला ही अवसर नहीं है, जब ओलिंकाको उसके पतिने तार भेजा हो; परन्तु न मालूम क्यों, इस बार तारका नाम सुनकर वह डर उठी। उसने काँपते हुए हाथोंसे तार खोलकर ये शब्द पढ़े—"आइवन पेट्रोविच

सन चाहती है। कल हम लोगोंने जर्मन कवि गेटेका सुप्रसिद्ध नाटक 'फास्ट' खेला था। आप विश्वास न करेंगे कि थियेटरकी प्रायः सभी बेंचें खाली थीं। अगर मैंने और कूकिनने कोई भद्दा अश्लील-सा खेल किया होता, तो थियेटरमें तिल धरनेकी जगह न होती। कल मैं और कूकिन 'नर्कमें तानसेन' नामक खेल दिखायेंगे। आप उसे जरूर आकर देखियेगा।"

कूकिन जो कुछ कहता ओलिंका उसे दोहराया करती। अपने पतिकी तरह वह भी कलाके प्रति जनताकी उदासीनता और अशिष्टता देखकर उससे घृणा करती थी। वह 'रिहर्सल' में हस्तक्षेप करती, ऐक्टरोंको उनकी भूलें बताती, बाजेवालोंकी देखभाल करती, और जब किसी समाचारपत्रमें उसके पतिके थियेटरके विरुद्ध आलोचना छपती, तो वह फूट-फूटकर रोती, जाकर सम्पादकको समझाती और प्रतिवाद करती।

सभी ऐक्टर उसे चाहते थे। वे उसे 'कूकिन और मैं' या 'डार्लिंग' कहा करते थे। वह उनसे बड़ा अच्छा बर्त्ताव करती थी। ज़रूरत होनेपर उन्हें थोड़ा-बहुत रुपया-पैसा भी उधार दे देती थी, और यदि उनमेंसे कभी कोई उसका रुपया मार भी लेता, तो वह चुपचाप अकेलेमें बैठकर ख़ूब रोती, लेकिन कभी अपने पतिसे शिकायत न करती।

जाड़ेमें भी वे बड़े आनन्दपूर्वक रहे। उन्होंने फ़स्ल-भरके लिए शहरका थियेटर-हाल भाड़े ले लिया, और उसे घूमने-फिरनेवाली नाटक-मंडलियों, बाजीगरों और अन्य खेल-तमाशेवालोंको थोड़े-थोड़े दिनोंके लिए किरायेपर देते रहे। ओलिंका अब कुछ तैयार-सी दीखने लगी, और सन्तोष तथा तृप्तिसे सचमुच ही उसका चेहरा चमकने लगा; मगर कूकिन दिन-दिन

दुबला और पीला होता जाता था। वह सब कहीं अपने घाटेका रोना रोता फिरता था, यद्यपि जाड़े-भर उसका रोज़गार खूब चलता रहा। रातमें उसे खाँसी आती, तब उसकी स्त्री उसे रब्बेसूस खिलाती, बनफशेका काढ़ा पिलाती, सिरपर यू-डी-कलोनमें तर करके रूमाल रखती, और अपना मुलायम शाल उसे अच्छी तरह उढ़ा देती।

ओलिंका उसके बालोंपर हाथ फेरती, और भोलेपनसे कहती—"प्यारे, तुम कितने सुन्दर हो!"

ईस्टर-सप्ताहमें कूकिन एक नई मंडली इकट्ठी करनेके लिए मास्को गया। ओलिंका अकेली रह गई। उसे रातको नींद न आती, वह खिड़कीके सामने बैठकर तारोंकी ओर देखा करती। उस समय वह अपनी तुलना उस मुर्गीसे किया करती थी, जो मुर्गेके बिना बसेरा नहीं लेती।

कूकिनको मास्कोमें कुछ दिनके लिए रुक जाना पड़ा। उसने लिखा कि वह कई हफ्ते बाद आवेगा, और तब थियेटरका पूरा बन्दोबस्त करेगा; मगर थोड़े ही दिन बाद बहुत रात बीते, ओलिंकाके दरवाज़ेपर एक अशकुन भरी खटखटाहट सुनाई दी। खट-खट, खट-खट, खट-खट, किसीने बड़े ज़ोरसे दरवाज़ा भड़भड़ाया। रसोईदारिन नींदसे उठकर ऊँघती हुई दरवाज़ा खोलने गई।

"दरवाज़ा खोलो!"—किसीने दरवाज़ेकी उस ओरसे गम्भीर आवाज़में कहा—"तुम्हारे नाम टेलिग्राम है।"

यह पहला ही अवसर नहीं है, जब ओलिंकाको उसके पतिने तार भेजा हो; परन्तु न मालूम क्यों, इस बार तारका नाम सुनकर वह थर्रा उठी। उसने काँपते हुए हाथोंसे तार खोलकर ये शब्द पढ़े—"आइवन पेट्रोविच

(कूकिन) की आज अचानक मृत्यु हो गई। मंगलके दिन अन्तिम संस्कार होगा।"

नीचे मंडली के मैनेजर के दस्तखत थे।

"हाय प्यारे!"—कहकर ओलिंका ज़ोर-ज़ोरसे रोने लगी—"हाय मेरे स्वामी, हाय मेरे धन, क्या इसी दिनके लिए हमारा सम्मिलन हुआ था? मैं तुमसे क्यों मिली, हाय मैंने तुमसे क्यों प्रीति की? तुम अपनी प्यारी ओलिंकाको छोड़कर कहाँ सिधार गये?......"

मंगलको मास्कोमें कूकिनका अन्तिम संस्कार हो गया। बुधको ओलिंका घर लौट आई। घर पहुँचकर वह खाटपर पड़ गई और ऐसे ज़ोर-ज़ोरसे रोने-पीटने लगी कि उसकी दुखभरी आवाज़ सड़क तक सुनाई देती थी।

पड़ोसी सुनकर छातीपर हाथ रखते और कहते—"ओलिंका अपने पतिके लिए बिलख रही है।"

तीन महीने बाद ओलिंका एक दिन प्रार्थना करके गिरजेसे लौट रही थी। वह काली शोकसूचक पोशाक पहने थी। उसी समय इत्तफ़ाक़से उसका पड़ोसी ऐंद्रिविच भी—जो गिरजेसे लौट रहा था—उसके साथ हो लिया। वह सींक की टोपी दिये और सफ़ेद वास्कट—जिसमें सोनेकी चेन लटकती थी—पहने हुए था, जिससे वह मामूली व्यापारी न दिखाई देकर, छोटा-मोटा देहाती ज़मींदार-सा दिखाई पड़ता था।

"प्रत्येक बातमें कुछ-न-कुछ अर्थ होता है"—ऐंद्रिविचने सहानुभूति-भरे स्वरमें गम्भीरतासे कहा—"यदि हमारा कोई निकट-स्नेही मर जाता है, तो भगवानकी इच्छासे ही होता है। यह समझकर हमें अपने दुःखोंको विनय-पूर्वक सहन करना चाहिए।"

वह ओलिंकाके साथ-साथ ठेठ उसके दरवाज़े तक गया, और वहाँ उसका साथ छोड़ा। उस दिन, ओलिंकाको दिन-भर रह-रहकर ऐंड्रिविचकी गम्भीर आवाज़ सुनाई देती-सी जान पड़ती रही। जभी वह ज़रासी आँख बन्द करती, तभी उसे ऐंड्रिविचकी काली दाढ़ी दीखने लगती। उसके हृदयको वह बड़ा भला लगा। यह बात भी प्रत्यक्ष मालूम पड़ने लगी कि ऐंड्रिविच पर भी उसका काफ़ी प्रभाव पड़ा।

इस घटनाको हुए कई दिन नहीं बीते थे कि एक बूढ़ी औरत—जिसे ओलिंका बहुत कम जानती थी—उसके यहाँ काफ़ी पीनेके लिए आई। उसने बैठते ही ऐंड्रिविचकी बात छेड़ दी, और बतलाने लगी कि ऐंड्रिविच कैसा भलामानस है। अनेकों स्त्रियाँ उससे विवाह करने का अवसर पाकर न मालूम कितनी प्रसन्न होंगी। तीन दिन बाद स्वयं ऐंड्रिविच उससे मिलनेके लिए आया। वह दस मिनटसे अधिक नहीं ठहरा, और उसने बातें भी बहुत कम कीं, परन्तु ओलिंका उसके प्रेम में ऐसी गहरी तरह फँस गई कि रात-भर उसे बुखार चढ़ा रहा और आँख तक न लगी। दूसरे दिन सवेरे ही उसने उस बूढ़ीको बुलवा भेजा। शीघ्र ही उनका सम्बन्ध पक्का हो गया, और अधिक दिन बीतनेके पूर्व ही दोनोंका विवाह हो गया।

विवाहके बाद ऐंड्रिविच और ओलिंका आनन्दपूर्वक साथ-साथ रहने लगे। ऐंड्रिविच दोपहरके भोजनके समय तक अपने आफ़िसमें बैठता और भोजन के बाद काम-काज के लिए बाहर चला जाता। तब आफ़िसमें ओलिंका इसका स्थान ग्रहण करती और शाम तक बैठी-बैठी हिसाब-किताब लिखती और मालके चालानकी देख-भाल करती।

"अब हर साल लकड़ी—शहतीर—बीस प्रति सैकड़ा महँगी होती जाती

काके मकानकी बगलमें रहता था—आता और उसके पास बैठता। वह ताश खेलता, गप लड़ाता और इस प्रकार कुछ देरके लिए उसका मन बहलाता था। परन्तु ओलिंकाको इन सबकी अपेक्षा घोड़ा-डाक्टरके प्राइवेट जीवनकी बातों में अधिक आनन्द आता था। वह विवाहित था और उसके एक छोटा लड़का भी था। परन्तु वह अपनी स्त्रीके साथ नहीं रहता था, क्योंकि उसकी स्त्रीने उसे धोका दिया था; फिर भी वह अपने लड़केके खर्चके लिए महीनेके महीने चालीस रुपये भेजा करता था। जब वह अपने परिवारकी बातें करता, तब ओलिंका उन्हें सुनकर सिर हिलाती, ठंडी सांसें लेती और उसके लिए बहुत दुखी होती।

जब वह जाने लगता, तो ओलिंका मोमबत्ती लेकर दरवाज़े तक साथ जाती और कहती—"ईश्वर तुम्हारा भला करे। तुमने इतनी देर तक मेरा मन बहलाया है, इसके लिए तुम्हें धन्यवाद है। भगवान तुम्हें तन्दुरुस्ती दें-"

वह ठीक उसी प्रकार गम्भीरतासे बातें करती थी, जैसे उसका पति करता था। जब घोड़ा-डाक्टर सीढ़ीसे उतरकर बाहर चला जाता था, तब भी वह पुकारकर कहती थी—

—"ब्लाडीमीर, तुम्हें अपनी स्त्रीसे मेल कर लेना चाहिए। यदि और नहीं तो कमसे कम लड़केके विचारसे ही तुम्हें उसे क्षमा कर देना चाहिए। तुम जानते हो, लड़के सब-कुछ समझते हैं।"

जब एंड्रिच लौटकर आया, तब ओलिंकाने उससे घोड़ा-डाक्टरके दुखी दाम्पत्य-जीवनकी सारी कथा दबी ज़बानसे कही। दोनोंने सिर हिला कर ठंडी सांसें लीं, और कहा कि उस छोटे लड़केको अपने पिताकी अनुपस्थिति बहुत अखरती होगी। फिर एकाएक किसी अज्ञात सहानुभूतिके बन्धन

से दोनों-के-दोनों घुटने टेककर बैठ गये और प्रार्थना करने लगे कि ईश्वर उन्हें भी सन्तान दे।

इस प्रकार वे दोनों प्रेम और शान्तिपूर्वक छै वर्ष तक आनन्दसे रहे। छै वर्ष बाद एक दिन जाड़ेमें ऐंड्रिविच गरमागरम चाय पीकर फ़ौरन ही, नंगे सिर, बाहर चला गया। फल यह हुआ कि उसे सर्दी लग गई और वह खाटपर पड़ गया। अच्छे-से-अच्छे डाक्टरको दिखाया गया, मगर बीमारी न घटी और चार महीने बाद वह चल बसा। ओलिंका एक बार फिर विधवा हो गई।

ऐंड्रिविचको दफ़नाते समय ओलिंका रोने लगी—"प्यारे! मुझे क्यों छोड़े जाते हो? हाय! मैं तुम्हारे बिना कैसे रहूँगी? मैं अभागिन दुखिया हूँ। सभी भले आदमी मुझपर तरस खाते हैं......"

उसने शोकसूचक कपड़े पहने और टोपी और दस्ताने पहनना छोड़ दिया। वह घरके बाहर बहुत कम निकलती भी थी, तो केवल गिरजाघर या अपने पतिकी क़ब्रपर जानेके लिए। पतिकी मृत्युके छै महीने बाद उसने मातमी कपड़े उतारे और दरवाज़े खोले। अब वह कभी-कभी अपनी रसोईदारिनके साथ सवेरे बाज़ारसे चीजें खरीदने चली जाती थी, मगर घर-पर वह कैसे जीवन बिताती थी, वहाँपर क्या होता था, इसका किसीको कुछ पता न था। लोग सिर्फ़ अन्दाज़ा लगाते थे। वे इस प्रकारकी बातोंसे उसके जीवनका अनुमान करते थे, जैसे लोगोंने उसे बाहर बाग़में बैठकर घोड़ा-डाक्टरके साथ चाय पीते देखा था, या यह कि घोड़ा-डाक्टर उसे ज़ोर-ज़ोरसे पढ़कर अखबार सुनाया करता था, अथवा एक दिन राह चलते एक परिचित व्यक्तिसे भेंट होनेपर ओलिंकाने कहा था—

ठगीसी रह गई। बाहर घोड़ा-डाक्टर सिनेरडिन खड़ा था। उसके भी बाल सफ़ेद हो गये थे। वह फ़ौजी वर्दी न पहनकर मामूली लोगोंके सादे कपड़े पहने हुए था। ओलिंकाको सहसा अतीतकी अब बातें स्मरण हो आईं। वह रो पड़ी, और उसने उसे गलेसे लगा लिया। ओलिंकाके मुँहसे एक शब्द भी न निकला। वह इतनी उद्विग्न हो रही थी कि उसे यह भी न मालूम हुआ कि वे दोनों किस प्रकार भीतर जाकर चाय पीने बैठ गये।

"प्यारे ब्लाडीमीर"—ओलिंकाने प्रसन्नतासे काँपते हुए कहा—"तुम्हें भगवानने कहाँसे भेज दिया?"

"अब मैं यहाँ हमेशाके लिए बसने आया हूँ।"—उसने कहना आरम्भ किया—"मैं फ़ौजसे रिटायर हो गया, अब बुढ़ापामें यहाँ स्वतन्त्रता-पूर्वक दिन काटना चाहता हूँ। दूसरी बात यह है कि अब मुझे अपने लड़केको स्कूल भेजना है। उसकी पढ़नेकी उम्र हो गई। तुम्हें मालूम ही होगा कि मुझमें और मेरी स्त्रीमें मेल हो गया है।"

"तुम्हारी स्त्री कहाँ है?"—ओलिंकाने पूछा।

"वह और लड़का होटलमें है। मैं मकान ढूँढने निकला हूँ।"

"मगर तुम मेरा पूरा मकान ले सकते हो! अलग मकान लेकर क्या करोगे? मैं तुमसे किराया भी एक कौड़ी न लूँगी।" ओलिंकाने उत्तेजना-भरे स्वरमें कहा और एक बार फिर रो पड़ी। "तुम यहाँ रहो। हे ईश्वर, आज कैसा शुभ दिन है।"

दूसरे दिन छतकी मरम्मत और दीवारोंपर सफेदी होने लगी। ओलिंका मरपर हाथ रखे हुए मज़दूरोंको हुक्म देती घूमती थी। उसके चेहरेपर

वही पुरानी मुसकराहट चमक रही थी। मालूम होता था कि उसमें फिरसे नये प्राण आ गये हों, अथवा बड़ी लम्बी नींदसे जागकर उसकी उम्र घट गई हो—बीता यौवन फिर लौटा आ रहा हो!

घोड़ा-डाक्टरकी स्त्री आ गई। वह दुबली-पतली कुरूप और चिड़चिड़ी थी। उसके बाल छोटे-छोटे थे। उसके साथ उसका पुत्र शाशा था। शाशा नौ वर्षका गोल-मटोल सुन्दर लड़का था, उसकी आँखें स्वच्छ, नीली और गालोंमें गढ़े थे। जैसे ही उसने आँगनमें पैर रखा, वैसे ही उसने दौड़कर बिल्लीको पकड़ लिया, और कुछ ही देरमें उसकी प्रसन्नता-भरी हँसी घर-भरमें गूँजने लगी।

"चाची, यह तुम्हारी बिल्ली है?"—उसने ओलिंकासे पूछा—"जब इसके बच्चे होंगे, तब हमें एक बच्चा दोगी? अम्मा चूहेसे बहुत डरती हैं।"

ओलिंकाने शाशाको पास बुलाया, बातें कीं, मिठाई दी। उसके हृदयमें मधुर भावोंका स्रोत उमड़ पड़ा। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो शाशा उसीका बेटा हो। शामको जब शाशा मेजपर बैठकर अपना सबक़ याद करता, तब ओलिंका उसकी ओर प्रेम और करुणा-भरी दृष्टिसे निहारती और धीरे-धीरे कहती—"मेरा प्यारा बेटा, मेरा छोटा मुन्ना, तू कैसा होशियार है!"

शाशा पढ़ता—"द्वीप धरतीके उस खंडको कहते हैं, जो चारों ओर पानीसे घिरा हो।"

"द्वीप धरतीके उस खंडको......" ओलिंका दोहराती। इन अनेकों वर्षोंकी विचार-शून्यता और चुप्पीके बाद ओलिंकाने किसी बातपर विश्वास-

पूर्वक जो सर्वप्रथम सम्मति प्रकट की, वह यही थी कि द्वीप धरतीके उस भागको कहते हैं, जो चारों ओर पानीसे घिरा हो।

अब वह फिर अनेक बातोंपर अपनी सम्मति रखने लगी। शामको भोजनके समय वह शाशाके माता-पितासे बातचीतमें कहती कि आजकल लड़कोंकी स्कूली पढ़ाई कितनी मुश्किल हो गई है। फिर भी घरकी पढ़ाईसे स्कूलकी पढ़ाई अच्छी है, क्योंकि स्कूलसे पास कर चुकनेपर लड़का जो चाहे कर सकता है। डाक्टर बन सकता है, इञ्जीनियर हो सकता है।

शाशा स्कूलमें भरती करा दिया गया। उसकी माता अपनी बहनके पास खरकोव शहर चली गई, जहाँसे फिर कभी लौटकर न आई। शाशाका पिता बीमार जानवरोंको देखनेके लिए दिन-दिनभर बाहर रहा करता, और कभी-कभी तो लगातार दो-दो, तीन-तीन दिन तक वापस न आता। ओलिंकाको समझ पड़ा कि लड़केकी काफ़ी देखरेख नहीं होती, उसके माता-पिता उसे व्यर्थ समझते हैं। कहीं वह भूख-प्याससे न मर जाय, इसलिए ओलिंका उसे घरमें अपनी ओरके भागमें ले गई और वहाँके एक छोटे कमरेमें ठहराया।

शाशाको ओलिंकाकी ओर आये हुए छै महीने हो गये। प्रतिदिन सवेरे, जब शाशा सिरके नीचे हाथ रखे हुए सोता ही रहता, वह उसके कमरेमें जाती। वहाँ जाते हुए वह मुश्किलसे साँस लेती थी कि कहीं खटकेसे शाशा जाग न उठे। शाशाको जगानेमें उसे बड़ा दुःख होता था।

"शाशा!" अन्तमें वह बड़ी मीठी आवाज़से कहती—"उठो प्यारे, स्कूलका वक्त हो गया!"

शाशा उठकर मुँह-हाथ धोता, प्रार्थना करता और नाश्ता करने बैठता।

वह तीन प्याले चाय पीता, दो टुकड़े रोटी और थोड़ा मक्खन खाता। अब तक वह अच्छी तरहसे नहीं जगा है, और कुछ चिड़चिड़ाया हुआ-सा मालूम होता है।

"शाशा प्यारे, अपनी कहानी अच्छी तरह याद कर लो।"—ओलिंका कहती और उसे ऐसी दृष्टिसे देखती, मानो वह उसे किसी दूर-दराज़ यात्राके लिए विदा कर रही हो। "तुम मुझे कितना तंग करते हो! देखो सबक़ अच्छी तरह याद करना और मास्टर साहबका कहना मानना······।"

"ओह, चाची हटो भी!"—शाशा जवाब देता।

शाशा स्कूल जा रहा है। उसके सिरपर बड़ीसी टोपी है और पीठपर बस्ता लटक रहा है। ओलिंका चुपकेसे पीछे-पीछे जा रही है। "शशिंका-आ!" वह पीछेसे पुकारती है। शाशा मुड़कर देखता है और ओलिंका कोई फल या मिठाई उसके हाथपर धर देती है। जब वह स्कूलके पासवाली मोड़पर पहुँच जाता है, तब उसे इस बातकी शर्म मालूम होती है कि एक बड़ी, लम्बी स्त्री उसके पीछे-पीछे आ रही है; वह मुड़कर कहता है—"चाची, अब लौट जाओ; मैं यहाँसे अकेला जा सकता हूँ।"

वह रुक जाती है और शाशाकी ओर टकटकी लगाये देखती रहती है; यहाँ तक कि शाशा स्कूलके फाटकमें घुसकर ओझल हो जाता है। ओह! वह उसे कितना प्यार करती है! उसके पहलेके प्रेमोंमें कोई भी इतना गहरा नहीं था, और न कभी उसकी आत्माको इतने निःस्वार्थभावसे ऐसी सान्त्वना मिली, जैसी अब—जब उसके हृदयमें मातृत्वके भाव जाग्रत हो रहे थे—मिल रही थी। इस पराये लड़केके लिए वह बड़ी प्रसन्नतासे, हृदयतः-खुश अपना जीवन दे सकती थी। क्यों? कौन कह सकता है?

ने

ाना

का

'डार्लिङ्ग' और टालसटाय

बाइबिलमें एक कथा बड़ी अर्थपूर्ण है। इस कथामें बताया गया है कि मोआबिटोंके राजा 'बालाक' ने इज़राईल लोगोंको, जो उसकी सीमामें घुस आये थे, शाप देनेके लिए 'बलाम' नामक साधुको बुलाया था। बलाकने बलामको इस कार्यके लिए बहुत-कुछ इनाम देनेका वचन दिया था, और इसी-लिए बलाम लालचमें फँसकर बलाकके पास गया; मगर रास्ते ही में एक फ़रिस्तेने उसे रोकना चाहा। बलामके गधेने तो फ़रिस्तेको देख लिया; मगर स्वयं बलाम उसे न देख सका। इतनेपर भी वह बलाकके पास गया और वे दोनों एक पहाड़पर गये। पहाड़पर बछड़ों और मेमनोंका बलिदान देकर एक वेदी बनाई गई थी। वहाँ अभिशापके लिए सब सामान तैयार था। बलाक अभिशाप उच्चारण होनेकी प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु बलामने इज़राईल लोगोंको शाप देनेके स्थानमें आशीर्वाद दे डाला।

बलाकने बलामसे कहा—"तूने यह क्या कर डाला! मैं तुझे यहाँ अपने बैरियोंको शाप देनेके लिए लाया था, पर देख तो, तूने उन्हें एकदम आशीर्वाद दे डाला!"

उसने जवाब दिया—"भगवान मेरे मुँहमें जो शब्द रख देता है, क्या मैं उसकी अवहेलना करूँ?"

बलाकने कहा—"चलो, मेरे साथ दूसरे स्थानको चलो…वहाँसे तुम शाप देना।"

वह उसे दूसरी जगह ले गया। वहाँ भी वेदियाँ बनी थीं, लेकिन फिर भी वलामने शाप देनेके बजाय आशीर्वाद ही दिया।

और तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ।

अब बलामके विरुद्ध बलाकका क्रोध प्रज्ज्वलित हो उठा। उसने हाथ मलकर बलामसे कहा—"मैंने अपने वैरियोंको शाप देनेके लिए तीन बार तुझसे कहा, और तीनों बार तूने आशीर्वाद दिया। इसलिए अब यहाँसे अपने स्थानको काला मुँह कर जा। मैं तुझे बड़े सम्मानका पद देना चाहता था, पर भगवानने तुझे उस सम्मानसे वंचित रखा।" इस प्रकार बलाम बिना कुछ इनाम पाये हुए लौट आया, क्योंकि उसने बलाकके वैरियोंको शाप देनेके स्थानमें आशीर्वाद दिया था।

बलामकी जो दशा हुई, वही अक्सर सच्चे कवियों और कलाकारोंकी हुआ करती है। बलाकके इनामोंकी भाँति लोकप्रियता और वाहवाहीके लोभमें पड़कर, अथवा लोगोंकी सुझाई हुई गलत धारणाके फेरमें फँसकर, कवि लोग उस फ़रिश्तेको भी नहीं देखते, जो उनका रास्ता रोकता है, और जिसे गधे भी देख लेते हैं। वे शाप देना चाहते हैं, परन्तु शापके स्थानमें आशीर्वाद दे डालते हैं।

ठीक यही दशा सच्चे कवि और कलाकार चेखोवकी हुई, जब उसने 'डार्लिंग' शीर्षक सुन्दर गल्प लिखी।

प्रत्यक्ष रूपसे लेखक इस दयनीय जीव—ओलिका—का मज़ाक़ उड़ाना चाहता था। वह उसे अपनी बुद्धिसे तौलता है, हृदयसे नहीं। ओलिका कूकिनके थियेटर-सम्बन्धी झंझटोंमें हाथ बँटाती है; फिर शहतीरके व्यापारमें डूब जाती है। घोड़ा-डाक्टरके प्रभावमें वह पशुओंके प्लेगको संसारकी

पहनाया है, जो सदा इस बातका उदाहरण रहेगा कि स्त्रियोंको स्वयं सुखी होनेके लिए, तथा जिस किसीके साथ उनका भाग्य संलग्न हो जाय, उसे सुखी बनानेके लिए किसी प्रकारका होना चाहिए।

यह कहानी इतनी उत्तम इसलिए हो सकी है कि पहलेसे इसका यह प्रभाव अभिप्रेत नहीं था।

मास्कोमें एक बड़ा घुड़सवारीका स्कूल था, जिसमें फ़ौजी दस्तोंकी देख-रेख होती थी। मैंने इसी स्कूलमें बाइसिकिलपर चढ़ना सीखा था। इसी स्कूलके दूसरे सिरेपर एक महिला भी साइकिलपर चढ़ना सीख रही थी। मैं यह सोचने लगा कि इस महिलाको किसी प्रकारकी दिक़्क़त न होने देना चाहिए। यही सोचकर, मैं उसकी ओर देखने लगा। उसकी ओर देखते देखते मैं अपनी इच्छाके विरुद्ध उसकी ओर जाने लगा। उसने भी इस ख़तरे को देखा और शीघ्र ही रास्तेसे हटनेकी कोशिश की। मैं उससे जा भिड़ा, जिससे उसकी साइकिल उलट गई और वह गिर पड़ी। कहनेका अभिप्राय यह है कि मैं जो कुछ करना चाहता था, मैंने ठीक उल्टा किया। कारण यह है कि मैंने अपना सारा ध्यान उस महिलापर केन्द्रिभूत कर दिया था। [illegible]

वही पुरानी मुसकराहट चमक रही थी। मालूम होता था कि उसमें फिरसे नये प्राण आ गये हों, अथवा बड़ी लम्बी नींदसे जागकर उसकी उम्र घट गई हो—बीता यौवन फिर लौटा आ रहा हो।

घोड़ा-डाक्टरकी स्त्री आ गई। वह दुबली-पतली कुरूप और चिड़चिड़ी थी। उसके बाल छोटे-छोटे थे। उसके साथ उसका पुत्र शाशा था। शाशा नौ वर्षका गोल-मटोल सुन्दर लड़का था, उसकी आँखें स्वच्छ, नीली और गालोंमें गढ़े थे। जैसे ही उसने आँगनमें पैर रखा, वैसे ही उसने दौड़कर बिल्लीको पकड़ लिया, और कुछ ही देरमें उसकी प्रसन्नता-भरी हँसी घर-भरमें गूँजने लगी।

"चाची, यह तुम्हारी बिल्ली है?"—उसने ओलिंकासे पूछा—"जब इसके बच्चे होंगे, तब हमें एक बच्चा दोगी? अम्मा चूहेसे बहुत डरती हैं।"

ओलिंकाने शाशाको पास बुलाया, बातें कीं, मिठाई दी। उसके हृदयमें मधुर भावोंका स्रोत उमड़ पड़ा। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो शाशा उसीका बेटा हो। शामको जब शाशा मेजपर बैठकर अपना सबक याद करता, तब ओलिंका उसकी ओर प्रेम और करुणा-भरी दृष्टिसे निहारती और धीरे-धीरे कहती—"मेरा प्यारा बेटा, मेरा छोटा मुन्ना, तू कैसा होशियार है।"

शाशा पढ़ता—"द्वीप धरतीके उस खंडको कहते हैं, जो चारों ओर पानीसे घिरा हो।"

"द्वीप धरतीके उस खंडको......" ओलिंका दोहराती। इन अनेकों वर्षोंकी विचार-शून्यता और चुप्पीके बाद ओलिंकाने किसी बातपर विश्वास-

ठगीसी रह गई। बाहर घोड़ा-डाक्टर सिनेरडिन खड़ा था। उसके भी बाल सफ़ेद हो गये थे। वह फ़ौजी वर्दी न पहनकर मामूली लोगोंके सादे कपड़े पहने हुए था। ओलिंकाको सहसा अतीतकी अब बातें स्मरण हो आईं। वह रो पड़ी, और उसने उसे गलेसे लगा लिया। ओलिंकाके मुँहसे एक शब्द भी न निकला। वह इतनी उद्विग्न हो रही थी कि उसे यह भी न मालूम हुआ कि वे दोनों किस प्रकार भीतर जाकर चाय पीने बैठ गये।

"प्यारे ब्लाडीमीर"—ओलिंकाने प्रसन्नतासे काँपते हुए कहा—"तुम्हें भगवानने कहाँसे भेज दिया?"

"अब मैं यहाँ हमेशाके लिए बसने आया हूँ।"—उसने कहना आरम्भ किया—"मैं फ़ौजसे रिटायर हो गया, अब बुढ़ापामें यहाँ स्वतन्त्रता-पूर्वक दिन काटना चाहता हूँ। दूसरी बात यह है कि अब मुझे अपने लड़केको स्कूल भेजना है। उसकी पढ़नेकी उम्र हो गई। तुम्हें मालूम ही होगा कि मुझमें और मेरी स्त्रीमें मेल हो गया है।"

"तुम्हारी स्त्री कहाँ है?"—ओलिंकाने पूछा।

"वह और लड़का होटलमें है। मैं मकान ढूँढने निकला हूँ।"

"मगर तुम मेरा पूरा मकान ले सकते हो। अलग मकान लेकर क्या करोगे? मैं तुमसे किराया भी एक कौड़ी न लूँगी।" ओलिंकाने उत्तेजना-भरे स्वरमें कहा और एक बार फिर रो पड़ी। "तुम यहाँ रहो। हे ईश्वर, आज कैसा शुभ दिन है।"

दूसरे दिन छतकी मरम्मत और दीवारोंपर सफेदी होने लगी। ओलिंका कमरपर हाथ रखे हुए मज़दूरोंको हुक्म देती घूमती थी। उसके चेहरेपर

वही पुरानी मुसकराहट चमक रही थी। मालूम होता था कि उसमें फिरसे नये प्राण आ गये हों, अथवा बड़ी लम्बी नींदसे जागकर उसकी उम्र घट गई हो—बीता यौवन फिर लौटा आ रहा हो।

घोड़ा-डाक्टरकी स्त्री आ गई। वह दुबली-पतली कुरूप और चिड़चिड़ी थी। उसके बाल छोटे-छोटे थे। उसके साथ उसका पुत्र शाशा था। शाशा नौ वर्षका गोल-मटोल सुन्दर लड़का था, उसकी आँखें स्वच्छ, नीली और गालोंमें गढ़े थे। जैसे ही उसने आँगनमें पैर रखा, वैसे ही उसने दौड़कर बिल्लीको पकड़ लिया, और कुछ ही देरमें उसकी प्रसन्नता-भरी हँसी घर-भरमें गूँजने लगी।

"चाची, यह तुम्हारी बिल्ली है?"—उसने ओलिंकासे पूछा—"जब इसके बच्चे होंगे, तब हमें एक बच्चा दोगी? अम्मा चूहेसे बहुत डरती हैं।"

ओलिंकाने शाशाको पास बुलाया, बातें कीं, मिठाई दी। उसके हृदयमें मधुर भावोंका स्रोत उमड़ पड़ा। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो शाशा उसीका बेटा हो। शामको जब शाशा मेजपर बैठकर अपना सबक याद करता, तब ओलिंका उसकी ओर प्रेम और करुणा-भरी दृष्टिसे निहारती और धीरे-धीरे कहती—"मेरा प्यारा बेटा, मेरा छोटा मुन्ना, तू कैसा होशियार है!"

शाशा पढ़ता—"द्वीप धरतीके उस खंडको कहते हैं, जो चारों ओर पानीसे घिरा हो।"

"द्वीप धरतीके उस खंडको……" ओलिंका दोहराती। इन अनेकों वर्षोंकी विचार-शून्यता और चुप्पीके बाद ओलिंकाने किसी बातपर विश्वास-